

GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0539**

Classification:

Original File No. 85

Title

Pending Matters

Volume:

Running from year: 1933 till year:

Content:

- Correspondence of School and Church Officers with the Ilaka and Different School within the Church.
- Letters from Schools to the Head Supervisor of Schools residing in Ranchi.
- Letter from Pastors and Lay Persons addressed to the Church authorities either to the secretary of Church Council to the president.
- Letters from the Church Council Secretary.

Pendings

192 .

85



FLAT FILE

Subject

ne

m (months) to

Serial Nos. to

File No.

1933

Church Council

Received 3.5.33

Register No 288

Date.....

File.....

Reply No.....

Date.....

3/5/33.

To

the members of
The Church Council -

Sirs,

Nirmal Tiga is my client. He filed a Restrictional Suit for dissolution of marriage with his wife named Most. Koundintha. A Decree nisi was passed by the Judicial Commission of Ranchi and as it had got to be confirmed under the law by the Hon'ble High Court, all the papers together with the Decree were sent to the Hon'ble High Court for Confirmation.

I have received a letter from Mr. K. K. Banerjee Advocate, Patna High Court, who conducted the case in behalf of Nirmal Tiga before the Hon'ble High Court saying that the Hon'ble Judges have confirmed the Decree nisi. In view of the above, Nirmal Tiga is quite free now to marry again and without any restriction.

I think, this letter of mine
will be sufficient authority for
the confirmation of the same.

Yours truly
Ashim Ch. Ray Chaudhary
Pleader, Ranchi.

To
Rev. J. L. Lavel
Ranchi.

388
13 2 33
1900

KALI KUMAR BANERJEE, M.A., B.L.

ADVOCATE.

FRASER ROAD,

PATNA.

DATED,

28-4-

1933.

My dear Ashim Babu,

Glad to inform you that their
Lordships the Hon'ble Chief Justice, Mr. Justice
Kulwant Sahay and Mr. Justice Agarwal con-
firmed the decree of dissolution of marriage
of our Nirmal Tga. There was one very great defect
i.e. then was no date given by the subsequent
witnesses for the acts of adultery and I was
badly cornered because if the acts were 1 or 2 years
previous to the institution of the matrimonial
suit then there would be a presumption of
condonation. However Chief Justice asked me "who is
defect. The Hon'ble lady waiting for the vacant post?" He
the fortunate understood the reason of our expediting the matter.

Babu Ashim Chandra Ray Chowdhury
Pleader,
Ranchi

Church Council

Received 26.4.33

गुमला नवागढ़ 28.8.33

262
Date 24.4.33
File 3
Reply to
Date
गुमला नवागढ़ के माई
गल जैन सौल के पास कई रुक वाहो का भुरगी
पेस करती है सो लपटा कर इन सब वाहो का
लिख उचर लोप गंभीर बीचार कर इस का निपटेरा करे

१ और को हमो के लिये एक दूसरा अच्छा पाद्री
दिजाये जो की पुरानी हो जो जो सब बातों में
हमो को आगुवाई कर याने को कोक और कातमीक
को कोई मार मुकदमा में और दुरे दूसरे काम में जो
चाहे पुरानो ही पाद्री को दिजाये नया योहन
पाद्री के जाने से हम गुमला नवागढ़ के कितने माई
आलातु है जो कि उन के जाने से जितने खिस
ना धर्म है उस वर इस का निधन है तो उस से
हम लोग कोई आदवाते काम में आगुवाई पावे है
चार को सील को इन के कामों से सयद खुद हो मालुम
हो जा को पुरानी पाद्री के कामों से नया पाद्री के काम
को कितना जसना है पुराने पाद्री के समय के वसा और
जमी की वसा में कितना फरक है हा पहिले मतवाल
पुन उतना नही था पर अब इस के जाने से इतना
जोर बढ़ गया के सतव से के सतव यही तक की
कोई पिकर पाद्री के पास जाय तौमी कुछ नही हा
सक कर हमो के गांव में गुमला से तीन सौ की दुरी
पर शिरजा कहल गया वहां मतवाल पुन के वारे वार
हुका और हम लोग उस मतवाल को पंच से पकड़े
जो की पहिले भी कई वक और ऐसाही कीया था
और योहन पाद्री को इन सब बातों को बतलाये तब
पाद्री का जवाब देल के पंच पीना हम मना नही

तो सो कुछ कोन सी है जो कर इस का विचार करें की हम
जो जो सच कहते हैं वो मुक्त हो जायेंगे

५- जो अगर लुपेरान विद्या को मारने को बखाने चाहते हैं तो
ये पादों को हटा दिये और न हो तो हम लोग देखेंगे
जैसे बनेगा वसा करेगा जान तो सा लुपेरान धर्म ही है
लुपेरान धर्म का नियम है इस से जब हमों को मिस्र
से कुछ पैदा न हो मातृम पड़ता है खाली विषय की
मानने से काम है कि हमें मिस्र न हो इस लिये चार्च
कोन सी जगह है एक अगर इस का विचार
ना किया गया और ये पादों को हटाया गया तो
जनीये की गुमना सवागत मारने दो भाग होगा या
ले कितने काचेलोक कितने दुष्टिने

६- जो को असल में तो बहुत पादों का कुछ दोष तो
पड़ता था पर हमों को लिखित हो लोग फसला को
ही सा कहना वैसा कहना नोले को सिलवले हम अनपढ़
लोग इस बात को समझने लगे सके की क्या बात हुवा
है और क्या बात होगा बिसेस कर मुलपुस, नथानीय
येहन पद्मा येहन डाकटार, सानती हेड मास्टर -
नीमन मास्टर इन्ही के कारण से ऐसा हुवा ये
जोव जोव जा कर के ठाक फसलाने लगे की पुराना
पादो ऐसा है वैसा है देहात-वले मुक्ति जात में
हां में हां मिलने गये अगर अभी उस का नतीजा

करे है। पीछे पार हिंदूओं से जोये है। बिना मे
सिखाना धर्म कहे। ५-५-५५

१- पाद की चमक-मी वीसहरी एक भाग से जया और
वहा टाढ़िया उठाया गया पाद मगर पाद कुद नही जाला
वहाकी वहा पाई कर खाना मी खाया जाला मी खाना और
उस के पाई में टाढ़िया धड़ा से मीजली ताईस का उचित
उपचार कर

३- लाल का अर्थ ईश के आने से मरुती के नियम को चर्च
कौनसी ही बदलने को मत है आपका अपने से बदलता है
आगर आपने से बदलता है तो कौनसी लाल को ही लेकल
है जैसे मरुती सजा का हम आन पड और करया-
पंचा लालों के लिये है लाल सनों के लिये है। ले
आगर सनों के लिये है तो क्यों हैसा आनका पकया
मंजूर है जो की अमल के तिन मंजूर के उपर लाल लाल
ईश का उच्छेद विचार कौनसी लाल करेई।

8- बात को जोर समय दिया जाता आया उस समय
हम सब सोचते थे की मरने के लिए सुधार आया
और अच्छा होगा मगर हमारे तो इन के हों ही मरने
पहले से और बेहज हो गया है कोई बदला तो मीये
पादो तो ज्यादा गुरु है इतना दिन हुआ ना तो भास
पस के गाव से कही घुसता है ना कहे नहीं अगर
कनैला को इस बात का बीसवास ना हो तो कुछ
चुपके से भाकर गांवों गांव जाकर माँच करे
की पादो कहां 2 कार्य कर लाया दो और इतना
दिन में कार्य कार्य कर प्रमु मौज दिया है

मि बहुत खसिप होते जा रहा है ममी हम सब देखत
वाले पसताहे हो- सब कहिये तेमपुर ना पाही को तह
पाटने वाले मोटे है ममी लीगों के धमकी से ममी
पर रहे है किम जो कोई ये बात को बात लायगा उस
का काम चया सब छोड़ देक आ को दे को ग-
नही चिहते है जो गुलपुस के को दल है हां उपर
में नाम सब दिये है मगर को नसील को गनी देते
है कि पाही चोहन, वकिरार साकी मास्तर नैसन
मास्तर ये जो उपर में नाम दिये से हराये गाने
से माराइलो कुछ साततमात होगी सो मरजी है
फै। कि इन को माली टेरने का कोसीस करे।
जो बात जो इ लोग में दिया गया है अन्याय मरली सजा
जो उन को वहे तो केवत चोहन पाही को चंलकी से ऐसा
हवा है सब कहिये तो यह इलाका पंच का पैसला नही
है कि उन का सजा उठा दिया गए पर इलाका पंच की
मास मीसला गतो धो को जैसा नरपली का नियम है जैसा ही मात
पंचालेने पर पाही अपने मतलप से ऐसा किया है जिस को हम
किसक इलाका पंच के बहुत मैमवार नही जानते ११ अगर को लोह
जिस को इस का किस कास ना होय तो गयाग के जीवने पंच में मार
है उन को मुक लिया गया यह नवगद के पाही लुपर नागु
को मुक लिया गया वो तो अपने सेवारी हो के नही जानता है
तो इस का उचीत विचार किया गया नही तो बहुत गढ़वठ होगा
तो नौनसील से यही बात का मरजी है की इत सब बातों
का निपेरा करे। ~~इलाहा~~ ~~मि~~ ~~मरी~~
और गुमला नवगद के माई सब

हमारे लुक्ता गोंदों को बहुत निम्न रहा
 बनाने को लिये जगह मीठे पाने का बहुत
 कोशिश किया था। पर इसमें वह सम्भव
 नहीं हुआ। इससे इसवेर में दूसरे प्रकार
 से जुलुस का रहा है -

मेरे दोस्त पूर्वक मजिद का कहना है कि
 इन का रोगों को बचाने से बचाव के इसवेर
 पन्धरे में राजिरी नहीं रहे सन्तानों से जुलुस
 मेरे गैर राजिरी साम निम्न है -

मिर्ग सुन -

मिर्ग मिर्ग -

L Bagvaila,

Church Council

Received 28.4.33

Register No. 767

Date.....

File..... 21.4.33

Reply No. 17

Date.....

28/4/33

जो. ई. रुन्. चार्च कौंसिल छोटा नागपुर ज्योर

उपासक के अधिनस सविनय उपरजी पत्र

21.4.33

श्रीयुक्त महामान्यवर चार्च कौंसिल के सभा सदस्यों
को हमें का पत्र सहाय ।

महाशय गण,

हम लोग आप लोगों के पास बहुत
दीनताई के साथ उपरजी पेश करते हैं कि जैसा
गांगपुर ज्योर बामड़ा स्टेट में मंडली कामों को
देखभाल करने के लिये ^{मान्यवर} Rev. F. Schulze साहेब
ठहराये गये हैं वैसाही उनको गांगपुर ज्योर बामड़ा
स्टेट के उपलब्ध सिंथुम जिला के सरांडा, बनारि
ज्योर नागरा स्टेट के मंडली संबंधी कामों को
देखभाल करने के लिये कौंसिल से अनुमति
दिया जाय ।

आप लोगों का

Rev. D. Bagaria
Ilaka Chairman,
21.4.33

शुभप्रमिताएँ ।

✓ Anu El Sirin

Prabhu Dayal Dhan
Pracharak

2/5/33

महोमान्यवर G. E. L. Church Council को
 प्रभुसहाय ।

महाशय,

कृपाकरके निम्न लिखित बातों को विशेष जानिये और
 विचार कर हमारी सहायता कीजिये :-

(१) तुंगुर पेरिस के सम्बन्ध में — अब तक तुंगुर
 पेरिस को दशा अतिही गिरी हुई है, अच्छा होगा कि
 वहां पर उस एक पाद्री और कन्डिदात के रहने के बदले
 कोई दूसरा ही योग्य पाद्री रहे जो इस पेरिस को नाईरुति
 से सुधार सके। अथवा जैसा आप को ^{अच्छा} जान पड़े वहां के
 लिये प्रबन्ध करने की अनुग्रह कीजिये ।

(२) डाडीगुट पेरिस के सम्बन्ध में — वहां का पाद्री
 बुढ़ापे और बिमारी और कमजोरी के कारण इलाके
 पंचायतों में भी हाजिर नहीं हुआ करता है और स्व-
 पालन सम्बन्धी बातों में भी माइयों को समझाने में
 सामर्थ्य हीन हो जाता है सो उससे पूरा काम लेना
 कठिन है। इसलिये अगर और २ बूढ़े और कमजोर
 पाद्रीयों के लिये पेनशन का बन्दोबस्त किया जाता है
 तो कृपा करके इसके लिये भी पेनशन का बन्दोबस्त
 कीजिये और वहां पर भी नया प्रबन्ध करने की अनुग्रह
 कीजिये ।

आगे शुभ ।

आप का आशाकारी सेवक

M. Park.

Benjamin Blake Chairman

29/4/33

1	Amos Bara	35	-	-	-
2	Diptiprakas. Topmo-	11	-	-	-
3	Jusaf Surin	11	-	-	-
4	Jusaf. Topmo-	11	-	-	-
5	Khemiy a Bara	10	-	-	-
6	Jakariya Bara.	10	-	-	-
7	Masihprakas Halipka	10	-	-	-
8	Gahorhwa Topmo-	8	-	-	-
9	David Bara Hadmasti	24	-	-	-
10	Johau Bara	18	-	-	-
11	Phillip Topmo-	11	-	-	-

Rs. 159

29.4.33

Revd. A Bara

28th April 1933.

271

28.4.3

21

Patron Council
 Received No. 271
 Date 28.4.3
 No. 21
 Reply No.
 Date

Church Council

Received 2.5.33

Register No. 784

Date... 2.5.33

File... 21

Reply No.

Date..... 13

January - 21 - 60-4-6.
 February - 13 - 0-0-0
 March - 24 - 0-0-0
 April - 11-12-0
 May - 1-4-0
 June - 41-8-0
 July - 11-8-0
 August - 20-10-0
 September - 7-12-0
 October - 41-0-0
 November - 18-4-0
 December - 7-0-0

257-14-6.

In Come. 2 years figures

Church offering

51-3-9
 47-15-9
 38-9-0
 26-14-6
 32-0-3
 47-1-0
 38-9-3
 33-2-0
 26-7-9
 28-8-3
 52-6-9
 47-2-6
 470-0-3

Tharsy 2/5/33

School Grant - (this has now been stopped)

33-8-0
 67-0-0
 26-3-6
 33-8-0
 29-14-6
 190-2-0

Total. 257-14-6
 470-0-3
 190-2-0
 918-0-9

No of boys at hostel ... 14 x $\frac{15}{10}$ Annual = 210 Rs
 " " " " ... 55 x $\frac{12}{10}$ = 36 Rs
 Expected Revenue p. A. = 300
 No School Grant this year 546

The evangelistic work is carried on vigorously amongst the non-Christians - the catechists go out jointly to preach in any catechist's jurisdiction

1931+32

Boarding expenditure

~~32~~
~~28~~ 8-
 37- 11- 6
 36- 2-
 38- 12-
 17- 8- 6
 60- 0-
 71- 8- 8
 80- 11-
 80- -
 57- 3- 6
 85- 3- 6
 64- 1-

650-5-6

Hot wine 16-0-1

Contingency - 50-0-

Repairs - 50- -

116

Boarding 650-5-6

miscellaneous 116- -

Scholarship - 200-1-

966-5-6

Scholarship for
boys 200/

26/4/33
Purulia 20, April 33

To the secretary of C.C. Ranchi
G.E.L. Mission

Church Council

Received 26.4.33.

Register No. 764.

Date 20.4.33.

File 12.

Reply No.

Date

C.C. ko yishwasahay howe.

Salti ka ashish deke mandali men
grahan karne ka anumati C.C. se
mangne hain.

Is jore ka kibaran niche hota hai :-

Gubak Christian hai, aj praya 7 barast
ho chuka hai, ek Hindu yubati ko.
rakhni karke rakha hai, jis se abhi
tin balak janma hai. par Hindu yubati
ka chhotpan men sadi tha. Anedion
men yubati ka Hindu swami kabhi khoj
tallash nahin kiya hai. Wah Hindu swami
iska hai ki nahin janne ke liye
Police dwara enquiry kiya gaya.
jis ka true copy iske samil dete hain
Kripaya anumati diya jai kaisa hona
chahiye.

Yours faith fully
P.C. Panoria
Purulia, Lutheran
Church.

True of local police inquiring

No 870 17.

Parulia, the 25th February 1933.

27 ^{1st} ~~27~~
From the Superintendent of Police
Maulbhum
To the German Lutheran Mission
Maulbhum.

Sir!

With reference to your letter dated the 6th January 1933. I have the honour to inform you that searches were made by the local police of Para P.S. (Maulbhum), Jorapukur P.S. (Shanbad) and Raniganj, (Burdwan), But the whereabouts of Kita Ghatwal could not be traced.

Further particulars may please be furnished in order to trace out the man.

I have the honour to be
Yours most ^{Sir} obedient servant

Nikunja

25.2.33.

W. S. S. S.
25/2/33.

Freely
Superintendent of Police

Church Council

Received... 3.5.33

Register No. 287

Date... 1.5.33

File... 19

Reply No.....

Date.....

The Church Council,
Lutheran Mission,
Rauchi.

वर्ग - कौंसिल - लुथेरन - मिशन - रांची - के - पास - साधर - निवेदन 1.
महाशय,

आप - को - मालूम - है कि Patras Lakra हाल मोराम
Hearanganj Hazaribagh ने एक दरखस्त १६३१ में आप
के सुपुर्द किया था - उसका जवाब - उसको न मालूम है, वह फिर
पा - फा - मर्ज - पेश - करता है क्योंकि जौनी वह मण्डली से अलग
है तौनी अर्ज - के - लिये बहुत चिन्तित है और - हर प्रकार से
सहायता - करने चाहता है और करता है। इस वजह - मैं आप - के
यहां - इतलाय - करता हूं, क्योंकि Patras Lakra जिस स्त्री - के
साथ - रहता - है - उसका पुरुष - मानुस स्त्री - को - त्याग - पत्र -
लिख - कर - दे - दिया - " कि - सागे - को - न - वह - उस - स्त्री - का -
खोज - करेगा - न - उसकी - कोई - सुदृष्टि - लेगा - हम - अपना - रास्ता
देखेंगे - वह - स्त्री - भी - अपना - रास्ता - देख - ले -" ऐसा कह
लिया - वह - पुरुष - दूसरी - स्त्री - लिखी और - उसके साथ - रहता है
स्त्री - भी - अब - Patras Lakra - के - साथ - रहती - है और

और-उन्के-इलइके-और-इलइकी-है। उनका-साथ-
 में-रहना-अभी-एक-दूसरे-से-१० वर्ष-पूरा-हो-चुका-है
 इतने-वर्षों-तक-मानुस-कोई-खोज-खबर-नहीं-
 किया-और-न-कहेगा-और-स्वामी-पता-स-लकड़ा
 को-किसी-हालत-से-छोड़-नहीं-सकती-है-और-
 बोलती-है-कि-बच्चों-को-छोड़-कर-निकल-जागा-
 न्याय-संगत-नहीं-है। इस-लिये-अभी-कोता-
 हूँ-कि-उनको-मालुमी-में-ग्रहण-करने-के-
 लिये-मुझे-इजाजत-पत्र-लिया-कर-दिया-जाय
 जिस्ते-मेरे-बिहू-आइये-किसी-किसिम-का-
 हला-हुजा-न-होने-पावे-

सिंधाणी

१. २. ३३.

साथ-का-हितचिन्तक-कर्मचारी

Rev. A. Sopono

Lutheran Mission,

Singhani,

Hazaribagh.

Church Council
Received... 3. 5. 33
Register No... 786
Date... 1. 5. 33
File... 52
Reply No.....
Date.....

To

11/5/33.

The Secretary Gossner Autonomous Church
Chotanagpur & Assam.

Dear Sir,

most humbly and respectfully I beg to lay the following facts before the Council for a kind and favourable consideration,

that I have registered myself in the Serampore Theological University for the B.D. Examination. So I am intending to devote full time in study and thus to join College next July.

I, therefore, request you humbly that you would kindly grant me leave from July 1933 - April 1934.

This act of your kindness, sir, I shall remember with sincere gratitude.

Ranchi.

1. 5. 1933.

}

Yours Obediently

Rand. Sundareshan A. B. Laks
Birmitrafms Lutheran
Church-in-charge.

POST

WRITING SPACE

INDIA



CARD

ADDRESS ONLY



Church Council

Received 17. 5. 33

Register No. 18:...

Date..... 11. 5. 33

File..... 2.....

Reply No.....

Date.....

To.

The Secretary.

Lutheran Church Council

Ranchi

Send a copy
of the Resolution

Takarna
14-5-33

~~17/5/33~~
Reminder

Kripa — kar — Sulamangun
Berhava — Ki — Sadli Bisay-
dar Khas — jo — ap. ko.
Ohe ji, gai hai —
jaldi se bichar krane ki
me har ham ap ki or se
hoo —

Ap ke agad hin
Rem T. Kuls

15/4/33

Lakarna
12.4.33

To, the Church Council—
Ran

Received \$ 4.33

Register No. 732

Date.....12.4.33

File 9

Reply No.....

Date.....

no. 1211 — memo no. $\frac{1008/32}{F9}$ dt: 5.12.32

F 9

[illegible]

Put up after
Cont:

~~muc-da-muc~~ Burg 187.
Ren-Rule
Zakaria

श्री श्री वः श्रीधर प्रसादायक चाच जौंसिख
के निम्नलिखित निवेदन प्राप्त ।

सहायता

दीनता पूर्वक मार्ज निवेदन रेसी हैं जि
में सुलेमान लुगुन नरवेडा १९०९ स्कूल में जयवत्त
सुबिन से शादी किया था परन्तु आमाग्र बस
शादी के १५ दिन बाद लड़की दूसरे लड़के के साथ
मिल जाने के तहियार से जाने न चाहती और नहीं
आकर बह-उसे लड़का के साथ रखती रहने लगी
और उसी के साथ आसाम चले गयीं सो
जोकेला छोड़ा गया है और अभी उस लड़की
जो उन के मेल से ४ लड़के जले हैं में वैधरा
जब क्या उपाय करूं मेरे लिये दुनिया में
कोई उपाय शादी के लिये देख नहीं पड़ता
में जोकेला है और घर में कोई नहीं है
खेठ बारी बेल बकरी यहां बंद कुटुम्बी के पास
छड़चा देकर मेरे ससुरा के यहां गुजारा बिगा रहा है
और मेरा रुक बीटा भाई है उसके सिवाय और
और भागे पीछे नहीं है इस निमित्त दीनता
पूर्वक निवेदन करता हूँ कृपाया मेरी खेसी
गरीबी खराबी बेचारे इलाक में जौंसिख
मेरी मुक्ति लेने वास्ते शिवाजी देने की
अनुमति दी जाये ।

आधिक बिनपपर आवड़ी
आइये मालिक है
लि: सुलेमान लुगुन
नरवेडा

Ran. Nud
10/1/1913

M. Martin
Ken

Confidential

To The Secretary Lutheran Church Council
Ranchi

From:- C.A. Keora Tiga

P.O. Kinkel Dist Ranchi.

Dated Kinkel the 6th May 1933

Church Council

Received 12.5.33

Register No. 14

Date 16.5.33

Page 6

Reply No.

Date

महामान्यवर चर्च कौंसिल के महाशयों को योशुसहाय -

साथल आप लोगो के पास सविनय प्रार्थना पेश कर चाहता है कि अगर प्रार्थना काविल समायत ध्यान के न होय तो माफ़ नकसी जावे और अगर काविल समायत ध्यान के है तो उसपर विचार कर मुआसिब करवाई मामले में लवे, जो इस मामले को जो इतला बिई जावे - ताकि हम लोगो की जो स्वायत्तता माडलो की कुछ जो उपकार होवे -

(क) किनकेल इलाका पंच में कई मेम्बरें हैं पर बैठकी में समझागिता प्रायः पाँच यम शीवे साहब, पाँच वावु योहन कुजूर जो सामुयल वाजे इतनाही का होता है और इन्ही का फैसला जाइज ठहरता है - इसमें न ले मेम्बर न मिजिटर्स लिये जाते हैं ऐसे फैसला से कितनों का दिल आसुबिधा और दुबिधा में रहता है कितनों का मन की बात मन ही में रह जाती और इस का हाति होती है जो हो सकती है और होगी आपही लोग क्यास कर सकते हैं अगर साथल का मर्ज जचता हो तो इस प्रकार की बैठकी दूर करने की चेष्टा किई जावे ताकि सजो की राय बैठे और सब मिलकर एक दूसरी की सहायता करते हुए माडलो की तरकी और ~~वै~~ बढ़ती की चेष्टा जो फिकर करें -

(ख) Rev. Mr. Schiebe साहब के पास एक मोटोर डबल कमिशनर एका नाम का गा जो पाँच वावु योहन रक्का के कारर ही सामिल रहता थी - उसके साथ कुंवरी घनेवार नाम की लडकी जो भी कि शीवे साहब के पास नौकरी करती थी फंसी थी और लडकी में हमल जो रह गई थी - हमल करीब 6 मास का था कोई प्रकार से लडका लडकी मिलकर हमल को नगड़े में खनकाश किये - लडका लडकी पुरुलिया में मिस्टर डिलर में साहिला से पकड़े जाकर कर अगाही Rev. Schiebe साहब को दिया गया कई दिनों बाद लडकी पुरुलिया से वापस आई लडका का शादी दूसरे लडकी से होने के कुछ रोज पहिले पाँच शीवे साहब के पास बिई लिखित द्वारा तब शीवे साहब और पाँचियों ने करवाई करवा करवा करवा किये - और लडका का शादी रोकने के लिये खुद डेना Rev. Sharamdas Kuyra के पास, पाँच साहब शीवे और योहन कुजूर ने अर्ज पेश किई लिखित द्वारा और मुहजबती - किन्तु पाँच वावु Sharamdas Kuyra ने

नरि.
कोई प्रकार इधर उधर टलावा कर उस लड़का को शादी दिये.
शादी के बाद पाद्री शीवे साहब ने मोटोर दौड़ा और लड़का
के पास सामिल लड़की और मैं जवाहन ले सुन्दगाढ़ गंगपुर
में जाकर दोष सावित कर लौटे और यहां पंच जमा कर
उन्को जेजली लगा दिये —

जब ऐसे मामलों का तहकीकात इस प्रकार किई जाती
है और पाद्री, पाद्री की विश्वास नहीं रखता है तो
माइयो को कहा जाति होगी, कौंसिल क गौर करे कि
क्यों ऐसी जाहिरा मामला में इस प्रकार की तहकीकात
होती है —

(ग) फिर भी किनेल में ४ चार पादियां हैं उनका भी
work distribution का पता मुन्को सायल को
मालूम नहीं, को मालूम होता है कि उनकारलाका
में Jurisdiction का भी बिकाना नहीं। केवल meeting
भीतर रहती है बाहर बलि की पता तक मालूम नहीं
की कौन पाद्री का कौन सर्कल है, नहीं काम करते
हैं। उनके काम का भी तहकीकात करने वालों का
भी पता नहीं, सायल को मालूम नहीं की इस
प्रकार की माइली में होने से कखिरी नतिजा
का होगी। ~~सब~~ सायल को माइली कामकी

(घ) और खर्च का भी ऐसीही दुविधा है

अन्त में फिर की मिरा अर्ज है कि अगर
सायल का अर्ज अगर गौर कावनी ले तो साधू किई
जावे, और अगर इससे गौर करने से कुछ इतरा
कल निकले तो उसपर मुतासिब जांच कर करवाई
अमल में लाई जावे

I beg to remain
Sir

Your most obedient servant.

C. A. Khera Jia
Captain

Lulligan youngmen Association Kinkel

Copy forwarded to the Chair man
Lulligan mission Kinkel through the Secretary
Bacharak Pan Panch Kinkel for information

Cakravartij

9. 3. 33

Dear Mr. Parker,

I am handing you
two following papers
as decided in the Executive
the other day i.e.

1. Rev. Daud Kyur's report
re: Laika settlement in
Korojo & Kimbel &
2. Rev. Dr. Schishes'
of his garden.

Please do the needful
& return these paper to
me in due course.

Yours truly
J. J. J.

8 MAR 1933

Church Council

Received 6.3.33

Register No. 624

Date 1.3.33

File 29

Repty No.

Date

Church Council chitthi Memo.No.1210-14/33.T.29.

Stationon ke Bagan.

Main nimin likhit baton aur hisabon ke dwara Church Council ko is prakar jabab dene chahta hun.

Bagan ka hisab.Bagan private taur se chalaya jata hai.

June 1931 se December 1932 tak.

(June 1931 main ne Kinkel Station ke kam se suru kia)

AMDANI

Takari, phal, phul. Rs. 65-15-0
Kalmi gachh 49-5-9
Gachhi 9-7-3
Bihan 16-14-6
Private taur se jo
khaya gaya andaaj se 120-/-/-
Rs. 261-10-6

Beshi Kharch 80-9-3
Rs. 341-3-9

KHATCH.

Bihan aur alu Rs. 93-13-0
Gober 40-/-/-
Korna 17-2-3
Hatiyar, gamla 8-11-6
Ek Mali 131-9-0
Rs. 341-3-9

Is hisab se dekha jata hai ki Rs.80-9-3, beshi-Kharch se kam huwa tha. Par ashra hai ki is sal men amdani barhegi. Missionary log is liye bagan ke kam ko chalate hain, ki unka jiwika bishes ka takari aur phal se adhihtar hota hai, bishes dehat jagaon men. Is kamon se bhi unka man anand aur kushi rahta hai. Bhailog bhi is maphik se gachhon ko ropne aur raksha karne ko sikhte hain.

Age Mission ki or se hatta raksha waste Chaukidar ko mahina 2 Rs.10, dhangaron ke liye, jo barabar hatta men kam karte hain Rs.22, aur maranati waste Rs.10 dia jata hai.

Is liye mujh ko aisa lagta hai ki malik C.C. ko kuchh na kuchh na dia jae, kyonki hamlog malik C.C. ko din o din kuchh bahut dete hi rahte hain ki us ki property ki raksha aur rakhwali howe.

Memo No.1149-78/33. F.-48.

Circular order.

- 1) Prastaon ko Mahasabha ke liye 20-II-33 bheje gaye hain.
- 2) Ilaka membron ke nam.

Rev. Johann Kujur. Rev. Samuel Bage. Rev. M. Schiebe. Master Joel Kujur
Master Daud Lugun. Prachar Samuel Minj, Premchand Khalkho, Premsukh
Ekka, Johann Kiro, Boas Dungdung. Airus Lakra, Dayadhan Minj, Sadrakh Kind
Nawin Kindo, Paulus Lakra.

- 3) Apsosh ki bat hai, ki ab tak anischay hai kaun 2 Mahasabha men awega. Abhi Ilaka ke waste bahut Amin-fee kharch huwa hai.

M. Schiebe
A. III. 33

Church Council
 Received 13/3/33.
 Register No. 609.
 Date... 25-2-33.
 File... 29.
 Reply No.....
 Date.....

૬૪

28 FEB. 1933

જોયુક્તમાન્યવાર ચર્ચજોડિસન જોમેરા વહુતર વેશુસહાય
 હોવે—

ચર્ચજોડિસન જોમાહાસે મેં મિશનજો જમિનોં જોસેજાઠોખા
 (નગાનેવાસતેરૂટોટોનો જોરોજો ગયાથાજોરોનોંસ્ટેશનોંમેં
 સેજાઠોખાબન્ધોવસ્તિખાપરુસ્વતિયાન નયાન મેતનનેજોજારસા
 રાખેસ્કો તુરખનદોં હોસખા નયારવાતિયાનીમિતનમેસેરાખેસ્કો
 ખિયાખાએગા સાજોડિસનસે જરખે હે મિરાખેસ્કોખરનેજો
 મિયેજોડિસનજોજોરેસે મોસોદાદિયાખાય ખિસજો મોતાબિયા
 રાખેસ્કો ખિયાખાએગા—

મેંખિનજોતન જાનેજોમિયેપાકો સિવેસાદિવજો પાસાતિસવા
 ખૂ પાકો યોદન છુખુરસે ચિટ્ટો પાખા ખિ પાકો સિવેસાદિવ
 ખપનો જેકસાતોજો સોવવાસ્તે જેતખુર ચનેગયે હે ખાગખ
 પત્રસવજોવન્ધખરજો ફસામિયેખિનજોતન જાનેનેહોંસખા
 જોરોવહાંખાખામ મુતતવા હે— જોરોજોસે ખિરજો તુમતમે
 પાકો સિવેસાદિવજોજોરોજો ચિટ્ટો પાખા ખિસમેં ભિરવે હે
 ખિ ખિનજોતન ફતજોજો સવ જમિનોંજો સમામેંતનગાયેહે
 સોખાપતોગ બતાફેખિ ખિનજોતન જાના પડેગાવા નહોં—
 મેં પાકો સિવેસાદિવજો ચિટ્ટો જોજોજોડિસનજોખિમાદે
 હે— તા: 25-2-33

પાકો યોદન છુખુર

The Gossner Ev. Lutheran Church in Chotanagpur & Assam.

[Mission Estd. 1845.—Autonomous 1919.]

LUTHERAN COMPOUND.

RANCHI, (Behar) India.

Secretary: P. HURAD,

No. 1070/32.

F. - 10.

Dated the..13th..December 19..32.

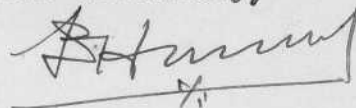
Rev: M. Prehn,
The Treasurer,
Church Council,
Ranchi.

Dear Mr. Prehn,

Herewith I am sending you two papers - one being the original complaint of the people of Marcha regarding Mandali Khajana and the other regarding the settlement of Bakasht land of Marcha with one Mansidh Topono. The Pastor D. Horo should be informed that according to the Centralisation Rules the application ought to have come through the Ilaka.

Please let me have your report on these two when done with.

Yours sincerely,



finan

मा-या . जी. इ. एल-चर्च- C.C. ओ- इलाका- गोविन्दपुर
मा-भीसुसहाय-।

मूचा-पेरिस-के-एक-प्रचारकपत्र-का-दस्तावेज-के-बारे-जो-राय
पूरा-इलाका-सभा-में-पास-हुआ-उसका-असल-नकल-आप-को-भेजा
जाता-है

इलाका-सभा-तार ६, १० नोवेंबर १९३२ . पेज-नं० ४
असल-नकल

मूचा-पेरिस-के-एक-प्रचारकपत्र-के-पंखों-का-दस्तावेज Registered to 348
file 10 कौन्सिल-से-जिखा-गया-दस्तावेज-इलाका-में-पढ़ा-गया. और
उसके-बारे-बहुत-देरी-तक-सोच-विचार-किया-गया-बाद-इसके-यह-संभव
हुआ-कि-जिन्होंने-मंडली-में-जुआल-चैन-होने-और-से-डालिजेशन-का-नाम-
बढ़ने-पावे-पाड़ी-बाबु-दानिएल-होरो-को-कोटवो-और-पाड़ी-बाबु-पतरल
कंसलना-को-मूचा-१९३२ के-दिसम्बर-के-बारे-से-कौन्सिल-से-बदली-किया
जाय-यही-इलाके-की-राय-है-इस-पत्र-की-बदली-में-दोनों-पाड़ी-बाबु
राजी-हैं-।

इलाके-की-आशा-से

गोविन्दपुर इलाका-सेकेटरी
D. How.

S. K. Bhengra
Ilaka Chairman
10/11/32

चर्च कौन्सिल के सदस्यों को हम मरचा प्रचारकपन के

पंच भाइयों का पेशुसहाय ।

31 OCT 1932

महाशय गंगा-

अर्ज निवेदन ऐसा है कि हम मरचा प्रचारक-

पन के भाई पंच लोग स्वपालन के लिये चंदा और सिरनी आदि को उचित रूप से नहीं जमा कर सकते हैं। उसके कारण हमारे कर्मचारी हैं। कारण निम्नलिखित हैं:-

- 1, कर्मचारी लोग पूरा सेटुलाईज इलाका में नहीं देते हैं।
- 2, मराठी सम्बन्धी खजाने को अपना निज खजाना नहीं समझते हैं।
- 3, खजाने सम्बन्धी हिसाब में ठगते और पंचों को धमकी देते हैं।
- 4, चर्च कौन्सिल को बनाई हुई नियमावली को नहीं मानते हैं।

इन अनुचित व्यवहारों को सुधारवाने के लिये हम एक दरखस्त पारिस समा में पेश किया था और पारिस महारा किया। पर पारिस चेयरमैन उसको पहले तो आने वाला मिटिंग बहके उसको रस लिभा-लेकिन आने वाला मिटिंग आने पर भी उसके विषय बात विचार नहीं हुआ, और पीछे बोलते हैं कि हमही लोग-आकेला में इसका बात विचार करेंगे लेकिन आकेला में भी कुछ नहीं हुआ-ऐसा ही कई बातों को कहते करते दिन बिताने जाते हैं और मराठी सम्बन्धी खजानों से पंचों को ठगते और बिलकुल अनजान रखते हैं। इस प्रकार से-हमारा दरखस्त न पारिस न इलाका न कौन्सिल में पहुंच सकता है, इस कारण से मरचा प्रचारकपन समा सीधे कौन्सिल में यह बात लिखने का विचार किया। और ऐसे कर्मचारियों से आगे को काम करने नहीं चाहते हैं। प्रचारकपन समा चाहती है कि आगे-सिर्फ कर्मचारी खजाना लेकर खुद उसका हिसाब करें और पंच न रखे जायें, क्योंकि पंच नाम के लिये रखे गये हैं। ऐसा करने से कर्मचारी और भाईयों के बीच का अनबन मिट जायगा क्योंकि कर्मचारी लोग पंचों पर विश्वास नहीं रखते हैं। यह बात बहुत दिन से चली आती है, जिसको पंच भाई सुधारते आगये हैं। इस लिये मरचा प्रचारकपन का विचार है कि एक तो-हमारे मराठी के कर्मचारी उठाया जाकर दूसरा कर्मचारी दिया जावे, नहीं तो पंच उठा दिये जाते ऐसा न होने से मरचा पारिस भर भी कुछ सान दिखाई देती है। क्योंकि कई प्रचारकपन का सेटुलाईज बढ़ हो गया है, जिसपर कर्मचारी ध्यान भी नहीं करते हैं। हमारे कर्मचारी हमारे प्रचारकपन के गुरुल्लो का 1926-और 22 के दो महीनों का वेतन विना गुरुल्लो के अनुमति से खर्च किया, जिसके बारे गुरुल्लो हेड सुपरवेंजर को आनेकबार लिखे थे- तो भी न बात से न ताण उनको रुपैया देता है जब यह दूसरे लाईन के रुपये पैसे में अपना बयौती समझता है तो मराठी-के खजानों में जो कि उसके हाथ में हैं उसे बयौती समझना कौनसी बड़ी बात है। ऐसा कर्मचारी अपने मराठी को बहुत कण्ठ कर सकता है, हमारे देरव में-पार के बहने मराठी के ऊपर कर्मचारी का बैर पैदा है- इस लिये कौन्सिल से निवेदन करते हैं कि इस दरखस्त का विचार करके पंचों को अच्छी राय देवे। आप सभी के सेवक मरचा प्रचारकपन के पंचगण:-

Received
29.10.32
C.H. Bhargava

6
इस दरखस्त का एक कपी खंजाची रम. प्रेहन को दिया जाया है ।

पंचों की सही

मरकस तोपनो

पौलुस तोपनो ✓

निरमल तोपनो

इलियस तोपनो

अनन्तरमसिह तोपनो ✓

मोहन तोपनो

धुसल तोपनो

मोहन तोपनो

कलेक सुरिन

हालिल तोपनो

इमानुएल तोपनो

Nehemiah Topno

यह दरखस्त पूरा इलाका - एला - में - जो - ६, १० नोवेम - को - केडी
पेडा - विधा - को - बहुत - सोच विचार - जो - राम पात - विधा
गया - उरुमा - एला - को - जो - मेहनत है
को - यह - दरखस्त - जो - C.C. को - मेहनत जका - है ।

C. K. Bhugra
Haka - Chairman

1 श्री श्री महाभावा २ महाभा प्रेक्षा सदेव खजिन की ओ लोवा समझावे के हम पदमपुर
 देवरा उली माइयो का बहुत र प्रीति सदा रहे — 17/5/33

है हम लोगों की लिव ने की जितने मर है, कि हम लोगों का जिनि मिलने के लिए हम लोग
 हमने लिवने बहुत लम लीम पड़ता था इस लिये सब माई लिवने बात बिचार लिये
 और लिवने पचा को दिया कि संतोम २ पर जिनि लम धरदा के लिये माइये
 और लिवने माय दाती को ले माइये और नि पड़ी माये तब हम लोगों को खबर
 मिले कि हम वहां नि सके पर हमने बावले इस बिषय के बारे माइये पड़ी को सुना दिया
 और लिवने हुमा आगनि को बिना दिया और वे लोग पेरिस समा में बिचार फामसला
 और हम लोग पदमपुर माइये होना पर हम लोग निवा व दिया कि नही माइये
 ने । ३ इसमें पड़े माय समा के लिये हम लोग लिवने मोता बिम हजिर के पर ६६
 नही हुमा पर पदमपुर लिवने में कोय के बा निसे हजिर नही हो समा पर माय समा हम
 लोगों का गह बिज होने के बाइसे निनि वृत्त में लिवने दिया कि माय लिवने में
 लेना वमन दात सादी राद बिम निवे जो मलगा नि की करते हैं उन के लिये
 और अवेनि माय समा से कि फिर निवे लिवने में नि दिया कि माय माइये
 में निवा हो मा पर हम लोग निनि वृत्त मा लिवने हुमा सुना जो मा हुमा माइये
 कि हम लोगों को लुगेर निमन से निमा व दिया माइये जो माइये निमन व दिवने मा
 उमने धरने का वमन दात सादी - निवेगा - ४ - इस लिये - हा हुमें को सुना देते हैं कि
 हम लोग को चने - पड़े है मा वमन दात न - सादी - हम लोग ले - लिवने माय दाती पचार
 दिया - तो नि - हम लोग - का माइये नही सुना देते लेनिन निवे माइये निनि माइये
 माये माइये पड़ी को माय समा और फारवा नि निमा, निनि नि दिया और लिवने
 प - और हम लोगों का सब वमन दात सादी दिया तब पड़ी लेना कि लिवने वमन दाती
 कि समा निवेगे - और सब बात को नेवा देगे पर लिवने मोता बिम हजिर हुमा पर
 बिचार २६ लिवने रात - व वमन दात सादी हुमा उस समा हम लोग बहुत माइये
 निमा लेनिन हम लोगों का माइये दाती वृत्त को नही सुना देखिये हम लोगों माइये
 सब देते हैं तो नि नही सुना देते निनि ले पत्रों में माइये और निनि वृत्त
 लमन नही है पदमपुर को दिया - पदमपुर वमन दात सुना पर हम लोगों के दिवने समा से
 बहुत मोसा हो माइये हम लोग समा को निवा व दिया कि हम लोग लुगुम दा जिनि
 के लिये - माइये - नही निवेगे - तब समा - इलाह - वमन दाती
 ६ - पर हम लोग - पड़े - निनि - से - माय - माय - माइये देना माइये हम लोगों पर मोसा
 निवे दिने सलिये - हम लोग माय से निवेदा के माय - माय को - लिवने - माइये - माइये
 देते हैं - कि माय हम लोगों का हाइल पर माय - निनि निवेगे से हम लोगों को माय
 मा माय माय माय से माइये माइये कि माय निवे माय माय - निवे तब
 तब हम लोग सहीरे रेंगे सो हजिर को हीम से हम लोगों का लिवने हुमा वमन दाती
 सुमा वमन दाती और शमा वमन दाती हम लोगों को निवे निवे -

हम लोगों का मूल मूल माइये निवे
 ७ वा: सुलेमान उदिम पदमपुर माइये पदमपुर - देवरा उली

Church Council
 Received 17-5-33
 Register No. 15
 Date.....
 File..... 16
 Repl.....
 Da.....

ता: १६/४/३३

डी. सिंग

६ योहन मान को
 देवरा उली -
 ६ योहन मेरा देवरा उली

महाभावा २ महाभा प्रेक्षा सदेव खजिन की ओ लोवा समझावे के हम पदमपुर
 देवरा उली माइयो का बहुत र प्रीति सदा रहे

३ दाऊद तो मोरो पदमपुर
 ४ माइये माइये पदमपुर
 ५ माइये माइये देवरा उली

समा - मा: माइये - माइये

Church Council
 Received 18.3.33
 No 664
 Date... 14.3.33
 File... 52
 Reply No.....
 Date.....

24

18 MAR. 1933

चार्य कोन्सिल के खजांची के निकट निवेदन.

श्री युक्त मान्यवर महाशय को मेरा बहुत २ थोड़ा सहाय.
 भागे महाशय. को मालुम होवे कि मुझे चार्य कोन्सिल
 की अनुमति से १ बरस की छुट्टी मिली थी और छुट्टी
 के समय परवर्ति के लिये महिना १५ रुपैया प्रदत्त ठहराया
 गया था. यही प्रदत्त मुझे ३ महिना मिला और बाकी
 ६ महिना नहीं मिला, बाद फिर कोन्सिल में एक करजी
 दरखास्त पेश किया जिसके जबाब में मुझे लिखा गया कि
 खजाना में खर्च होने से दिया जायगा, महाशय- इस समय
 हम नये जगह में बदली हुए हैं खर्च का बड़ा तकलीफ है इसके
 सिवाय हमको खेत बारी का बड़ी कंक्रट है जमीन खर्च और
 मालगुजारी का देन बाकी पड़ गया जिससे हमारे जमीन जगह
 का गोल माल हो रहा है हमारे जमीन को महाराजा का तहसील
 दार लिबाम करने का नोटिस दिया है इस समय यदि मुझे कुछ
 मदद नहीं मिलेगा तो मुझे जोत भर तकलीफ सहना पड़ेगा।
 इस लिये महाशय से मेरी करजी है कि कृपा करके हमको जो-
 मिलाना है सो दया से दिया जाय।

आप का अधम.
 सेवक-

जयमसीह मिंज. आमतान
 १४.३.३३.

Sent Rs 20--
 on 29. III. 33 as
 help. (Munkh Rs 10--)

M. G. P. M.
 24 III 33

Scanned Copy

Agenda for the meetings
of the Church Council for May 4th. and subsequent days after the
Conference, 1933.

-----e00-----

1. Prayer.
2. Roll-Call.
3. Previous Minutes.

I. Church Department.

1. The future of Jharsugudah.
2. Sunday School Curriculum with Panjika.
3. Missionary work and support.
 - (i) Berlin Board's stipulation.
 - (ii) Missionary monthly church service.
 - (iii) Group of regular subscribers.
 - (iv) School societies under School Heads and which schools.
4. Posting of German missionaries on borders & their jurisdiction.
5. Offer of services from
 - (i) Rev: J. Topono (ii) Mr. N. Soy (iii) Rev: J.J.P. Tiga.
6. President's proposals in Mahasabha on Swapalan.
7. Transfers and postings-Darigutu & Tujur, Gumla application.
8. Pensioners and provisions for them.
9. Missionaries for stations.
10. Divorce to Nirmal Tiga.

II. Education Department.

1. Mr. N. Soy's office.
2. Reforms in High School.
3. Free studentship and boardership of Jharsuguda students.
4. Term of membership in High School Managing Committee.

III. Property Department.

1. Reports of settlement of lands and other property for income.
2. The Missionaries' gardens -Rev: F. Schulze' & Deaconess Fritz letter
3. Kharsidag land question and old Pracharak.
4. Chakradharpur Survey Settlement costs. Re. 1.3-0.
5. Rev. P.C. Punoria's letter regarding property settlement.
6. Koronjo market - settlement of.
7. Burju Church Repair - Trust fund withdrawal.
8. Jarakudar property - Attestation begun.
9. Koronjo Catechists letter regarding lands.
10. Takarma application for cutting down trees for school building.
11. Compound protection Rules.
12. Nobo Kumar's application for a passage.
13. Repairs to bungalows:- Khutitoly, Tokad and Karimatti.
14. Repair to School Purulia and Kendra.
15. Khutitoly Bakasht land - for settlement.
16. Khutitoly pastor's application for land for house building.
17. House for Birkera pastor.

24

G. E. L. Church Council
Ranchi

Dated Ranchi 29th April 33

ਮਰਦਾਨਾ. ਮੁਹੰਮਦ, ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਦੇ. ਮਰਦਾਨੇ
 ਦੇ ਮੇਰੇ ਪੁਰਖਾਨੇ।

ମନୁଷ୍ୟ ଯଦି ଦିନରା-ପ୍ରାଣରା. ଶାନ୍ତ. ଶାନ୍ତ
 ଶାନ୍ତ. ଶାନ୍ତ ଯଦି ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ
 ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ ଶାନ୍ତ

[illegible]

॥ अमले १॥ - इला - के - अंगला - , लैन . एफ . मी /
मिजई एफ . वी ६२॥ - मीले शोचविम - है ,
मिजई एफ . मी / लैन एफ . के - छल - लो - विगुना -
सुख - हो वाम है मी . अर्था - के मीले - न
मामल - विम - जाले - लो - समना है वि - न सल
विमले - को री - वि - पड़े । सो - अकाम - को विमल
एक विमल को रोकल - से - विमल - अ - सुसम -
में मामल - अले - विमले एफ . विमले से अकाम - जाले ।

૫૩ રૂઠાએ બી. ૬૨૧ નો - દરેક બી. ૬૨૧ - ૬૨૭-અ
રૂઠાએ - બી ૨૧૦ સે - જી - અમુક - રૂઠા - બી મિશન
બી - ખુલાસા - વિ. ૮૫૪ રૂઠાએ બી મિશન ૨૦૦
મિશનરી મેલી આવે - જિલ્લો - ઉપરોક્ત આવી બી
૨૫૫ હોવે ।

ॐ - नमः - श्रीगुरुभ्यो नमः ।
 अतो - य - विश्व - दत्त - दे - शिते - मेरु - विन्ध्य -
 गो - मती - चरि - त्वा - ह्वये । मरुत - अग्ने -
 मरुत - ह - वि - पुत्र - पितृ - योः - अ - मृत - रश्मि
 शो - शिते - मेरु - विन्ध्य - ह्वये ।

*Johann Bhangra
Duisburg*

POST

WRITING SPACE

INDIA



CARD

ADDRESS ONLY



Church Council

Received... 5. 4. 33..

Register No. 677..

Date... 28. 3. 33..

File... 57.....

Reply No.....

Date

To
The Secretary
Lutheran Church Council
Ranchi

बहुजूर सेकेटरी, लूथेरान चर्च-कोंसिल, बोटानागपूर और आसाम
5/4/33, रांची ।

महोदय,
आप को सादर नमस्कार ।

कोंसिल की ओर से महासभा का कामपत्रादि पाया । जो कार्य्य सौंपा गया है मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ । ईश्वर करे उस समय तक कोई बाधा न पहुंचे आगे आप का ध्यान इस ओर रहे कि तसदीक हो रही है । जड़ाकुदर मिशन हाता की रक्षा के लिये जो उपाय ओ प्रयत्न हो सके, को जाय । आप की चिट्ठी नं० ३२३-३२५/३२, तारिख ३० जून १९३२ के आदेश अनुसार मैं तनाजा नहीं दे सकता हूँ इस कारण कि मैं अपने में इस बात का निर्णय नहीं कर सकता और न कोई लिखित प्रमाण है । कोंसिल से जो कुछ किया जाय सो बहुत शीघ्र किया जाय. तसदीक का काम शुरू हो चुका है ।

Rato Birker }
28th March 1933

आप का आज्ञाधीन सेवक,
Rev. M. D. Lakshy.

19.4.33

744

19.4.33

29.

लुथेरान चर्च बोर्ड ऑफ द्रस्टोज के निष्कर्ष निवेदन

ब. जारिये चर्च कौन्सिल. गैसोनर एक्जेलिकल लुथेरान चर्च छोटा नागपूर और
अपसम ।

सहाय्य :-

आप को मालूम होवे कि खुटीटोली का बंगला जो कि बोर्ड ऑफ द्रस्टोज के अन्दर है. बीते कई बरसों से मरामत नहीं हुआ और न पोचैरा दिया गया है जिससे बंगला खराब दिखाने पड़ता है और बरसात का पानी छत को और दिवाल को बिगाड़ दे रहा है और अधिक कारके दीमक छत को नाश कर दिया जिससे मरामत की बहुत जरूरत है। और अगर मरामत न होवे तो हो भी सकता है कि इस बरस बरसात में कहीं दिवाल भी टूट कर गिर जाय ।

इसलिये अर्ज पेश करते हैं कि बंगला मरामत के लिए

आदिवाल को बगाड़ दे रहा है और अधिक करके दीमक छत को नाश कर
दिया जिससे मरामत को बहुत जरूरत है। और अगर मरामत न होवे तो हो
भी सकता है कि इस बरस बरसात में कहीं दिवाल भी टूट कर गिर जाय।

इस लिये अर्ज पेश करते हैं कि बंगला मरामत के लिये हुक्म और
खर्च मिले।

Forwarded to C. I.

19. 4. 33.

A. John.

रूपाय का रूपाज्ञा करी

पाद्री - चम्पदास कुजुर.

खुशीरोली ।

19.4.33

743

19/4/33

19.4.33 लुथेरन चर्च कौन्सिल छोटा नागपूर और अपसाम के निकट
29 or 30
निवेदन पत्र ।

ब.जरिये- पाद्री अप. जोन चैनपूर सुपरिन्टेन्डेन्ट मंडली जयदाद ।

महोशयगण :-

आप को मालूम है कि मैं खुटीटोली में करीब ८.६ बघों से यहां पर
मंडली का काम करते २ उस के साथ मंडली जयदादों को भी देखता और चलाते
आता हूं । और आप सभी को भी मालूम है कि मेरा न घर न जगह जमीन है ।

पर मालूम हुआ कि यहां खुटीटोली में थोड़ा बकास्त जमीन है जिसका
रैपत यहां से उठ पाठ कर भाग गया और अभी मंडली के हाथ अर्थात् बोर्ड
ऑफ़ ट्रस्टीज के नाम पर है । और बीते ^{बाम} से सेटेलमेन्ट ऑफिसरों के द्वारा मुझ
को कहा गया कि वह जमीन क्यों अब तक किसी राइयत सर को राइयती बन्दोबस्ती
में नहीं दिया गया है । राइयत का जमीन राइयत को दे देना चाहिये ।

उस जमीन का नाम सडक दोन और कुमनी बांच है जमा डेढ आना करीब दोना ।
और उस के लगान में बांच के से से से

पर मालूम हुआ कि यहां खुदीटोली में थोड़ा बकास्त जमीन है जिसका रैयत यहां से उठ पाठ का भाग गया और अपनी मंडली के हाथ र्पछात बोर्ड ऑफ़ ट्रस्टीज के नाम पर है। और बोर्ड ^{बांस} से सेटलमेंट ऑफिसरों के द्वारा मुक्त को कहा गया कि वह जमीन क्यों अब तक किसी राइयत स्त्री को राइयती बन्दोबस्ती में नहीं दिया गया है। राइयत का जमीन राइयत को दे देना चाहिये।

उस जमीन का नाम सडक दोन और कुमनी बांघ है जमा डेढ रुपाना करीब होगा। और उस के लगान में डंड भी है और भागा हुआ अपसामी फिर कभी नहीं अपकेगा। अपन्दाज यहां से उसका भागा हुआ 20 ~~घा~~ या 25 बरस बीत गया है।

इस लिये फ़िदवी चाहता है कि वह जमीन फ़िदवी के साथ में राइयती बन्दोबस्ती पर दिया जावे और जो यहां पर गांव सरह में सलामी का रेवाज है। नजराना लेकर नया अपसामी बन्दोबस्ती होने का हुकुम फ़िदवी के साथ फ़रमाया जावे। फ़िदवी इस मेहरबानी पर आप का सदा ही धन्यवादी बना रहेगा।

Forwarded to C. L.

19.4.33

A. John.

आप का आभार।

पाद्री. धर्मदास कुजूर।

Church Council
 Received 24.4.33
 Register No. 758
 Date.....
 File... 23...
 Reply No.....
 Date.....

No. 70K.

24/4/33

To,

The Revd A. John,
 Treasurer of the Board of Trustees,
 Chainpur.

Dated Kondra, the 15th April 1933.

Dear Revd Sir, I beg to submit herewith an humble petition to your kind information and favourable disposal that as our Teachers' quarters as well as the Boarding house, where about 20 boys are residing, are in a very miserable state and if this line will not be repaired, it will fall and levelled to the ground. Last year the boarders and my family would have been crushed down but fortunately we have been saved. The Glaka is quite unable to repair it.

Under these circumstances, I hope you will be graciously pleased to offer us Rs 20/- twenty only, for the repair of the quarters, for which act of kindness I shall be much thankful to you.

I have the honor to be,
 Sir,
 your most obedient servant,
 Ignatius Lakra,
 Headmaster, Kondra Lutheran
 U. P. School.

The trustees will not undertake to repair the teachers' quarters and the boys hostel. The petition should be addressed to G. E. through the H. E. Supr after getting it approved by the Social Pastor and the Glaka panel.

H. E. Supr
 19.4.33.

I think this matter should have been sent through the Glaka panel to the H. E. Supr who may take the necessary steps.
 Forwarded to the H. E. Supr.
 19.4.33.

Church Council
 Received... 24.4.33
 Register No. 257
 Date... 22.4.33
 File... 29
 Reply No.
 Date...

24/4/33

श्रीमान लुथेरान चर्च कोन्सिल छोटा नागपूर और असाम
रॉची

बजरिये इलाका पंच खुदीदोलो ।

महाशयगण ।

मेरे दरवास्त के प्रतिकार में जो ता: ७ अप्रैल १९३२ में
बैठी थी, कि उस के लिये जगह मिले. यह फैसला हुआ कि खुदीदोलो हाता
के निकट लगा हुआ जमीन को नहीं. पर उस से अलग का जमीन दिई
जा सकेगी ।

इस लिये खिद्वो उस जमीन के लिये पाने को अर्जों करता है जो कि
खुदीदोलो हाता के प्रायः दखिन पूर्व में छोटा बस्तो है उस के पश्चिम तरफ
का डांड, जो डेढ़ काठ पखन का है, नामे महुवा डांड है. चर्च कोन्सिल
से पाने की तालमेल से मंजूरी के लिये अर्जों प्रेश करते हैं, कि महुवा डांड में
घर बनाने का अनुमति मिले, जिस का प्लॉट नम्बर २३८ बकास्त है ।

ऐसी कृपा के लिये खिद्वो, आप का सदा ही अन्तर्बादी है ।

24.4.33-21.4-देती
 है- कि-पर-जगह-पाड़ीबाड़-
 चर्च-कोन्सिल-मंजूरी-पाड़ी-बाड़-
 21.4.33-जाती है

आप का कृपाभिलाषी.

दास,

पाड़ी.... धर्मदास कुजुर

खुदीदोलो

ता: १७-१-१९३३.

Copies forwarded to Church
 Councils for consideration

Augustus Pitts
 Secy. J. Panah
 17/1/33.

Forwarded to
 Secretary C. C.
 A. John

22.4.33

Church Council
Received 29. 4. 33
Register No. 769
Date 28. 4. 33
File 29. L.
Reply No. The
Date

28/4/23

Ranchi

28th April 1933.

Secretary
Church Council

G. E. L. Church Ranchi

Dear Sir..

How with I remind to the C.C. that from the Purulia Daka a repair estimate of the school Church buildings of Purulia has been sent to you, But now one year past no any reply received from the C.C. If you will neglect this reminder then there will be much harm for the school buildings in the time of rainy season.

Kindly see it, because it is very urgent matter, and reply soon.

Yours faithfully
P. C. Ghorasia
Purulia.

Charles Overell
 Received 13.3.33
 Register No. 639
 श्री युक्त माधवदास चव्हेरी सिंहा को मेरा बहुत खोस हाय
 File No. 28
 Date

13/3/33

मांगे हास मंजूर होवे विधायी सिंहा को तरफ से मुभाओ
 और पाद्री जोन साहीब को गुमनाम, जोहर दगा और चौमपुर
 के मिशन खेतों को सेवा में लगाने का कुलुम मिला था-
 पर मांगे लोगों में जब तक नु ५ आस नही हुआ है
 पाद्री जोन साहीब को तरफ से ४.३.३३ जोहर दगा जमिने मिले
 चिट्ठी भिजा गया था-पर पाद्री जोन साहीब नही आये-
 अब वे जोहर दगा के पाद्री बाबु से खपि चिट्ठी मिली वि
 न ही मे खुशरोज टोप को ऐसा लुभाता है और गुमनाम में
 मे रोप टोप होता है इस लिये इन दोनों जगहों में जब तक
 चौ. सिंहा को और से चिट्ठी नया आने डाल नही होगा वहां
 जाना जो वन्देवस्तन नु भी नही बनता है जब तक
 को बाधा चौ. सिंहा को और से न मिले जाय-मे पाद्री
 उरल पुस पुस को चिट्ठी को भी चौ. सिंहा में जेश्वर ताहुं
 बीसा है विन जेल का मे रोप टोप होता है-मे जब तक
 चौ. सिंहा को और से नया कुलुम परमाया न जाय चारों जगह का
 आस मुजबोर रहेगा-

पाद्री दाऊद पुस

अर्द्ध हाती में आली ५ के जो न जेल कांड बिन्दु है- जेल से सेवा बन्द होवे
 बिना जायेगा। अथवा इनसे जेल से मांगा बिना जायेगा।

POST

INDIA



CARD

WRITING SPACE

ADDRESS ONLY



मे युने पावनावल क
नमिअवेवत कले तो
मअए दोगा कोइ कोइ लेम
तो 2121 अवेस। कले के
मल से मी अमल। ए। मे
है। मने मने तो मासकते
है। मौ। मने के नमिअवे।
अब कल मकते है। म। मौ।
मने तो मने -

THE ANNEXED CARD IS INTENDED
FOR THE ANSWER

U. E. Kujar

Rev. David Kujar
Lutheran Church
Gumla
Oh. Ranchi

लेखक

22-2-32

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र - जे महाराष्ट्र

काठ माया जिसके महाराष्ट्र महाराष्ट्र

जोना सहेन जिसके को है को है

जोना के जिने माने माने है। जो

हल के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

जोना के जिने लोको को गांव से महाराष्ट्र

Tahanna, 6.3.1933

13.3.33

649

6.3.33

29

~~13/3/33~~
13/3/33

To the Secretary Church Council Ranchi

Akha, nay,

Ap ke chitthe no 1310-14/33 tarikh
3./2/1933 ke sambandh mein aphas parti
kung hi unhe Church Council ke phaisla
ke birudh out station gardens ke li, nay
bolna parta hai ki main bagan ke liye
kisi tarah ka magunari dene nahin chahti
kum bagan ki bharch amdan se bahut
adhi hai. main magunari dene ke badle
khusi se mandei athwa Church Council hi
ko bagan de deti yadi wah mere un bharchon
ko bhar deti jin ko maine bagan ke liye abtak
bharch ki hum.

Ap ke

Sister Auguste Fritz

~~\$1.~~
5/4/33.

सोने के चूने को सिलव को सना सदगुरु
के निरुद्ध निवेदन ।-

६ जरिजे - पाद्री चमेलवास कुम्हार पास्टर
इन चमेली को ठेकेदार रखे हो तो निश्चय
प्रमाण है ।-

गिरि व पुरा-

१) जर्मन मिशनरियों के समझ से लेबर कानून
 तब खुदो डोलो में आया जो चौमियार का
 काम करते आता हूँ। सब १९३३ साल से
 कौंसिल ने मिशनरों को सब राजा का
 पत्र से लेबर अपने राज्य में ले लिया और
 राजा का पत्र खुदो डोलो ने मुक्त को बोले
 करवारी से छुट्टे दे दिया है, तौ भी पाके
 कामवास कुबरा पास्टर इन चीजों को ठीकदार
 को आशा से आबतक उनको साचो न
 में काम करते आता हूँ। इसीलिए पहचाना
 मुक्त गरीब को गुजारा के लिये पहचाने
 २) पांच रुपया तलब था जो उचित हो कौंसिल
 से देने को कृपा कीजियेगा। मुक्त गरीब
 को आन वही जो अपना रहा कर मिशन को
 सेवा के बाल बच्चों को परवसी कांसकुं। इस लिये
 आप लोग उचित बिचार कर उचित बन्दोबस्त
 मुक्त गरीब के लिये कीजियेगा।

उचित या सोहो में ने सारज निष्ठा - 1-

काम लोडों का साइलेंट बैकल

जो रो मुसल
रुखो हो ला

[illegible]

26. 22

Church Council

Received... 5.4.33

Register No. 694..

Date... 5.4.33.

File... 11/24/33

Reply No.....

Date.....

5/4/33

शेचो ५-४-३३

चर-सेवे देरी-

आप-को-जनाया-जाती-है-क-सो-दे-मा-भा-उ-ले-

को-आ-दे-दे-अ-ना-पु-को-अ-क-व-उ-दे-दे-को-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-

को-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-

अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-

अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-

अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-

अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-

अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-अ-क-व-

Mandli office

Ramshi 5.4.33

A. S. T. Singh

Kaka

R. I. P. Secretary

Church Council
 Received 18.4.33
 Register No. 730
 Date 12.4.33
 File 30
 Reply No. 59
 Date 15/4/33

जन्मा-लेकेरी-केड-ओफु डारयेज
 मिशन डार-ओफु-नोयरेन इंडिया

15/4/33

महाराज

मां जा-रवरी पाग-धाना-रांची-न-इरुकी का-मिशन-
 हाता-ओ-पाचारण-^{रहनेकापु}मा-गिरजा-का-जगह-शान-वरीक
 इरुकी में-वजरीये-मोकररी-राविय-किया-गया-है
 कोहरा-पाहन-के-मुइहरी-साबिक-सेटलमेन्ट-में-कोहरा
 पाहन-खेवर-³के-अन्ध-मोकररी-धारा-का-एमी-रवा
 रवाला-वेधार-हुआ-है-सकुर-नोटेरीट-साहेब-के-नाम-से
 रवाला-^{न-86}-^{को}कोहरा-पाहन-का-मुइहरी-~~का~~
 जमीन-खेवर-^{न-3}का-रवाला-^{न-86}-है-ओ-देवरी
 पाहन-का-रेयली-रवाला-^{न-92}-है-1-
 खेवर-^{न-3}-लगाएल-खेवर-^{न-3}रक-खुट-का-
 इराजी-है-ओ-रक-साथ-लगाए-दिया-जावा-है-
 रवाला-^{न-92}-कोहरा-पाहन-का-रेयली-रवाला-है-
 जिसका-लगाए-कोहरा-पाहन-का-रवाला-अकाल-
 है-रवाला-^{न-92}-का-लगाए-रवाला-पहन-पर-
 जमीन-किसी-को-बिना-खेवर-दिये-कोई-ओ
 कोरवा-देकर-रेयली-रवाला-⁹²-के-साथ-मुइहरी
 रवाला-^{न-86}को-⁸⁶की-पराजी-में-जिला-मिशन
 पर-बदा-कर-खुट-राविय-किया-शान-वरीक-⁵मे
 मेक-सर्व-मिशन-में-सिक्-रवाला-^{न-92}-⁸⁶-⁸⁶
 का-पुट-नगर-दिया-है-मगर-रेयली-या-मुइहरी
 इकियल-नहो-दिया-जावा-है-इसी-पराजी-जिला-म-
 को-दुरा-वहानी-के-जरिय-हाल-सेटलमेन्ट-में
 मिशन-^{ओ-रवाला-^{न-86}}वेवर-हा-गया-सिक्-गिरजा-पर-गैर-मगर-^{मा}
 के-अन्ध-पुन-होकर-रवाला-के-मिशन-में-मिशन-का-
 काना-दिया-जा-गया-है-
 बाव-हो-के-खेवर-^{न-3}लगाएल-खेवर-^{न-3}लक
 रक-खुट-का-है-का-लगाए-शामिल-दिया-जावा-है-
 लोका-सिक्-खेवर-^{न-3}जिला-हुआ-को-रवाला

खेबड-जिला-नहे-हुआ-खेबड-दरा-अल-नक-लगा-
शामिल-दिया-करते-हैं-इसे-हाल-में-आप-लोगों-से
माजरे-हैं-जि-मिश्र-का-जायदाद-को-आप-लोग-
वचने-का-उप-को-जिने- -

शान-वर्ष-के-सर-जुल-दर-४८-के-मोला-लिका-मुह-हरे
नहे-जिला-हो-न-चा-हिये-अगर-होगा-मो-ली-
समुदाय-खुं-का-मुह-हरे-जिला-होगा-युं-क-
* सा-खेबड-याने-३-लगा-लगा-खेबड-७-३
हम-जमा-जाने-का-रस-है- -

यह-आप-लोग-से-हो-होगा-अपने-आप-से

यह-है-अ-हम- -

आप-से-हो- -

Daniel Ekka Pauch
Kharredag Ranchi.

Memo no. 86/33

25 ³/₃₃

Forwarded in rip in it to
the Secretary, Church Council,
Ranchi, for favour & enquiry
and report is to what should
be done by the Board of Trustees
in the matter.

To the Pauch
Secretary, Board of
Trustees, 12.4.33

Church Council

Received 26.3.33

Register No. 676

Date..... मह मन्मथार महाशय

File No. 29

Reply No.....

Date.....

याचें यों शिष्ट को मनसुख होये प्रचारक का
बहुतर योशुसहाय ।

जोगी मन्मथार प्रेहन साहेब और मन्मथार प्रेडिगेन्ट साहेब
कोरेन्जी आये थे उस समय उन लोग हम को पूछा कि
तुम मिशनरी जमीन चोरी किया है मैं उन को जबाब दि-
या कि कोरेन्जी नीवर में एक टांड हमारे नाम से खाना पुरी
हुआ था पर वसईक में उस जगह को छोड़ दिया और
मिशन को जिमा कर दिया । पर चेटवाल मौजा में मन्मथार
गेमरुकी साहेब बगाना और उसके साथ कुछ पत्तीन्द्रा
मिश्रण तरफ से मोहन लिया जिसके कान्हर एक छोटा
नाला था, जिसको मौजा कोरेमियां के चेटवा सरांगा-
पूछ का कोका रफड़िया काटने, छोड़ने को बान्धने लगा
ई-७ महीनों के बाद उसको बेटी बिमार होके मर गई
कितने रफड़िया लोग उसके बोलने लगे तुम उस नाला
को छोड़ देओ तुम्हारी बेटी को वहां का नुब खा दिया अगर
नहीं छोड़ोगे सब मरेगे वह डर के मारे छोड़ दिया (पिछे
कोनमेंजर से एक दशाई नाम का रफड़िया आया वह
ने उसी नाला को जोड़ने बान्धने लगा एक बरस
रहने वह बिमार होके मर गया लोग उसको बलवदो

को भी वहाँ कहा ऐसी हज़रत पल्लवों ने छोड़ के अपने
पुराने जगह को लौट गये। बाद में उनके आग जाति पर
१६०६ में मैं अपना चास चलाया और मन्त्र दार पद्वी
गोपस्वामी साहेब को सुनाया, साहेब हाँस्मे लगे, मैं और
मैं बोला अब मैं ही अपना चास करता हूँ जो छोड़ छोड़
करता हूँ, साहेब बोले आच्छा देखो ब्रह्माओ। मन्त्र दार
के बाद वे विलम्बित चले गये पीछे पद्वी झाँई नऊ
के जगह में लाये उनको मैं मैं नाला के विषय कहा
और उस समय भान्याज २० पैला का खेत व्याप
पा जिसका माल बंधन कहा साहेब बोले अभी रहने
देकी कहिये मैं खेत जांच करके माल बन्दोस्त कर
देउंगा पर ये मैं लड़ाई के कारण विलम्बित रवाना हुँ।
लेकिन अभी पुःया २ बरस होता है जोन साहेब आया
आ उनको और से पुःचार निर्मात खलफ़े कई जनों के
साथ खेतों को जांच किये जांच करने के बाद
हम को बोले कि हम लोग तुम्हारे खेत जांच करने
गये थे जांच करके देखा कि पुःया ६ काब का खेत
व्याप होगा सो अगर साहेब सराफ़ी देगा तो काब
में १० रु० के हिस्सा रहे ६० रुपैया होगा मैं उन
को जवाब दिया अभी कहां से इतना रुपैया देउंगा

18
 बाद नाथ जाने से कापने ही नाम से नाथ को खानाभूषण
 का लिखा और ३) रुपैया माल जो तसदीक को
 समय बन्दोबस्त कर दिया। सो इस में हुजूर काप
 लोग हम को चोरी कहेंगे, चाहे जो काप लोगो ^{कोई} इच्छा
 जो बोलिये।

अगर चोरी करने का कापना मेरे मन में होता तो को-
 रो जो मौजा को सन १९०३ में मिशन लिखा है उसी
 समय से गेमस्की साहेब मौजा को देख माल करने
 का हुक्म दिया अगर हम चोरी करता तो ५०५ काट
 तक का पतले नाका सब को दरबल कर लेता -
 साहेब सब जानते हैं कि ३० बरसों से कोरो जो मौजा
 में काम करते कापों पर कोई साहेब चोर नहीं बोलें
 वो पर आज मैं चोर उहराया जाता सो चोर बन गया हूँ
 इसलिये अर्जी है कि हुजूर ऐसे चोरों को सगाती में
 न रख के पुणेराज मंडल हिसे निकाल देना -
 अर्द्ध हुजूर सरलिक है।

Mais 1908 mein
 Koranjo aya hua aur
 jab se aya tab se us
 jagah mein Prachar
 Ka Kam jarela hua.
 Ghod Din
 Koranjo
 21/3/33

जो काप लोगों का
 आशाचीन

मनसुराहरो पचारक
 कोरजा

2.5.33

782

1.5.33

29.

25/33

To, The Secretary C. C.

महाराय,

आप को यह सहाय होवे ।

बुर्जु बगान के बन्दोबस्त के सम्बन्ध में :
 बुर्जु बगान जो इलाके के मतहत में था सो १९३२ में
 १९३३ के मार्च तक M.E. स्कूल को दिया गया था, इस बात
 पर कि स्कूल आमदनी करे और उस में से स्कूल के शिक्षकों
 के तलप आदि के लिये भी होवे । पर १९३२ में आमदनी
 में सब बगान ही में खर्च हुआ । सो १९३३ मार्च को
 इलाका
 आमदनी में यह कहा गया कि बगान को M.E. स्कूल
 खेती करे पर बगान के मही से जो आमदनी होता है
 सो ही भर बगान खेती करने में खर्च होवे, पर जो बगान
 के गाछों से आमदनी होगा सो स्कूल में गुहकों के
 तलप के लिये खर्च होवे । पर मास्टरों ने कहा कि इस
 साल भी बगान का कुल आमदनी बगान खेती करने
 ही में खर्च होवे, जिस्ते बगान सुधारा जावे
 और बहुत आमदनी आवे । इस लिये कहा गया
 कि आखिरी फैसला के लिये C.C. को सौंपा जावे

महाराय,

सो इस बात को आप के जिमे पेश करती
 हों कृपा कर इस के बारे विचार कीजिये ।

आप का आभारकारी

M. Puri:

Burgin Stike chairman

1-5-33.

Church Council
 Received 10-4-33
 Register No. 710.
 Date 10-4-33
 File No. 24
 Reply
 Date

Office Copy

33

सौयुक्त महामान्यवर चर्च कौन्सिल रांची को
 धीशुरहाय ।

बजरिधे हेउ सुप्रवैजर बुधेरान स्कूल रांची ।

विनीत कर्ज रेखा है कि तलब की अल्पता दृष्टी के
 कारण हम लोग बहुत तकलीफें खा पा रहे हैं; इसके
 निम्न कारण हैं :- (१) इस स्कूल के लिये सरकारी ग्रेन्ट दूसरे
 मिडिल स्कूलों से २२) रुपैया कम मिलता है । (२) इस स्कूल
 में शैल कम है जिससे जोस भी कम जाता है । (३) इलाके
 से जैसा सहायता मिलती है वह आप लोगों को मालूम है ।

उपरोक्त कारणों से हम लोगों को लगभग $\frac{1}{2}$ तलब
 मिलता है, जब अन्य स्कूलों के शिक्षकों को आधा या
 आधा से अधिक मिलता है ।

इसलिये सन्निध कर्ज है कि दूसरे मिडिल स्कूलों
 से २२) रुपैया जो सरकारी ग्रेन्ट इस स्कूल के लिये कम
 मिलता है, उसकी प्रती कौन्सिल अपने खजाने से
 कर देवे ताकि हम लोग दूसरे स्कूलों के शिक्षकों
 के बराबर तलब पा सकेंगे ।

आप लोगों के विनीत सेवर,
 किनकेल मिडिल स्कूल के शिक्षकगण,

किनकेल,
 ४-४-२१३३

P. Dungdung.

J. Dhan

J. Kujur

D. K. K.

A. K. K.

D. K. K.

C. K. K.

Memorandum No. 600

10-4-33.

Forwarded to the C. C.

Hd. Supr.

7.2.33

554

2.2.33

20.

6/2/33.

To,

The Board of Trustees

of the Gossner Church Property.

Through the Council of the G.E.L. Church in

Chota Nagpur and Assam, Ranchi.

Dated Ranchi, the 2nd. February, 1933.

Sirs,

I have the honour to bring to your notice that I have a plot of land adjoining the premises of the late Babu Nathan Subarno and north of the G.E.L. Mission compound west of the public municipal latrine. I have been thinking for a very long time of building a house on that plot of land and also applied to the Municipality for permission. I am sorry to say that the municipal authorities refused permission ~~then~~ on the ground that there has been no outlet or a passage to a public road.

I shall be much thankful if you will be so kind as to give me a written permission ~~on the ground~~ to pass through your that part of the compound leading to the latrine road. If you kindly give me this permission I shall put up a gate on my own land opening out towards your compound and then apply to the municipality for permission to build a house, which will then be granted.

In the circumstances, I humbly pray that you will be pleased to grant me the request made above and for which I shall ever remain grateful.

I have the honor to be,

Sir,

Your most obedient servant,

Abha Kumar Nandy
Rainu

Church Council

Received 4.5.33

Register No. 785

Date 3.5.33

File 1 or 29

Reply No.

Date

To

The Secretary

G. E. L Mission Church Council
Ranchi

3-5-33.

Sir,

As we the Students of Technical
School Hostel lay a request under
your kind and favourable consideration

That - I We have no Superintendent
to look after the Hostel.

II The roof of our house is ruined, We

Therefore request you kindly supply us
the necessary things, ^{as} Bamboo, ~~nails~~ and tiles.

We want to repair the roof before 12th May
After 12th May ^{some} boys will go home.

We shall be most thankful for your
Kindness.

We have honour to be

Sir

Yours most obediently.

Technical Hostel boys.

Baboo lane Ranchi.

Monitors

Prabhu Sahay Singh.

Patras Goporo.

Church Council

Received. 1/5/33.

Register No. 227..

Date 1.5.33 बहुजूर

File 17

Reply No.....

Date महाशय,

सेक्रेटरी, लूथेरान चर्च कौंसिल,
रंची।

मर्ज ऐसा है कि आपकी आज्ञा से मैं वर्तमान में. स्टोबिरकेरा में अपना हेडक्वार्टर करके रहता और अपना काम करता हूँ, पर खेद की बात यही है कि यहां भी कोई घर नहीं। जिस तकलीफ के कारण मुझे जड़कुदर छोड़ना पड़ा उससे मैं मुक्त नहीं हूँ। शोच और शोक और आशांति का बड़ा दुःख भोगते हैं।

मण्डली चिन्तित तो है पर कालचक्र के परिवर्तन होते जाने से भाईयों की दशा गिरी हुई है। चाहना तो है पर करनी नहीं होती है। उपाय और बिचार गड़बड़ हो जाते हैं।

तौमी आधा काम तो हो चुका है केवल रुपये ऐसे की बात रही है। काठ, लकड़ी, बांस, के लिये लैसेन्स करना है जिसका खर्च पच्चीस रुपये तक की है।^{और} मैं अपनी ओर से जितना हो सका खर्चा किया,

भाईयों ने भी शक्ति भर परिश्रम किया है पर आगेको
 बनता कुछ नहीं है सिवाय राय बढ़ाना और मांगना।
 मैं दीनताई के साथ साहस और भरोसा के साथ निवेदन
 करता हूँ अपने दुःखित दास की बिन्ती ग्रहण कर
 इच्छा पूरी कीजिये (जहां तक हो सके) और दुःख से
 निस्तार दीजिये। आगे शुभ. थोड़ा लिखना बहुत
 समझना। भाईन्दे हुजूर मालिक हैं।—

रांची
 ता० १-५-३३।

आपका आज्ञाधीन, सेवक
 पाद्री मसीहदास लकड़ा
 लूथेरान चर्च रटोबिरकेरा
 पो० म्मो० पनपोस,
 नगरा।

Chitrah Council

Received 2.5.33

Register No. 785

Date 2.5.33

File 23 of 24 of 25

Reply No.

Date

21/5/33

चर्च कौंसिल के निकट निवेदन पत्र,

महोदयगण,

द्विजता पूर्वक चर्च कौंसिल से अज्ञात है कि भर-
सुगदा इलाका के भाई कहते हैं कि वत के कारण अपने लड़के
लड़कियों को भिड़ल में हाई स्कूल में पढ़ाने में असमर्थ है।
वर्तमान सम्बलपुर जिला स्कूल में तीन लड़के पढ़ते हैं जिनका
सर्वोच्च वर्ग N. M. S. उठाती है। सुनने में आता है कि N. M. S.
अब भरसुगदा को चर्च कौंसिल को लौटा देने पर है। यदि कौंसिल
किसी प्रकार उन विद्यार्थियों को सहायता न करे, तो उनका आगे
पढ़ना बन्द होगी। सो कौंसिल से अज्ञात है कि भरसुगदा
इलाका से हर वरस एक लड़का और एक लड़की जोरसर
लड़की स्कूल और हाई स्कूल में जा लिये जावें। अगर इस
प्रकार न किया जाय तो भविष्य में लौकिक दशा नष्ट सुधरेगी।

इस बड़े उपकार के लिये हम चर्च कौंसिल
को सदा धन्यवाद देने रहेंगे।

Dalit Harasguda
Me 2nd May 1933.

आप लोगों का विश्वसेवक

Rev. Anand Bara.
Daud Bara

Executive Members.

Just after the last meeting of the Fall Council I forwarded to the Rev. Johan Wipps the resolution of the Council on the question of readmission of Br. Julius Wiga & 2 other persons who were Excommunicated. I was also asked by the Council to inquire into the matter whether these people were readmitted by the pastor himself or by some one else & whether the rites given in the Liturgy were used for the purpose. To this inquiry the accompanying reply has come from the pastor.

Without expressing any opinion on this subject, I think it desirable to refer the matter to the Ministerium & then to the joint meeting of the C.C. & the Ministerium next month before the Conference.

I hope you will agree to this as this involves a matter of principle as well as doctrine affecting the "Powers of the Keys."

Agreeing
Y.
9. 3. 33.

The Ex. my
talk on the subject
N. 9/3

The Secretary,

Church Council

Ranchi.

13.3.33

648. महाराज,

6.3.33

3.

आपको योशुसहाय,

Date.....

आगे आप को मै. Council की बैठकी 18-1-33

Memo No 1267-68/33 Dated 23.1.33 और आप की

चिट्ठी No 1264/33 Dated 4/2/33 - का जवाब

जनाताई :- आपके चिट्ठी का जवाब N-2 -

मै. सुना था कि Julius Babu को Council
सजा देना चाही पर जब चाही Daniel Kujar
उनको सजा देना चाहे तो Council के पता
हुआ पर वे उनको सजा में रखे इस संभव
में इलाका आफिस में कोई चिट्ठी पत्री न
मिली और न फुमार लही में पाया गया कि
किन 2 कारणों से ये सजा में रखे गये तो
वहुत ही कठिन हुआ कि इस दशा में इनको
आराधना के पूरी विधी अनुसर गहरा करें।
मै प्रेसिडेन्ट + कमला डिप्टेशन से इस वाक
पूछा (Julius को गहरा करना) तो ऊपर वाला
हुआ कि यह काम इलाका का है।
इलाका मिनिस्टर में यह पाया कि कुलियस मलगा
गिरजा करता, वह कहता द्वारा विवेक अपने को स्वामी
समझता है। वह स्वयंसेवक है। द्वारा गवाह द्वारा साम
पुनर्देखें। और इलाका का एप डी कि ये मरडली
सजा रखे जाय।

वाप कुलियस तिया - पहिले स्थानीय पाद्री के
पास आपा मोर इलाका कि मै. मलगा गिरजा
दिया - और आपा कोई इससे वाव + मय न कहें
हो यह वाव गांव पंच, मरडली पंच + इलाका पंच
की बैठकी में रखी गई, इलाका पंच इसको गहरा
करने को पूरा राय दिई + 22-22-33 को बोरी

आपसना बुलाया गया - जिसमें गांव पंच नखली पंच
और इलाका पंच ने मेजर हाजिर रहे यह निर्जामे
हुआ तब पंच ने बहुत देर के बाद यह विचार हुआ कि
आज ही ग्रहशा होय और तब जुलियाय वाद ने यह
इकतार किया कि मैं समझ सक वावे छोड़ देवाइ
और आगे नये वला उत्साह से काम करेगा -
इस सर सना मजूर किई सो तिलाप का जो ग्रहशा
का विशेष वाव सुनाया गया, और पार्थना
हुई और तब भी शुसहाय बोले और सन्ना
ने उलने साथ हाथ तिलाप और तब निर्जामे
ने ये ववे सन्ना को जनाई गई।

II. Nathaniel + Kushalman ने पहिले
पुरोहित के पास जाये और इकतार किया
कि हम आगे न मलग निर्जामे करेंगे न
लोगो को चलावेगे - इनके विषय इलाका
और राय हुई कि ये ग्रहशा किय जाय तो
निर्जामे उनसे कहा गया कि आप पुन इनके
बाशा उदार हो वे बोले हां - तब 23 गील
पढ़ कर तिलाप का वचन रहे और हाथ मिलाने
और तब पार्थना हुई।

इन तीनों जन का ग्रहशा विशेष मलग
और से हुआ बाशा - मुगला इलाका और
वशा इस समय रेखा थी कि यदि इसे कोई
निरु ग्रहशा न करें तो आगे इ पानि और
गड़वड़ होवे, सो ये काम विशेष ली ले हुआ।

III इस विषय जो वाकद बाब का रिपोर्ट है मया
दिया जाय जिसपर मैं आप का बहुत चन्पवादी
होऊंगा।

Gum/a

6-3-33.

आप का लेपना.
Rev. J. Toffo

The Secretary,

~~13/3/33~~
13/3/33

13.3.33

643

Church Council
Lanchoi.

6.3.33

3

महाराज,

आगे लिखने का बात येही है
कि पाद्री David Kujar 28th Dec-32
को बिना पाद्री के इजाजत गिरजा में
अपनी बेटी की शादी बिदे वह अपने
वही में रजिस्ट्री किया और इलाका
को जोर नही दिया,
11 आगो - महिना हो गया वह
गिरजा आना कित्त कुल छोड़ दिया,
वह स्वयं को खेत देखने को जावापर
गिरजा नही आता न आजी भले से
गिरजा कराहे, ने दूसरों को जो गिरजा
नही आते थे जरूरी लेने शादी
दिया या आप नही दिये, ने गिरजा नही
आते हैं शादी देने को सिर्फ गिरजा में गये।
Gumla
6.3.33.

आप का सेवक
Rev. F. Hoffo

Lutheran National Missionary Society of India

(Affiliated to the National Missionary Society of India)

April 1916

Executive Committee:

Rev. P. Paradesi, B.D., President, Rajahmundry.

.. R. D. P. Augustus, Guntur.

.. John David, Vepery, Madras.

.. P. Visuvanam, Tiruvannamalai.

Mr. J. D. Asirvadam, Secretary & Treasurer.

Kilpauk, Madras.

'Santi Sadan'

Landon's Gardens, Kilpauk,

(Camp) Tranquebar

Madras,

April 11,

1933.

Church Council

Received 15.4.33

Register No. 233

Date 16.4.33

File 2

Reply No.

Date

The Secretary,

The Gossner church,

R a n c h i.

Dear Brother,

We find it very difficult to provide for our growing work in Murwahi and Rewah and in Jharsagudha and though for the past few years we have been trying our utmost to see if the work in Jharsagudha could not be made somewhat ~~an~~ more self-supporting, we now see that so long as Jharsagudha continues to be under the control of the N.M.S., such a policy of self-support cannot be worked out in the near future, and therefore we feel it our duty not to retain responsibility for two fields. I therefore wish to give you notice that by 30th September 1933 (or if you ^{of the N.M.S.} so desire it by the end of the year), the agreement with the Gossner church might be terminated and that you assume responsibility for the work ^{from 1-10-33}. Such of the workers whom you are not able to take over must receive immediate notice ^{of his change}. If you can manage to resume responsibility for the field by the 1st October 1933 it will be a great relief to the N.M.S.

I am writing this in advance so that you may take up this question at the Annual conference. The formal proposal will come to you from the N.M.S. Executive.

I remain, Yours sincerely,

J. D. Asirvadam

Circular.

The Members of the Lutheran N.M.S. Council.

The Financial situation in the N.M.S. continues to be bad and it appears to me that we cannot carry on our work in both the fields un-impaired. The Tamil Church has already proposed that the medical work should be closed down, but if the medical work is closed down, we shall have not missionary in charge of the field. So after having consulting-ed Mr. Mukerji I am compelled to write this letter. Unless the N.M.S. can give us Rs.2000/- per year the work cannot be kept up at the present level and therefore I propose the following minute for your approval.-

"Resolved to recommend to the N.M.S. that in view of the inability of the Luth.N.M.S. to be responsible for both its fields, unless the N.M.S. can continue its usual grant of Rs.2000/- per year which grant alone enabled us to undertake work in two large fields costing us about Rs.10,000/- per year notice be given to the Gossner church that the agreement made between the Lutheran N.M.S. and the N.M.S. on the one hand and the Gossner church on the other be terminated on September 30th, 1933 and that the Gossner church assume responsibility for the work in Tharsegudha field closing down such parts of the work as they are not able to maintain."

Atleast three months' notice should be given to the workers when the negotiations with the Gossner church are brought to an end.

Camp) Lutheran church,
Tranquebar, April 11, 1933.

J. A. Aswavadam

Secretary, Luth. N.M.S.

Lutheran National Missionary Society of India

(Affiliated to the National Missionary Society of India)

April 1916

Executive Committee:

Rev. P. Paradesi, B.D., President, Rajahmundry.

.. R. D. P. Augustus, Guntur.

.. John David, Vepery, Madras.

.. P. Visuvasam, Tiruvannamalai.

Mr. J. D. Asirvadam, Secretary & Treasurer.

Kilpauk, Madras.

'Santi Sadan'

Landon's Gardens, Kilpauk,

(Camp) Tranquebar, Madras, April 11, 1933. 193

My Dear Hurad,

I am distressed to propose to the Luth.N.M.S. ^{ILN/MS} to ~~not~~ ^{enter} enter into negotiations with you re your resuming charge for the ~~work~~ Jharsagudha field. The N.M.S. has been treating ~~it~~ ^{the} ~~the~~ ^{fields} badly during the past two years. Now that Mr. Mukerji is not in the Headquarters Mr. Thomas David and a few others have succeeded in establishing the theory that in the case of the Lutheran ^(Syrian) fields only such amounts should be remitted to the field as are received from the Lutheran contributors. This had lead to the salaries of our workers being in arrears for some two or three months. I succeeded in mitigating the trouble by receiving a loan of Rs.500/-. Out of this I could advance Rs.300/- ~~which~~ ^{50% of the} which covers the ~~work~~ salaries of the Murwahi field for a month and Rs.200/- which covers a little over a monthly bill from Jharsagudha. The situation is becoming chronic and we must cut down our ~~extension~~ expenditure. We were hoping that if Dr. Nallathamby could have run his medical work on selfsupporting lines, the congregational, evangelistic and school & work in the field could ~~be~~ be saved, and with this in view, we made a reduction in the salary for the second half year of 1932 by Rs.50/-. Owing to the fall in income Dr. Nallathamby has been finding this very hard, and this year the Luth. Committee recommended a reduction in his salary by Rs.25/-p.m.

only. Unless Dr. Nallathamby can consent to run his dispensary with practically no grant from the N.M.S. we cannot find the money for the work, and if Dr. Nallathamby is unable to carry on his work in Jharsagudha we cannot have a missionary to be in charge of the field and we feel that without proper supervision, it is better not to continue to hold any responsibility for the field. When we ~~first~~ cannot provide sufficient supervision we feel that the ^{responsibility} supervision should be entrusted to the Gossner church.

I do realise that it is a great pity that we should add to your burden at a time when you are least able to bear it. Let us make this a subject of prayer. If the Lord wants us to continue in the field, he will touch the hearts of the N.M.S. people so that they may now make up ~~up~~ their minds not to let the work suffer, but if they cannot do so then the workers I feel sure will gladly make sacrifices if they are under the control of the Gossner church and probably carry on their work on half salaries which they will not do under the N.M.S. The N.M.S. itself is not willing to make any such proposal to the workers so far as they are under its control. The utmost they have ~~done~~ now done to cut down their salaries by 10 per cent only.

Once more I wish to tell you how much I regret the present situation. For many years the Jharsagudha work has been dear to me and we were proud of the work that our missionaries and our workers did in the field. It was appreciated not only

within the Lutheran church but also by all friends of the N.M.S. but our growing responsibility for Murwahi work makes it absolutely necessary for us to seek another arrangement. As no internal readjustments are now possible I feel it my duty in consultation with Mr. Mukerji to make a drastic proposal which for many years I have sought to avoid. Earnestly trusting that the every living God will turn even this situation to His Glory.

I remain,

Yours sincerely,

J. A. Aswadani

Lutheran National Missionary Society of India

(Affiliated to the National Missionary Society of India)

Executive Committee:

Rev. P. Paradesi, B.D., President, Rajahmundry.
.. R. D. P. Augustus, Guntur.
.. John David, Vepery, Madras.
.. P. Visuvasam, Tiruvannamalai.
Mr. J. D. Asirvadam, Secretary & Treasurer,
Kilpauk, Madras.

Church Council April 1916
Received... 6/4/33
Register No. 688
Date... 29/3/33
File... 57
Reply No.....

'Santi Sadan'

Landon's Gardens, Kilpauk,

Madras, 29th March 1933.

My dear Hurad,

You do not know what a terrible time we are having in the N.M.S. and we have absolutely no money for any extra needs. I do not what a journey to Ranchi would cost and if I know it I may be able to ~~recommend it~~ *find out if a post bit at least can be sanctioned.* Even if I recommend it, money will not be ready for three months, because several of our bills are pending. At present, the salaries and the recurring expenditure only are sanctioned and that too after two months or so and any extra item is never paid. It is because we send our money to the NMS and have no control over them that we are in this awful predicament. If we press for a payment, the NMS turns round and says that we could take entire responsibility for paying the money month after month and that ~~there~~ they are prepared to give us autonomy on that basis. It is no pleasure to me that Jarsagudah is un-represented at the Ranchi Conference, but really Jharsagudah is only an adjunct and you do not control the work as ~~xx~~ *you* do in the other elakkas and their absence will not prevent your getting special powers that you refer to from the representatives of the elakkas that you refer to. If again this year our pastor does not go to Ranchi, you may tell them that ~~that~~ *it is* not non-cooperation, but it is sheer inability to get any money for this purpose from the NMS Executive. The Andhra Church has let us down a great deal. We ~~get~~ *had* over Rs.4,000 from them and we just get 50%. Excepting the TELC, all other organizations have paid much below the stipulated amount and the Gossner Church does not send any contribution. I would suggest that you pay out of your contribution Rs.20 to Pastor Bara for ^{his} travelling and remit to us the balance.

Encl:

Yours sincerely,

J. D. Asirvadam

Church Council

Received.. 11/4/33

Register No. 715

Date..... 8.4.33

File..... 1

Reply No. 6

Date.....

~~11/4/33~~
11/4/33.

निकोलस मुंजनी का दरखास्त पढ़ा गया जिसमें वे लूथेरान मंडली में लिये जाने को अर्ज करते हैं। इसके विषय बातचीत और वर्क विवर्क करने के बाद फैसला किया गया कि —

संकल्प — (a) ला. नि. को. ल. स. मुंजनी का दरखास्त चेम्बर मैर की मंजूरी के साथ मंजूर किया गया और निकोलस मुंजनी हमारी मंडली में गृह्य किया जाय।

(b) उपरोक्त संकल्प चर्च कौन्सिल को जल्दी के लिये भेजा दिया जाय

To

Mr. P. Hurad

Secretary C.C.

The Copy of the resolution of the Ranchi Mandli Parish regarding Mr. N. Munzani is hereby forwarded to the Secretary C.C. for information.

J. S. P. P.

8/4/33.

Secretary Ranchi
Mandli Parish.

जनाब जुधेराम चार्चकौंसिल मोन्नाम रांची.

मार्जित. पाप्री एम. डेहन साहिब " " ता. 3-8-33.

महामान्यवर महाराज,

चार्चकौंसिल को मेरी ओर से धीबुसहाय ।

मैं आप को इर्दिग चन्नाबाद कारला हूँ कि आपने अपनी दया से मुझ बेचारे को फिरसे काम में बाहुल किया ।

मैं आप से दीन्ताई के साथ यह भी बित्ती करता हूँ, कि कृपा करके आप को प्रेम के नगर में "पैसा के गड़बड़" सम्बन्धी बात भी रखी जाकर फिर से एक बेर जान्चकीजिये और निमूलिरिवत बातों के विषय, मेरी ओर से, कुछ तकलीफ उठाकर प्रेम से सुन लीजिये और यदि बने तो उन बातों में, जिनमें मेरा सोच सन्तोषजनक न्याय नहीं पारहा है, मेरी सहायता कीजिये कि मैं भी उन बातों को न्यायसंयुक्त ही समझकर अपना विवेक को साफ रखने और आनन्द के साथ आप को अच्छी तरह पुरुष की सेवा करने लूँ - इसाने :-

१:- A.B. के समय में, एकाही दर्जे के कजिदातों के तलप स्कूल में क्योकर दुगुरा। अन्तर किया गया, कि अमेरिकन पादरियों के तैयारी कजिदात पुराने मिशनरियों के तैयारी कजिदातों से दुना तलप पावे। इसके सम्बन्ध में कृपा कर पाप्री मनमसीह लुगुन को वो पाप्री खुस्तवाल्या रा। में रा। को भी पूछिये, कि पद पाते को पहिले जब वे स्कूल में काम करते थे, तब मन में कैसा दुःख पाते थे।

२:- इस तलप की बिभिन्नता के समय, मेरा तलप १५) रुपैया था और सैना की बन्दोवस्ती से जब आमदनी बढ़ गई, तो खुदीटोली इलाकाने सब पाप्री और प्रचारकों की तलप की वृद्धि करते हुए मेरा भी महिना २०) रुपैया कर दिया। तौभी A.B. के ६हराये हुए स्कूलानुसार मेरे सर्मोस के दिन का कुछ मोल नहीं था। पर तौभी मैं बेचारा A.B. के अच्छी न काम करने के कारण A.B. को अरजी करने का कोई दाव ही नहीं पाया, कि यह अन्याय दूर किया जाता।
अप्रीमदी में स्कूल का चार्ज लेते ही सन १९२५ ईस्वी के जनवरी महिना में, मैं ने A.B. को लिखा कि मेरा तलप न्यायसंयुक्त नहीं है। उस समय A.B. डेढ़ बरस के बाद मुझको लिखा कि आप का सुहर तलप महिना २०) रुपैया है। और प्रति तीन साला बढ़ती २) रुपैया है, और इस हिसाब से

पावे। इसको सम्बन्ध न...

भी पूछिये, कि पद पाते के पहिले जब वे स्कूल में काम करते थे, तब मन में कौसा दुःख पाता...

२:- इस तलप की विभिन्नता के समय, मेरा तलप १५) रुपैया था और सैना जी बन्दोवस्ती से जब आमदनी बढ़ गई, तो खुदीखोली इलाक़ाने सब पाप्री और प्रचाणों की तलप की वृद्धि करते हुए मेरा भी महिना २०) रुपैया कर दिया। तौभी A.B. के बहराये हुए स्कोलानुसार मेरे सरभौस के दिन का कुछ मोल नहीं था। पर तौभी मैं बेवारा A.B. के अच्छीन न काम करने के कारण A.B. को जरजी करने का कोई दाव ही नहीं पाया, कि यह अन्याय दूर किया जाता।
जारीमदी में स्कूल का चार्ज लेते ही सन १९२५ ईस्वी के जनवरी महिना में, मैं ने A.B. को लिखा कि मेरा तलप न्यायसंयुक्त नहीं है। उस समय A.B. डेढ़ बरस के बाद मुझको लिखा कि आप का सुरु तलप महिना २०) रुपैया है। और प्रति तीन साला बढ़ती २) रुपैया है, और इस हिसाब से आप के १३ बरस के सरभौस के लिये ३) रुपैया वृद्धि का सरिफ़ आप को करते हैं। सो आप को महिना २३) रुपैया बेतन के लिये *entitled* करते हैं, पर बढ़ती रुपैया-आप इलाक़ा से मांगिये"। जों कि *definite contribution* इलाक़ा को सब से दिया जाता है। इसके सम्बन्ध में आप लोग गुपा कर पाप्री *Wattner* साहेब को पूछ सक्ते हैं। महाशय मैं नहीं समझ सक्ता हूं कि जोंकर औरों को स्कूल से और मुझ बेवारे को मंडली से बढ़ती मिले।

३:- मैं नहीं समझने सका कि मैं जो जोंसिल का मादमी होकर जोंसिल के द्वारा A.B. के काम करने को जारीमदी भेजा गया था - जोंकर इलाक़ा जारीमदी ने अपने निज अधिकार मुझको स्कूल को काम से निवाला कर उसी छड़ी एजण्ट को काम सौंपा और ऐसा बेहजान काम से जोंसिल का अधिकार छीन लिया कि मैं जान नहीं सका था कि मेरा मालिक कौन है महाशय इन सब बातों पर नजर कर मेरे ऊपर क्या का हुकूम करमाइये। माइये हज़ूर मालिक है

आप के आ डाचीन-

जोसल बाबू

रांची ३-४-३३।

Report on the settlement
of properties for income in Central Fund by
the deputation consisting of Messrs. Purbi & Hurain.

मान्यवर चर्च कौंसिल को मालूम होवे कि हम दो जन शक्ति ओ गोविन्दपुर
इलाके की जमीन जहाजों को बचावस्त काल के लिये निपूत रहने से हुओं
ने किया उसका सविस्तर रिपोर्ट यह है —

अर्थात् — गोविन्दपुर इलाके में खास गोविन्दपुर
में जमीन दोका में लगाया गया

१३०)

कौंसिल के मन्तव्य ।

इलाकों का पूरा स्वपालन ।

कौंसिल में स्वपालन को अधिक दृढ़ाने के विषय में बहुत सोच विचार किया गया क्योंकि कौंसिल पास्टरों को मदद करने के लिये इलाकों को ग्रेन्ट देती आई और यह मदद विदेश के रुपयों से हो सका। पर जब अब ६ महीनों से विदेश से रुपैया पाना बन्द है और उस पर आशा रखना भी बुद्धिमानी नहीं है तो उचित है कि कौंसिल अब सब इलाकों को यह स्पष्ट रूप से जानती दे देवे कि सब इलाकायें अपनी २ मंडली के सब कामों को निज आमदनी से चलाने अर्थात् पूरा स्वपालन करने की चिन्ता करें सो आत्मशासन और आत्मपालन जिस्तें एक साथ समान जवाबदारी में चलाया जावे यह संकल्प किया गया :

संकल्प :—कि कलौसा के सब इलाकायों को कौंसिल विदेश से रुपैया खोज कर मदद देने में असमर्थ है इसलिये यह विशेष सूचना सब इलाकायों को दी जाती है कि वे अपने इलाके के भीतर के सब कामों को चलाने के खर्च का पूरा भार आप लेवें ।

तलब काटना नहीं पर बांटना ।

कार्यकारक सभा में कम खर्च करने के अभिप्राय से ऐसी बातचीत हुई । जिस्तें मंडली के कामों के खर्च कम किये जाए उचित है कि कुछ विभाग के काम घटाये जावें और तलब भी ऐसा काटा जावे कि तलब की संख्या शैकड़े के किसी दर पर कम किई जाए । रिटर्नमेंट के येही दो उपाय हैं । प्रस्ताव हुआ कि तलब से शैकड़े १०) करके काटा जाय जैसा सरकारी विभागों में भी हुआ है । पर बादानुवाद में यह निकल आया कि यदि शैकड़े १०) काटा जाय तो उसका अर्थ है कि शैकड़े ९०) देने की निश्चयता कर्मचारियों को होवे । पर क्या ऐसी निश्चयता दीई जा सकती है ? कहा गया कि अभी मंडली शैकड़े ९०) देने की भी प्रतिज्ञा नहीं दे सकती है इस लिये शैकड़े १०) काटने की बात छोड़ी जाए परन्तु जितने रुपये कौंसिल में आवेंगे उनको जहां २ देना है वह अनुपात में करके विभागों में बांटा जाए ।

विभाग के कामों को कम करने की बात अभी छोड़ दीई गई पर विभागों में जहां २ उचित से अधिक पैसे खर्च होते हैं उन २ विषयों के खर्चों को घटाने का विचार स्थिर हुआ । इस लिये संकल्प यह हुआ—

संकल्प : (क) कि भविष्यत में जितनी आमदनी कौंसिल के हाथ में आवेगी उतनी आमदनी के रुपये प्रत्येक संस्था और विभागों में अनुपात करके बांटे जावें ।

(ख) कि विभागों और संस्थाओं में जहां जिन कामों में उचित से अधिक खर्च हो वे सब से कम किये जाए कि काम चल सके ।

स्कूलों का खर्च ।

आत्मशासित मंडली को पूरा आत्म-पालित बनना चाहिये इसलिये इलाके के स्कूल भी इलाकों के जीम्मा में कर दिये जाए अर्थात् उनके खर्च के लिये भी इलाकायें चिन्ता करें । जहां मिडल स्कूल हैं वहां इलाकों को कुछ अधिक भार होगा पर तौभी जहां २ सरकारी ग्रांट अच्छा है वहां खर्च का भार प्रायः कुछ हल्का होता है । स्कूल विशेष कर इलाके की भलाई के लिये हैं इसलिये इलाका खर्च के लिये जवाबदारी रहें । फिर कि मंडली विभाग और स्कूल विभाग भविष्यत में दो नहीं पर एक ही प्रकार के काम समझे जावें और कि दोनों विभाग के कामों में पूर्ण सहयोग होवे यह उचित समझा गया कि पास्तरीय काम और स्कूल काम के लोग मंडली पंचों में रहें और खर्च बर्च का भार परस्पर उठाने की तैयार होवें सो यह संकल्प हुआ :—

संकल्प : (क) जिस्तें इलाकायें अपने भीतर के स्कूलों को चलाने की पूरी जवाबदारी जानें इसलिये उनके खर्च का भार भी उठावें । इसलिये सरकारी ग्रेन्ट और स्कूल फीसों को जोड़कर जो घाटा स्कूल खर्च में होवे उसको इलाका अपनी आमदनी से देने का परिश्रम करे अर्थात् इलाके की जितनी आमदनी किसी महीने में होगी वह आमदनी मंडली कर्मचारियों के तलब की संख्या और स्कूल के घाटा (deficit) की संख्या में अनुपात (proportion) करके बांटी जाए ।

(ख) कि मंडली और शिक्षा विभाग के सब कर्मचारी मंडली की आमदनी बढ़ाने के लिये एक चित होकर एक संग परिश्रम करें ।

सेन्ट्रलैज [एकत्रित] करना ।

वर्च कौंसिल को यह अधिक से अधिक स्पष्ट मालुम होता गया है कि जब तक इलाके भर की आमदनी इलाके के खजाने में जमा वा एकत्रित नहीं होगी तब तक स्वपालन में सफलता नहीं होगी । यदि प्रचारकपन अपना खजाना आप ही रखे और खर्च करे और वेसे ही पेरिश भी करे तो कर्मचारियों के तलब, स्कूल के खर्च और घर मरम्मत तथा गरौबों की सहायता, मिशनरी काम के लिये देना और कौंसिल के लिये देना अनहोनी हो जायगा क्योंकि कौंसिल की आमदनी केवल इलाकों से हो सकती है इसलिये कौंसिल के सेन्ट्रल फंड के लिये भी देना पड़ेगा । सो यह स्थिर हुआ—

संकल्प : कि जिस्तें स्वपालन का काम इलाकों में सफलतापूर्वक चलाया जा सके यह अधिक से अधिक उचित है कि इलाके भर की सब प्रकार की आमदनी इलाके के खजाने में जमा किई जाए और वहाँ से खर्च बर्च का विचार किया जाके खर्च बांटा जाए ॥

स्वपालन की पूरी दायित्व ।

चर्च कौंसिल की सूचना ।

सब पियारे भाई और बहिनों को और सब पादरियों और अन्य
कर्मचारियों और पंचों को यीशुसहाय !

आप सभी को मालूम होवे कि जगत की आर्थिक दुर्दशा से हमारी मंडली भी नहीं बच सकी है और अभी जगत की सब जाति और संस्था अपने कामों को आप ही करने और अपने को सम्भालने के लिये आप ही चिन्ता करते हैं वैसे ही उचित हुआ है कि हम लोग भी अपने क़ोटानागपुर और आशाम की लूथरान मंडली का खर्च बर्च अपनी ही आमदनी से चलावें और सम्भालें। वर्तमान में जो कठिनाईयाँ आ पड़ी हैं उनको दूर करने के लिये चर्च कौंसिल ने बहुत यत्न किया कि जर्मनी से यदि अभी पाने की आशा नहीं है तो अमेरिका से ऋण भी लेवें अथवा सहायता पावें। वैसेही हिन्दूस्तान की अन्य मंडलियाँ और मिशनरी तथा भारत लूथरान सम्मेलन द्वारा सहायता पाने की चेष्टा भी किई गई परन्तु हमारा ऐसा परिश्रम विफल हुआ ! फिर ऋण पैचा लेकर बहुत समय तक काम चलाना अनहोना है।

कलीसा की आमदनी कलीसा की मंडलियों के द्वारा ही हो सकती है। जब तक मंडलियाँ अर्थात् मंडलियों के भाई बहिन, पाद्री, कर्मचारी और पंच एक संग जोर नहीं देंगे तब तक भार उठाना कुछ कठिन दिखाई देता है। पर कौंसिल ने हिसाब कर देखा है कि अधिकांश इलाकायें अपना देन कुछ और बढ़ा दें तो स्वपालन हम लोग अच्छी रीति से कर सकेंगे। सच है कि सब इलाकाओं की दशा एक समान नहीं है इसलिये कौंसिल देखेगी कि किस इलाके की सहायता की आवश्यकता होगी। जित्नी कलीसिया के इलाकों के काम भली भाँति चलाये जावें अवश्य है कि कौंसिल का मध्य [सेन्ट्रल] खजाना भी दृढ़ किया जाए जित्नी कौंसिल ऐसे कामों को जो एक इलाके से नहीं पर सब मंडलियों से सम्बन्ध रखते हैं सम्भाल सके।

क़ोटानागपुर के लूथरान मंडली की बड़ाई और गौरव उसकी दरिद्रता पर है जिस दरिद्रता के द्वारा ईश्वर पर विश्वास, भरोसा और प्रार्थना करने की वह उसकाई और चलाई जाती है। हमारी दरिद्रता में ईश्वर का सामर्थ्य सिद्ध होता है। हम सब कोई आपस्वार्थपना भूल जाने को चलाये जाते हैं। पहिले ईश्वर के लिये तब दूसरों के लिये और अन्त में अपने लिये चिन्ता करें ऐसे आत्मबलिदान की आवश्यकता आ पड़ी है। जिसका ऐसा विश्वास कार्यकारी हो तो वह धन्य है।

सोचिये तो यदि हम अपनी कलीसिया के सब कामों को गिरने दें, यदि हाई स्कूल अन्य स्कूल, सेमिनेरी, अस्पताल इत्यादि बन्द होवें, यदि हमारे धर्म के सेवक अर्थात् पाद्री लोग खर्च की कमी से काम क़ोड़ दें तो क्या इससे हमारी भलाई होगी ? क्या यह हमें भला लगेगा ? कभी नहीं। इसलिये बहुत अवश्य हुआ है कि कलीसिया को एक घर मान कर उसके सब काम काजों को सम्भालने में अधिक चिन्तित होवें। आप लोगों से सामर्थ्य से बाहर नहीं मांगा जाता है। आप अपने सामर्थ्य भर दीजिये। समुची मंडली की आमदनी को जोड़ कर प्रति जन पर औसत निकालने से देखा गया है कि हम लोग प्रति दृढ़ीकृत जन के हिसाब से बहुत कम देते हैं। दूसरी मंडलियों के हिसाबों को देखने से पाया जाता है वे हम से अधिक देते हैं। इसलिये विशेष प्रार्थना है कि आप लोग सब कोई अपना देन कुछ अधिक बढ़ावें और निश्चय है प्रभु परमेश्वर हमारे दानों को बलिदान के सुगन्ध सा ग्रहण कर हमों को और आशीष देगा।

आगे हम आप लोगों के साम्हने कौंसिल के विचार प्रगट कर रखने चाहते हैं जित्नी आप समझ सकें कि कौंसिल इस समय खर्च बर्च के सम्बन्ध में क्या कर रही है और आप लोगों से क्या चाहती है। कौंसिल के इन सन्तव्यों से आप लोगों से विशेष प्रार्थना है कि आप लोग सब कोई कौंसिल के संग स्वपालन के भार को उठाने में मिल जावें जित्नी हम सब एक संग एक मन एक चित होकर मंडली को सम्भालें और ईश्वर की महिमा प्रगट करें। जनवरी २९३१ से सब इलाकों की स्वपालन का भार सौंपा जाता है।

Church Council Office
Ranchi.
22 December 1931.

P. HURAD,
Secretary.

THE BOARD OF TRUSTEES OF THE GOSSNER
(G. E. L.) CHURCH PROPERTY.

6 MAR 1933

Secretary & Manager,

D. M. PANNA, Esqr., B. A.,
Deputy Magistrate & Deputy Collector,
RANCHI. Purulia, Manbhum.

Purulia, Ranchi, 3rd March 1933

No. 53/33.

Church Council

Received.. 6.3.33

Register No. 62/P.

Date.... 3.3.33

File.... 30'

Copy No....

Note....

Hurad, Esqr.,
Secretary, G. E. L. Church,
Ranchi.

Dear Sir,

Your letter No.1362 /33 /F.30 dated 1.3.1933.

The post card from the Pastor of Kinkel regarding the payment of Survey and Settlement costs is self-explanatory. It requests the Church Council to pay them. The Trustees have agreed to pay the S. & S. costs in case the Ilakas failed to find ready money to pay them, and the arrangement was that the Trustees paid the costs and took the records of rights from the Settlement office and reimbursed the amounts paid from the Ilakas concerned. The pastor of Kinkel does not say whether the Ilaka has any money to pay the costs. He says that as the Church Council has taken all the Church's landed property in its own hands, it should pay the costs. The argument of the pastor that the body which enjoys the profits of the lands should also pay for their costs is sound. So the Church Council should pay the S. & S. costs. You know the Trustees have no money in their hands, and whatever money they had which could have been used for the payment of the S. & S. costs has been taken by the Church Council. However I am writing to the Assistant Settlement Officer of the Recovery Camp to bring the parchas of Kinkel and Karamdih to Ranchi where I shall arrange to take delivery of them on payment of the S. & S. costs either by borrowing money or by asking the Church Council to pay them.

2. Para 2 of your letter. I shall be at Ranchi on the 13th and 14th March. On any of these two days a meeting of the Executive the Board of Trustees can be arranged for.

The Board of Trustees have no funds to depute any of the members to the Ganges valley, and in my opinion it will be all But if the Council Executive thinks otherwise, the Trustees give permission to any of its members, who may also be a member of the Board of Trustees, to go to the Ganges valley and dispose of the property that may be disposed of.

Yours sincerely,

D. M. Panna

A G E N D A .

for the meeting of the Executive of the Church Council of
The G.E.L. Church, from 26th. June, 1933.

-----oOo-----

1. Prayer.
2. Roll-Call.
3. Last.Minutes.

I. Church Department.

1. Applications for Seminary -(i) Paulus Tiru (ii) Emmanuel Manki (iii) Mansidh Manki (iv) Eliazer Kindo.
2. Gossner Representative in Federation Executive and also in Young People's Committee.
3. Takarma's request - for another pastor.
4. Retreats for pastors and other church workers - President Bihar and Orissa Christian Council.
5. Baptism of Lutheran children by Anglican pastor at Ithe.
6. Shepherding of Mourbhanj Christians.- letter of Rev: P. Tirkey.
7. Pryce's letter on Rural Reconstruction.
8. Rev: Masihdas Topono for pension.
9. Khristochit Kujur's application - also for Assam.
10. Materials for Sunday School Notes.
11. Rev: P.S. Kachchhap's application and Purulia Resolution.
12. Augustus Lakra's application for reception in Lutheran Church.

II. Education Department.

1. Transfer of Primary Schools to District Board.
2. Transfer Bills of Rev: J.J.P. Tiga and P.S. Bhengra.
3. Marshal Topono's application for teachership.
4. Kinkel resolution regarding support of their M.E. School.

III. Property Department.

1. Board of Trustees' Notice to submit accounts.
2. Rent of Takarma property.

IV. Miscellaneous.

1. The Monsoon Meeting of pastors.
2. The next Church Council meeting.

Reon

Bhramar

Secretary,
G. E. L. Church.

Ranchi.
The 26th. June, 1933

जस जहाँ मैं देश विदेश भेजा गया, वहाँ मैं बिना हज़ूर गया।
 सो यदि इस समय की चर्च कौंसिल में जाइये जाना बहुत ही
 दरकार समय की कौट चाहती है कि मैं जाइये जाऊँ तो मैं
 बखुशी जाइये जाने को तैयार हूँ। केवल एक बात यह कि
 चर्च कौंसिल हमारे लिये चिन्ता न करे। इस पर सेक्रेटे-
 री साहब ने मुझ से कहे कि कौंसिल विश्वय व्याप की चि-
 न्ता न करेगी। इस बात पर मैं बिश्वास किया क्योंकि चर्च-
 कौंसिल का कोटिबद्ध होने ने बोले, कौट कि हम सब बि-
 श्वास के धारने के हैं।

रसे प्रतिज्ञा - ता: २२ मई १९३१ को संकल्प (ग) और (ड) में हो
जिस जानकर यहां नहीं है।

इसी प्रतिज्ञा २५ फरवरी १९३२ को पिट्टी जिसे ९०० का सेक्रेटरी
जिम्स डिलर को दिये जिस का नामल Miss Miller में
पास थे जो, इसका नामल भी यहां नहीं है।

चर्च जॉर्जिसल से सविनय मेरी ~~न~~ नज्जी है कि कृपाया
मेरी नज्जियों पर फिर से गौर किया जाय, क्योंकि हम बहु-
तही दुःख में फंसे हुए हैं।

ता: ६-३-३३, ९.९. ला संवत्स्य है कि हनको जो प्रतिज्ञा मिली सो खजाना की दशा के अनुसार थी।

इस पर मेश करना है कि प्रतिज्ञा दशा के अनुसार नहीं की, पर प्रतिज्ञा अवश्यता के अनुसार की, क्योंकि इस समय खजाना को दशा वैसी नहीं की वह उदारता से खर्च कर सके।

इसरी बात १९३२ में जो तलब उनको दिया गया सो नौद
कलाकों के पादियों की कपेदा कच्छा था।

इस पर घेरा कहना है कि १८३२ में दूसरे इलाकों के पाद्री
यों को उन की कामदनी के अनुसार मिला, न किसी-
प्रतिज्ञा के अनुसार, किसी को कम किसी को ज्यादा जैसा
पुस्तिका इलाकाही में १८३२ के जनुवरी से मई पांच माह
के ^{पुस्तिका के} ~~कानून~~ पाद्री को माहवार २७॥) साढ़े सत्ताइस रुपये माह
हिसाब से पांच माह का जमा १३७॥) एक सौ साढ़े सैंतिस रुपये।

मिला, जब इसी पांच माह के कन्दर मुझे कुल जमा-
तनखा मिला केवल कठहल (७८) रुपैया सो इस पांच
माह के कन्दर पुरुलिया पाद्री की अपेक्षा मुझे ५२॥) साढ़े-
कोन सठ रुपैया कम मिला, तो मुझको कौरो की अपेक्षा कैसे
कान्ही तनखा मिली ?
मैं तो माहवारी २७ रुपैया के दर से दिसम्बर बताया कि
१९३२ के जुलै की से मई पांच माह का कुल मिलना चाहिये
रु. सो ^{मैं तिस} ~~तेरह~~ रुपैया (२५) रु. तिस पर ९९ से मिला
केवल (७८) रु. कठहल रुपैया
पांच माह के कन्दर बाकी ५७ रु. कौरो
१९३१ के दिसम्बर का बाकी ३ रु.
कुल बाकी ६० रु.

इस प्रकार ९९ की प्रतिज्ञा अनुसार १९३१ के जून से १९३२ के
मई तक रु. वर्ष का बाकी तनखा ६० साठ रुपैया मुझ
पाना है ।

मेरी कर्ज है कि विशेष कर इस बात पर ध्यान दिया
जाय कि कौन्सिल मुझ को विशेष समय के लिये विशेष
स्थान में ~~मे~~ मेजी जहाँ के लिये उस समय कौरो दूसरे
पाद्री नहीं मिल सकते थे, जहाँ पर दूसरे पाद्रीयों के
समान हमारा चास बास नहीं है ।

हमारे घर भाड़ा के विषय में : —

इस बात के लिये ९९ की प्रतिज्ञा अनुसार १९३१ के जून से
१९३२ मई तक १२ महिना पूरा मिला । बाद इस के हमारे
घर भाड़ा का मार ९९ ने पुरुलिया इलाका को दिया
परंतु इलाका इस विषय पर न लेके ये जवाब दिया कि-

नकाब — इलाका मिटिंग ता: ७वीं नोवम्बर १९३२
४ वा. संकल्प Rev. P. S. Kachhha बाबू के घर भाड़ा विषय
कक्ष बाबू कपने रहने के घर का बन्दोबस्त जाप होकर लेते
P. C. Purnia

J. Chairman

4/1/33.

सो मैं घर भाड़ा के विषय की कपनी कर्जियों में के द्वारा
९९ को बताते जाया- १९३३ के १२ जुलै कौरो १२ अप्रैल

को भी 'नज्जी' में ९.९ को बनाया है जिसे १५३२ के जून से १५३३ के अप्रैल तक ११ महीना का घर भाड़ा हमको ३३) रु. देना है, जिस पर नौंसिल से ता: ६- मार्च १५३३ ई को ९.९ में संवल्य हुआ है (ग) जिसे पाट्टी लक्ष्य का घर ~~मर~~ किराया बीते ३ महीनों का नौंसिल देगी।
 सो बाकी ८ माह का घर भाड़ा २४) रुपैया घरवाले को कहां से हम पूरा कर देंगे? घरवाला हम को बार २ तगादा करता रहता है।

हम ने चर्च नौंसिल से पाने की क़ाशा से बीते समय बिमर दुख और संकट के समय प्रप: ८०) क़रा किया, यदि यह हमारा बाकी बेतन और घर भाड़ा न मिले तो हम मविच्छत में क़रीब सिर उठा नहीं सकेंगे सदा इसी क़था के नीचे दबे रहेंगे और हमारे लड़के बच्चे भी क़रीब इसी नहीं पा सकेंगे।

सो चर्च नौंसिल से सबिनय हमारी नज्जी है कि क़पाया हमारा बाकी तनख़ा ६०) और ११ माह का घर भाड़ा ३३) रुपैया जमा ९३) तीरानबे रुपैया हम को मिले जिससे हम सब क़रा पैचा और घर भाड़ा को चुकाने कांत मन से क़पना काम कर सकें।

मविच्छ में हमारे ^{जीविक्का के} लिये प्रबन्ध के विषय में:—

हमारे जीविक्का के विषय ता: २२ जून १५३२. ९.९ के संवल्य में है कि "नौंसिल का मदद रुपैया जितना नौंसिल दे सकेगी सो सीधे मुहलिया में इलाक़े कोषिज़ा में भेजा जाय जिसमें इलाक़ा समूची मंडली की क़ामदनी से दोनों पाट्टियों को समभाग में तलब बांटे।

इस प्रतिज्ञा के अनुसार १५३२ के जून से क़ाबू तक पांच माह का माहवारी १२) रुपैया के हिसाब से ६०) रुपैया ९.९ को क़ोद से मुहलिया इलाक़ा को मिला, इस के बाद इलाक़ा को इस विषय ९.९ की क़ोद से नहीं मिला है।

सो इलाक़ा में जो क़ामदनी होती है इससे हम दोनों पाट्टियों को मिलता है, पर इलाक़ा ९.९ की प्रतिज्ञा को क़रा कर

८.८. से जाने की आज्ञा रखती है ।

मौंसिल को स्मरण दिलाता हूँ कि जारगो पेरिश में पोरोहिजाई काम बन्द होने के कारण से १८३१ में ब्रिताने लुचेरान ८.११.५. में चले गये, १८३१ के जून से पोरोहिजा के जारगो जाने से ~~वहाँ~~ वहाँ की मंडली बर्बाद गई, और इस साल ८.११.५. से एक घराने हमारी लुचेरान मंडली में लौट आये हैं, और आज्ञा है कि ईश्वर की सहायता से और भी लौटेंगे ।

जारगो पेरिश की लौकीक दशा मंडली पालन के विषय में : — जारगो पेरिश की दशा — इस पेरिश में कई एक गांव ऐसे हैं जि-स में केवल १. २. ३ घर खड़े हैं और वे दूर गांव हैं जहां पास्टर को जाना पड़ता है, और वहां जाने जाने में ज्यादा खर्च होता है पर कामदनी कम, केवल दो गांव में कुछ ज्यादा लोग हैं उन में भी केवल एक प्रचारकपन से कुछ कामदनी होती है । वास्तविक में जारगो पेरिश आपने निज कामदनी से आपने पास्टर को परवरिश नहीं कर सकेगी यदि इस को दूसरी ओर से मदद न मिले ।

वर्तमान प्रबन्ध के अनुसार कि इलाका में जो कामदनी हो उसी से समभाग कर दोनों पाद्री का पोषण होने से हमारे लिये नफे की कमी है, क्योंकि जारगो पेरिश में हमारा चास बास न किसी और दूसरे कामदनी ^{की} ~~के~~ आज्ञा नहीं है, हमों को खाना कपड़ा सुख सुख के खर्च का दरकार है इस से अधिक जारगो में हमारे बालकों की शिक्षा का उपाय नहीं है सो हमारे बालकों को इनकी शिक्षा के लिये नहीं दूसरे जगह भेजना ही पड़ेगा, तो इस हिसब से ये सब खर्च हम कहां से पावेंगे ? और यदि हम नए आपने बालकों को न पका सकें तो भविष्य में हम उन के कैसे चिन्ता का कारण करेंगे ? और हमारे लड़के भी सदा के लिये बर्बाद होंगे ।

सो इन सब विषयों पर कृपया चर्च मौंसिल और कर जो उचित और आवश्यक है इस के अनुसार ८.८. से सुप्रबन्ध किया जाय, इस विषय पुस्तिका इलाका का भी जो मतलब है, जो मौंसिल में भी पेश है, जिस का नकल किसी काजी में नहीं है इस पर भी ध्यान दिया जाय ।

भविष्य में हमारे रहने के देश के विषय : —

इस विषय में हम बहुत ही दुःख उठाने हुए आ रहे हैं जिस की चर्चा में बीते वर्षात से इलाका और ८.८. के सामने करना आ रहा है, पर अधिक दुःख की बात है

(६)

कि आज लों हमारे इस दुःख को देखने के लिये कोई
नहीं पहुँचे हैं।

बीते १३-४-३३ की कानून में मैंने ९९ को बताया कि हमें
इसी महिला के कानून में मिश्रण का वर्तमान देश छोड़ना
पड़ेगा। जो ९९ से सम्बन्धित कानून है कि कितना जल्दी
हो सके हमारे देश का बन्दोबस्त ९९ से किया जाय,
जिससे हम कानून के बालकों साथ इस धूप, धुंध बनास,
कौन भड़क वर्षा में इस घर पर आशा है सबके कौन शान्ति
पावें। आगे बढ़ें।

प्रभु में आप का सेवक

Ranchi
1st May 1933

P. S. Kachchhap
Pastor of Doo Jargo.
Dist. Mambhum

Office of the secretary, Lutheran Church Council,
Chattanooga and Asam.
Church Council ke Karjkarak Sabha ki Baithki.

Ta: 22 May, 1931.
-----o'o-----

Sankalp: (g) Ki June 1931 se Padri Prabhushay Kach-
Chhap Ilo jargo bheja gay aur uska jo talab scale
ke anusar hai so Council degi jo Ilaaka ke dwara
se Kachchhap Padri ko bheja jaega, jab Prabandh
1 Baras ke liye jari rahe.

Sankalp: (anga) Ki Ilaaka Chairman, Purulia
jargo Parish ke Padri ke sath men jakar Padri
ke rahne ke liye ghar ka bandobast kare, yadi
Bhare ki awashyakta ho to Bhare men lena ka
Prabandh kiya jay, Council uchit Bhara
1 Baras tak dega jab tak Ilaaka se Padri ka ghar
taiyar na kiya jay.

True Copy.

Punmia

29. 2. 32.

Manjatar Pache P. S. Kachchhap ko mera bahut
Yesu Sahay hove,

1. Likhne ka karan yah hai, ki Church Council
se abhi jawab aya hai ap ka ghar ka bishay men
ham ap ko Mr. Ahmad ka Post Card ko copie karti hai.

Dated 25 February 32

Dear Miss Diller,

In reply to your letter of the 8th inst.

I am now able to say that the Executive of the Council
has been pleased to sanction your idea proposal to
shift the Head-Quarters of the Rev. P. S. Kachchhap from Illo
to Nijia. This arrangement to continue till the Ilaka has
been able to build a house for the Pastor of Jango. As
the Council has undertaken the burden of paying his
salary and house-rent for another year the Ilaka should
take every care to build the pastor's house at Illo.

Itam tak ap ka ghar ka bishay men hai. Isi se
ap ko malum ho gaya ki abhi ke liye ap ek ghar Nijia
men rent men lene sakte hain aur ap apna ichchha se
kariye.

2. Yeisa ap janti hain Bunda Gija munamat ke liye
Rs 13/8/- Ilaka panch se grantail huwa. Ap kya chahite hain,
us rupaiya ap ko bhej denge. Ki sidha Bunda Pracharak ko?
Kripa karke hamko sunane دیجیے.

Ap logon ko mera Yesu Sahay aisa men ki ap log
Sab achche hojye.

Saf. A. Diller.

Office of the Secretary Lutheran Church
Council Chotanagpur and Asam. Karyyakarak
Sabha Ki Baithki Ka Mantaby.

Ta. 22 June 1932.

4. Jargo Parish Ka Talab.

Jargo Parish ke Padri ka darkhast - Pesh Kiya gaya
jisme Padri Prabhu Sahay. Kachekhap ne ~~talab~~
talab sambandhi kathinaiyon ki bat Ballai
hai. uske darkhast ke anya bishayon par bhi
dhyon diya gaya aur sammahi Ilake ki dasa
ko ek rup mein lane ke sambandh par soch hi-
Char Kiya gaya.

SANKLP: Ki Bhawishyat mein Padri Prabhu sa-
hay Kachekhap ke liye ~~Council~~ Council Ka madat
Rupanga jitna Council de sakegi so sidhe
Purulia mein Ilake office mein bheja gay jisten
Ilaka sammahi mandli ki amdari se dono
Padriyon ko sambhag mein talab bante.
Waisehi Ilaka Jargo Parish ke Padri ka ghar bhara
bhi deue keon ki Church Council ne 1 Baras tak
Apni Pratigya ke anusar Ilake ki Sahayta kii hai.

Memo No 310 - 312/32.

F. 12.

Dated Ranchi, the 30th June 1932

Extract copy from the minutes of the Church Council
Executive of 22nd June 1933. Forwarded to the Rev.
P. S. Kachekhap, Jargo for information, guidance -
compliance.

A. Hurad
Secretary
G. E. L. Church.

Copy.

Purulia G. E. d. Church

Dated 26th January 1933.

To

The Secretary C. C. G. E. d. ~~Church~~ Mission
Ranchi & Chotanagpur & asam.

Purulia Ilaka ki or se C. C. members ko
bahut 2 ghusahay.

Rev. P. S. Kachchhap ke darkhast ke aishay mein
Purulia Ilaka panch ~~ka~~ mantaly aur Remark -
Babu P. S. Kachchhap C. C. ko jo darkhast diye hain
so Ilaka dwara bheja jata hai is darkhast ke
ware Purulia Ilaka panch ke dwara yah kichar
hai ki jabhi Jargo Parish se bahut hi kam
amdan centralised kiya jata hai, tabhi
Ilaka se donon Padriyon ko ab tak saman
miltay aye hai, walke is ke age Ilaka se
Rev. P. S. Kachchhap ko jyada mil chuka hai.
so karabar Rupaiya Paisa ya tulap ke bare
Babu P. S. Kachchhap darkhast karne se
Purulia Ilaka thak gaya hai aur bahut
dukhit bhi hai.

so kriya karke C. C. apni Jargo Parish ka
bhar lewe, ya Jargo Parish ko Purulia se
alay karke Ilaka bana dewe, ya unke ware
koi dusra bandobast karen.

Prabhu mein ap logon ka sewa

P. C. Purulia

G. E. d. Church

Purulia

Church Council
Received. 1. 5. 33
Register No. 773..
Date... 29. 4. 33
File... 51.....
Reply No.....
Date..... 54,

To, The C. C.

Lutheran Mission,
Danki.

Here with I submit my deligate
Bill of Mahasabha as the practice is for
Singhani Padri. If I am granted then
I shall be ever thankful to you and oblige.

I have the honor to be,
Sir,

Your most obedient servant

Rev. A. Sopora.

Singhani.

29th April 1933.

Mahasabha delegate Bill
April 1933.

Singhani to Ranchi fare . . .	3-0-0
19 th to 29 th Daily allowance per day - /8/- . . .	5-0-0
Back to Singhani . . .	3-0-0
Total Rs.	<u>11-0-0</u>

Rev. A. L. Puro.
Singhani
29th April 1933.

~~157~~ 1578/33

To,

The Church Council ,

G.E.L.Church , Ghotanagpur and Assam,
Ranchi.

15.3.33

656.

13.3.33

28

Purulia ,
The 13th March 1933

Dear Sirs,

As directed by the Church Council I have audited the Church accounts of the Purulia Pastorate for the years 1930 to 1932 . The Audit Note as prepared by me with the explanations in margin given to me by the Pastor and the present Treasurer is sent to you for perusal.

As the audit Note will show there has been faulty account keeping due to ignorance in writing accounts .

But for the remarks in the audit note the accounts of the Church are correct. Verbally I have given also advice to keep the accounts correctly in future .

Yours sincerely ,

B. C. S. S.

Audited the Church Accounts of the

years 1930 to 1932. The following are the

defects that were noticed in the accounts.

(1) In the month of July 1930 the Chatu Sirni rice collection is 1md-35srs-8ch. according to the Sunday Collection Book, but in cash book the rice has been entered as 1md-26srs-8ch. The rice sold according to the Sunday Collection Book is Rs8-8-7½ but in the cash book it has been entered as Rs 7-8-7½. Hence there is a shortage of 9 seers in rice and Re 1/- in cash.

Sunday school Collection

Some rice that had been collected from February to June 1930 was sold for Rs 6/- but it had not been entered in the Sunday Collection book.

In the same month the Sunday School rice in the Sunday Collection Book is 3 seers and its price is -/5/6 but in cash book the price has been entered as -/8/-. Thus there is an excess of -/2/6.

In November 1930 a loan of Rs 11/15/1½ was taken from the income of December 1930. In December 1930, instead of showing this amount as repaid, it has been shown in the annual pay of the Pastor (Rs 27/10/10½) and in the annual pay of Chowkidar ducar (Rs 3/1/3). In the total Rs 27/10/10½ should be deducted from the Pastor's pay and Rs 3/1/3 from the Chowkidar's pay. A case of very bad accounting.

(2) In the month of December 1930 Rev: P.C. Punoria was paid Rs 8-10-10½ in excess as his arrear pay for the month of November, though he received Rs 27-8-0 his full pay, in November 1930. This amount Rs 8-10-10½ should be recovered from the Pastor.

(3) After closing the account for the year 1930 it is found that the Pastor received Rs 329-7-10½p. but his annual pay should be Rs 330/-, hence he is entitled to get his arrear pay of -/8/1½p. for the year 1930. The church bearer received Rs 88-11-6p. only but his annual pay should be Rs 96/-, hence he is

In 1930 in the pay
of the P. M. there is
a shortage of Rs 7-4-6
and in the pay of the
Chowkidar, there is
a shortage of Rs 10-4-9.

entitled to get Rs 7-4-6 as his arrear pay
for the year 1930.

(4) In the month of February 1931 the
Chatu Sirni rice collection is 1md-31srs-4ch.
according to the Church Collection Book but in
the cash book it has been entered as 1md-21srs-
4ch. Out of this, 28 seers were sold @ 14 srs
per rupee and the price received thereof is
Re 1/- only instead of Rs 2/- according to the
cash book. Rs 4-4-9 is the total of Chatu
Sirni in cash and the price of rice sold comes
to Rs 2/- but in the cash book it has been
entered as Rs 5-4-9 only. Hence there is a
shortage of Re 1/- in cash and 10 seers in rice.

This amount of Re 1/-
has been adjusted
in February 1932
and has been shown
on the income side.

(5) In the month of March 1931 the Chatu
Sirni rice, according to the Church Collection
Book, is 2mds-27seers-2ch. but it has been
entered in the cash book as 2mds-20srs-2ch.
Out of this, 1md-18srs-10ch. were sold @ 14srs
per rupee and the price received thereof is
Rs 3-3-9 only instead of Rs 4-3-0. Rs 4/- is
the amount of Chatu Sirni in cash. Hence the
total of Chatu Sirni in cash and the price of rice
sold comes to Rs 8-3-0 but in the cash
book it has been entered as Rs 7-3-9 only.
Hence there is a shortage of -/15/3p.

This Rs 4/- has been
adjusted in February
1932 and has been
shown as Rs 4/- in
the income side.

Rs 3/- was an income
from an Philanthropy
Fund, P. M. which
had not been entered
in the Church Collection
book.

(6) In the month of April 1931 the
Sacrament offering according to the Church
Collection book is Rs 10-0-6 but the amount
entered in the cash book is Rs 10-3-6. Hence
there is an excess of -/3/- in the cash book.

(7) From the Bill No. 9 of 1931 it is seen that the Pastor submitted a bill for his arrear pay from June to October 1930 though he was paid Rs 3-8-0 and Rs 3-11-3 as his arrear pay for June and July respectively according to the cash book.

After closing the account for the year 1931 it is found that the Pastor received Rs 339-3-0 but his annual pay should be Rs 330/- hence he should refund the sum of Rs 9-3-0. The submission of the bill for Rs 9-3-0 and its payment in January 1931 was clearly wrong.

*The pastor's annual
pay of Rs 7/6/- in
1930 was paid
in 1931.*

(8) In the month of March 1932 the Pastor of Purulia submitted a bill no. 72 of 1932 for repairing his house. He made purchases of new and old rolas, bans and tar etc but there are no vouchers, showing from whom and where they were purchased, attached with the bill. There is no mention of refunding any money in ~~the~~ the bill, still it appears from the cash book that the Pastor refunded Rs 15-12-6 on 3 different dates viz. Rs 5-12-6 on the 30th April, Rs 5/- on the 30th June and Rs 5/- on the 31st July 1932 under the same bill no. 72. It is inexplicable how after spending Rs 25-12-6 in the repair of his house, the Pastor could refund Rs 15-12-6.

*The Hakea Panch
sanctioned and
paid Rs 107. only
and as the pastor
had to refund
Rs 15/12/6.*

(9) After comparing the salary acquittance roll with the cash register it is found that different dates have been given in the two registers. Dates given in the cash book do not tally with those given in the salary acquittance

roll, e.g. the salary of the Pastor for the month of February was paid according to the salary acquittance roll on 5/3/31 but in the cash book the payment has been shown on 28/2/31. The dates of payment in both the registers should be same.

Corrected.

(10) On 1/8/32 Rs 8/- was paid to Lucas Nag and on 5/12/32 Rs 5/- was again paid to him but no signatures of the payee were taken in the salary acquittance roll. This should be rectified.

On 6/3/1931 Madhu Kamar did not work for the whole day and so he was paid 1/6/- for that day.

(11) From Bill nos 17 and 25 of 1931 it is found that two coolies were engaged for cutting the Bokam trees, viz, John Mardi and Madhu Kamar. John Mardi was engaged on 5/3/31 for one day and he was paid -/5/- as his wages. Madhu Kamar was engaged on 6/3/31, 7/3/31 and 9/3/31 for three days and he was paid -/6/-, -/7/-, and -/7/- respectively for each day. Bills were submitted by the Pastor and payments were made to him but as there are no receipts of the cooly-payees, it can not be ascertained how and why within 5 days 2 coolies were paid at different rates.

Corrected.

(12) 3 different travelling bills for Rs 16-7-0 have been shown on 30-4-1931 in the cash book under the numbers 24, 28 and 29.

Bills nos 28 and 29 d/- 25/4/31 relate to the travelling expenses for the General Conference at Ranchi, of the Pastor and one delegate from Purulia. The payee's receipt has been obtained in bill no. 28 only but it

is not understood why the payee's receipt in bill no. 29 was not obtained.

(13) On many occasions halting allowance has been charged @ -/8/- per day but in bills nos 28 and 29 the footing charge is -/12/- a day. It is not understood under what authority this was done.

*The Slating Panch
passed this rate.*

(14) Bill no. 24 relates to the travelling expenses from Purulia to Nunia and back. It appears from the bill that there was a sum of Rs 3/- in hand for travelling expenses and the total amount billed was for Rs 2-10-6. There is a clear mention in the bill that Rs 3/- was in hand out of which Rs 2/10/6 was spent and there was a balance of Rs 0-5-6 which was returned to the Pastor for making deposit in the cash book. It is not understood whence Rs 3/- was obtained. If Rs 3/- was received in advance from Nunia people for travelling expenses and out of this sum Rs 2-10-6 was spent and -/5/6 was made over to the Pastor for deposit, the proper entry should have been Rs 3/- received from Nunia people for Pastor's travelling expenses; and if that be so, Rs 3/- should be refunded by the Pastor.

*The sum of Rs 3/-
had been advanced
privately by Miss
A. Diller. The
balance of Rs 5/6 was
refunded to her &
has not been shown
in the Cash book.*

(15) In the account of June 1930, there was a balance of Re 1-6-0 in hand. This amount was not carried forward in July 1930 and has not been accounted for. This amount Re 1-6-0 should therefore be recovered from the Treasurer

(16) In 1931, Rs 7-8-4½ was ~~fallen~~ taken

*Babu Har Dupan
H.O., An. Kripa
Treasurer
to pay this.*

as loan from the Pracharak Punch Fund. This amount was refunded in 1931. This is alright. But in 1932, it appears that Rs 81-8-0 was refunded as Loan to the Chota Nagpur Bank. But in the cash book there is no entry to show when and how much loan was taken from the Bank. The amount of loan from the Bank should be shown in the receipt side and how was it spent, should be shown in the expenditure side.

(17) In the Church Collection Register the Chatu Sirni collected in rice is shown Sunday after Sunday, but as the amount of rice sold is also shown in the same receipt column, it is difficult to find out what was the actual amount of rice collected and out of this how much was ~~it~~ sold. According to the Register the balance of unsold rice for the year 1931 comes to 11mds-13srs-0ch. and for the year 1932 it comes to 15mds-18srs-12ch. There can be no doubt that most of this rice, if not all, was actually sold; but the manner of entries in the Register does not clearly show this. In the Church Collection Register there should be a separate column for rice sold, so that it will be possible by totalling the "receipt column" and the column of "rice sold" to see the balance of unsold rice at a glance. These totals should be given in every page of the Register.

(18) I find that in both the receipt side and in the expenditure side there are entries such as " V.R. no. ". These V.R. numbers are ⁱⁿ one serial order for the year. This is clearly wrong. For receipts there should be

separate serial numbers and for expenditures also there should be separate serial numbers. For receipts there should be a separate Receipt Book serially numbered in which all the receipts, which are not shown in the Church Collection Register, should be entered. These receipts should be in duplicate and one of the copy should be given to the person from whom the money is received. For expenditures vouchers may be prepared in ordinary paper. But they should be kept serially and should also be kept in a file in serial order separately from other papers.

(19) For many items of expenditures there are no "vouchers". In cases of purchases of any articles and in cases of payments to coolies and others, receipts should be obtained from the persons to **whom** payments are made.

Accounts for the years 1930 to 1932.

I N C O M E.

	1930	Rs.A.P.	1931	Rs.A.P.	1932	Rs.A.P.
Brought Forward		42-14-4½	B. F.--	17-2-4½	B. F.--	117-4-4
1. Church Collec- -tion	118-4-4½		233-6-1		252-4 5½	
2. ^a Chtu Sirni	98-9-4½		132-13-6		160-14-9	
3. Dhanyabad..	6-1-9		21-14-9		58-1-3	
4. Sacrament...	27-14-6		52-9-0		50-15-3	
5. Marriage...	25-8-0		92-4-0		59-0-0	
6. Mandali paisa	0-0-0		18-6-0		54-11-6	
7. Katni...	56-5-10½		77-12-7½		82-13-1½	
8. Nawakhani	0-4-9		0-10-6		0-13-0	
9. Property Income...	120-2-3		67-3-6		18-0-0	
10. Other income..	15-10-9		24-4-4½		85-3-6	
11. Prabhuprit	0-8-0		0-0-0		0-0-0	
12. Travelling allowance..	0-0-0..469-5-7½		31-13-0..753-1-4		0-6-9..823-3-7	
Total ...		512-4-0	Total..	770-3-8½	Total..	940-7-11.

Accounts for the years 1930 to 1932.

EXPENDITURE

	1930.	Rs. A.P.	1931	Rs.A.P.	1932.	Rs. A.P.
1. Pastor's salary		329-7-10½		339-3-0		446-4-2
2. Catechists' salary		0-0-0		31-4-8½		33-8-4½
3. Church bearer's salary		88-11-6		96-0-0		87-8-0
4. Cooly & letters		2-12-0		7-9-5		8-2-5
5. Oil for Church and meetings		1-3-6		3-5-0		2-3-0
6. Bible Society		1-6-0		0-0-0		0-0-0
7. N.M.S.		1-8-0		0-0-0 (To C.C.)...		14-2-0
8. For Lord Supper		5-14-6		16-5-9		16-8-6
9. Refund of loan		0-0-0 (To Pr.)		7-8-4½ (To C.N.)		81-8-0
				Punch)		Bank)
10. Grant to teachers		0-0-0 (Loan to		27-0-0		36-0-0
		Rev: P.S.				
		Kachhap				
11. Whitewash (church)		14-8-0		36-2-9		22-2-3
12. Whitewash (cemetery)		9-6-0		3-2-10½		7-8-0
13. Travelling		25-3-3		65-5-0		30-7-0
14. Church decoration		3-7-9		8-14-6		13-15-6
15. House repair		0-0-0		5-14-0		65-3-0
16. Miscellaneous } expenses }		12-3-0		5-4-0		35-14-9
		-----		-----		-----
Total....		495-11-4½		Total...652-15-4½		Total..900-14-11½

Accounts for the years 1930 to 1932.

Totals of INCOME and EXPENDITURES are shown here:-

1 9 3 0.		1 9 3 1.	
Income	Expenditure	Income	Expenditure.
<u>512-4-0</u>	<u>495-11-4½</u>	<u>770-3-8½</u>	<u>652-15-4½</u>
	Balance) in hand) ..16-8-7½		Balance) in hand) 117-4-4
Grand Total. <u>512-4-0</u>	<u>512-4-0</u>	G.Total. <u>770-3-8½</u>	<u>770-3-8½</u>

1 9 3 2.

Income	Expenditure.
<u>940-7-11</u>	<u>900-14-11½</u>
	Balance in) hand }
	39-8-11½
Grand Total... <u>940-7-11</u>	<u>940-7-11</u>

D. W. P. S. S. S.

24. 2. 1933

Church Council

Dec. 5.4.33

Register No. 701

Date 29.3.33

57. or 21.

Office

Sent to Rev. Prabhakar

574/33.

29th March 1933

The Treasurer,
G.E.L. Church.

Dear Sir,

For the year 1932 we have not so far received any contribution from you for the NMS. Excepting the Tamil Luth. Church, all other bodies have contributed very much less than their quota and the result is that the Luth. NMS is running its work on a big deficit and as all our collections are remitted to the NMS and the parent Society is having responsibility for meeting the bills, what happens is that our regularly recurring items of expenditure are met after a delay of about two months and any extra items are disallowed, for the simple reason that there is no money in the Treasury. The first charge is legitimately conceived to be the salaries of our workers and the maintenance allowance for the boarders in our Jharsaguda School.

I much regret that, owing to the financial difficulties in which we find ourselves, we have not been able to send even ~~one~~ one representative from the Jharsaguda field and this I am afraid is likely to be misunderstood by the Conference of the Gossner Church. I have received from the Secretary a very earnest request that at least this time we should see that one of our representatives goes to the Conference. As there are very real difficulties at this end with regard to finding the money for such an item of expenditure which the general NMS considers to be a matter not of such grave importance as the meeting of the salaries of the workers, may I take the liberty of suggesting that you advance from the Luth. NMS account of the Gossner Church sufficient money to meet the travel expenses of Pastor Bara. I suppose a third class ticket to and fro and the daily bathe according to the Gossner Church rate would have to be paid, and this amount may be deducted from the NMS collections taken from the 1932 collections or advanced from the collections of 1933.

Last year I had suggested that some of the workers there might take a special ~~subscription~~ collection for this purpose and enable the pastor to go to Ranchi, for the N.M.S. meets the salaries of the workers fully and they are not under such retrenchment as they evidently are in the Gossner Church, but this suggestion was not heeded to and as our non-representation at the Conference of the Gossner Church is likely to be misunderstood, I am prepared to recommend to our Committee that we surrender a part of the income from your Church for this purpose. I hope it is arrangement which appears to me the only practicable one under the present circumstances will meet with your approval and that of the Council.

With cordial thanks to you and to the Council,

I remain, yours sincerely,

Joc

Copy to the Secretary, G.E.L.C.
Ranchi.

1. Please remit 1932 Co Collection deducting Pastor's salary advance
2. Please take early action re 1933 Co Collection from the

Joc

is requested
See to place the matter to N.M.S. Collectors
before we Conf. & General Conf. & Ranchi
to authorize monthly collections
from salaried ~~possesses~~ of a
General Co Collection as a suitable
part of the year. TEHC give New Year
Eve Collection to an N.M.S. *Joc*

This has passed
M. T. M. P. M.

34. 12.
 4. 6. 9
 47. 3.
 19. 6.
 29. 10
 17. 10
 10.
 49. 5.
 25. 7.
 17. 12.
 7.
 56.
 24. 3
 125.
~~86~~
~~24. 4~~
 46.
 19. 8.
 65.

620-2-9

Assam's C. F. contribution

Rs 620-2-9.

u B M

21. 11. 03

Church Council
Received... 15.3.33
Register No. 657
Date... 10.3.33
File... 20
Reply No.
Date

~~15~~ 15/3/33

Baitbaranga, 10. III. 33
P.O. Balipara, via Texpar.

My dear Mr. Hurad,

enclosed I am sending a brief report of our Chota Sabha's meetings. You'll find in the report, that we appointed two more Pastors as members of our Chota Sabha as desired by the Church Council.

From our Catechist Johann Timu I heard that he is still in Pandu waiting for the order to come over to Ranchi to attend the Seminary. Did you decide about him?

If possible, I hope to come over to Ranchi for the Maha Sabha.

To morrow I am leaving for Tongva, gaon where we are going to have the 3rd Tharu Sabha this cold weather.

Please excuse, if I don't write more to day. Many 'Jishu sahay' to you and the President and the other brethren of the Church Council.

Yours sincerely,
W. Radsink

7/28/33 Baithabhang, L. III. 33

Dear Mr. Hurad,

enclosed I am sending the

Church Council
Received 7/33
Register No. 630
Date 2.3.33
File 20
Reply No.
Date

Census of Baithabhang, Ghagra-Shankipur, and North Lakhimpur.

In February we had 2 Harim. Sabhas, one at Rajabahal and the other at Bordol in the Nawgung District. About 500 Christians attended the meetings at Rajabahal and nearly 300 those at Bordol.

Such a conference means always a great effort for the Christians where the meetings take place. — The Peon has just come, so I better send the Census's head and send you a report later.

With many Gishu salaams to all the brethren of the Church Council.

Yours sincerely,
W. Radsick.

आसाय- छोटी सभा- को मेम्बर. ये है.

सभा पति- मन्थवार- पादरी. W. Radrick

सोपे टेरी पादरी. Silas Hogg

रव जान्ची. वावु. Paulus. Purb

मन्थवार- पादरी. A. Toporo

वावु Silas Tiru

इस- दया- में ये वावु लोगभा } वावु. Purauprasad. Oreyo
सभा- में बैठने को लिये बुलाये गये } पादरी. Johan. Maraiya
पादरी. Lukais. Henry

१६. ५. ३२. को. महिला बैठनी

मन्थवार- पादरी रकीम- साहेब ने रोमा १२. ११म ५ पदकर
विन्ती. पुरावा- साथ- सभा- को रवोले

स्वागत-

सभा पति- ने आये. इस इत्ना छोटी सभा- को मेम्बरों को
और- दूसरे- आये. इस वावु को को. मन्थवार- सहित शस्य
विषये. और- सभा- को- हर राये जाने को- मतलब- सभा को
समझाये.

सभा पति- ने. को सिल- को से को टेरी आइ- हुई को चिह्नियों
को पकी- मन्थ, पद सुनाये ।

सभा- से. मन्थवार- पादरी रकीम- साहेब- को आरज
विषय गया- वि- महा सभा- में आसाय- इलाका को- विषय-
व्या २. रिपोर्ट- विषये है. व्या- पर- सुनाइये.

सभा पति- ने. सभा- को सुनाया वि- में विशेष दो बातों
को रिपोर्ट- विषय अनर्थात्, न. को बल मराउली को भली
बात- नही पर- मराउली. वि. बुरा दया- को. अनोचना विषय
अर्थात्- आसाय में जितना- मराउली. सम्बन्ध- खान- है सब दान-
विषय जाता है और- को दान- मराउली हैं जिसमें बुरा दस्तुन भी
चल- रहो है ॥

रिपोर्ट- सुनने- को- पदो इलाका- मेम्बरों को. साथ- बात बिल
हुआ और- भी मराउली में विपत्ति. मरहो और- बुरा बात को
मिल गया । अनर्थात्- मन्थवार- पादरी. लुकास- और- मन्थवार पादरी
मरीया ने बताया वि- दुको न्यून लोग दुकापन को दिन- में विशेष
दान- को. आदमा दान- लिये देने हैं ।

मन्थवार- पादरी आबरहाम- तोपोगो सन्डे- दान- को विषय
महा- वि- दान- लुका- ने आ- से पैसा- न- पाने को वदले में
दो मुर्गी मराउली दान- दया- जितना मैं ने १ आना दिया है
विषय विषय

संक्षेप-

मराउली में दान- देने को लिये- धित- मराउली जाने ।

बुरी- बाल- को विषय- बात- बिल परने पर यह पाया गया
वि- को दान- मराउली में मत वाल पन को. बुरा मरहो- को बुचात-
पाया गया

संख्या - - विषय - दय-लोगों को. बुरा बुरा व्यवहारों को रोक्कने के लिये
लड़ना. चाहिए ।

दूसरी धेना- — मन्थवार- पाकरा रुकीयेम- सा हेव-ने विन्ती पुमाना
बो- साथ- पेवैर- म्या- रमाली ।

विषय - जो 'मन' को संकोच से भाँटे दुखी दो चिट्ठियों को विषय-
वस्तु मानकर लिखा हुआ -

१। संख्या ५- महासभा-से ३१२ राये हुए- अनुसार- आपने- माहवार-अंश-वारे-से- ज्यों-सिल-चले-सहायता-के-लिए-सौ-अडा- २०-वां-पर-सी-२-त्रा-वि-ज्यों-सिल-को-दे-वे-। सौ-अडा- २०-वां-पर-सी-२-ज्यों-अ-अडा-आ-ने-के-विषय-सोच-विचार-हूँ-।

असाय- इलाया- मे पेरिस- रवजाचियों मो लिरवा जावे
पुनि- मदिना आपने- महवारि मुमवान से सैव्यते
२० वां परसेर- यन्त्र वा २- पादरा कर्माय न्ना- साहेब को पास केजी।

२२। विज्ञान - संयुक्त - स्वभाव - मे विषय - सोच - विचार - हुआ -
 संयुक्त - मना मे यह स्थिति - हुआ - विषय - संयुक्त - स्वभाव -
 स्वभाव जावे ।

20-4-32 — ओ. वेठवाल

मन्यवार - पाकिस्तान के बंदिबान - साहेब - विन्ता पुष्टिगा वान

पेवैर - ओ. रंका एने

निमन - लिखित - बातों ओ विषय - सोच - विचार विचारगया

(१) मिम्यत - साफ (२) मराउली वझार वालों ओ लड़क्यो

लड़कियों ओ - स्तान, (३) वगान - वालों ओ पाना - छोरे

संकोअता ओ विषय

(2) संख्या ५ - वरान - वालों से पास - जाना - दान - देने - समझाना, वैयल श्वास -
 से समझ - वरान - से - प्रचारकों मित्रों से लिये बुलाना -

वेधर-मेम- W. Radzick
संघटन- Lilis Hoss

19. 5. 32.

भा.सा.म. छोटी सभा को

२२ बै २०००. २२. ६. ३२.

I हाजिर II गये. मिनट. व्या. दोहराया जाना

III- प्रेसिडेन्ट. से ओपेरेरी. और रवजान्वा आरिपोर

IV चाच मौसिल- ने डार भा.सा.म. छोटी सभा को कहा तब- आदिभार दिया गया- है।

(I) भा.सा.म. इला. व्या. में पादरियों व्या. समवाय्यता

(क) तन सुखिया के लिये

(ख) तेजपुर के लिये ।

हाजिर

मन्थवार- पादरी- रदीय- साहेब-

पादरी- सिलास- होरो

वागु- पौलुस- पुरत

वागु- सिलास- तिड

३१-दो. महाशयो
व्यो. जो. सभा में
वैठते. और अनुमति.
सभा पावि-के मिली

पादरी- मोहन- मरीया-

पादरी- मुलीमान- सरम्भार

मन्थवार- पादरी- A डिपण्डो. वैष्णव- व्यस- रांची गये थे
इस- बार- से. हाजिर- नहीं थे

मिनट वरति. मिनट- १६.५. ३२. का मिनट- पढ़ा गया-

क्यूल रवजाना-

संख्याप-

क्यूल- रवजाना- ने विषय- पार- वात- चित्त हुआ-
सभा- से यही स्पीर- हुआ. वि- जाने वाला पढ़ने
में क्यूल- रवजाना के लिये विषय चिन्ता किया जावे
और- जहां तब- होने अन- ही जमा- होवे

प्रेसिडेन्ट- व्या-
रिपोर

साहेब- ने. वासवां परसेर. के विषय- भली भांति रिपोर दिये
और- महिमा २. याने. मरे-से. अगस्त तब- जितना पाये. सब-
व्युध- आपने रिपोर. में सभा- को सुनाये. और- हिसाब- में
मोठ दिखाये २१७ III) जो- रांची के मौसिल- के रवजान्वा
व्यो. सौंप दिया गया- II

ओपेरेरी-

जोराहाट के. मही. के विषय- में जो. रिपोर सुनाया
रिपोर- सुनते. से वही. उदास व्यो. वात हुआ-
व्या- व्यो. विषय- वात नहीं था. इस लिये रिपोर
नहीं दिया

रवजान्वा

पुनः प्रति- व्यो. विषय- रिपोर दिया. वि- आव तब- मुका
व्यो- उना. व्या. से पूरा हिसाब- नहीं मिला. मुल जमा-
४६ III) इस- में से रवच. २) हाथ में ४१ II)

चाच मौसिल को. जनाया जावे व्यो- वैधाना प्रचार- योहन-
तिड व्यो. पादरी पद पर- स्थापित करो।

निम्न लिखित-

पेरिस- व्या- दरबार- पढ़ा गया- वि- और- सभ्य
पादरी- केजा- जावे।
इस- विषय- सोच- विचार- विषय- गया तो
यह- मूल विषय- वि- वहां- वृत्त और- सभ्य-
पादरी- दरबार- है

संख्या-

पेरिस- बहुत बड़ा है इस- विषय- और- सभ्य- पादरी-
का दरबार- है जिससे- व्या- वि- चले

लुक्का- पादरी- जानु- व्या- और- सभ्य- बातों- को व्याख्या
से- दरबार- है वि- चाहे तो- कोशना- गुरु- में रह जावे
चाहे तो इस- तरफ- आपने- स्वयं- को- साथ- आवे
वि- जहां- तब- हो सके- कोल- माल- वि- बात- सपाई-
विषय- जावे

चयन- मन-
संश्लेष-
रवजान्चर-

W. Radnick
Silas H
Paulus Puri

28. 9. 32.

राजा- बहार- पेरिस- में
आ- साम- छोटी- सभा- की- बरा- बैठकर-

20. 2. 32

आ- साम- पत्र

- १- मोहन- प्रचार- को- वै- गंगा- को- विषय-
- २- पादरियों- को- बल- को- विषय-
- ३- चा- को- सल- को- चिह्न- विषय-
- ४- मो- सा- हे- को- चिह्न- विषय-
- ५- व्या- को- बात-
- ६- आ- साम- बला- को- सल- तमा- वि- वा- को- विषय-

राज- प्रेसिडे- राज- चयन-

Rev. W. Radnick
" A. Topono
Babu. Silas Tiru

रवजान्चर-
संश्लेष-

Babu. Paulus. Puri
Rev. Silas H
Rev. Lukai Honraj
Rev. Johan. Maraiya

इस- समय- में- और- हो-
पादरी- छोटी- सभा- को-
मे- व- में- लिखे- जा-

- १- प्रचार- मोहन- लिख- को- विषय- में- पादरी- रवजान्चर- सा- हे- वा- चा-
को- सल- को- संश्लेष- को- आ- दु- चिह्न- को- विषय- सभा- को-
बता- वि- मोहन- व्या- को- चम्पी- प्र- प- पर- स्था- वि-
हो- को- मं- वि- है।

संख्या-

इस- विषय- पर- छोटी- सभा- को- सल- को- सल- से- अन्य- वा-
वर- है

द्वितीय-विषय-

००

पादरु को बिरहाम-तोषणो कोरे. पादरु लुब्धस-हें डेज को
वदलने के. विषय. वात-विले दुइ विचार में बहोस्विक
डाहराया गया.

संक्षेप-

पादरु को बिरहाम-तोषणो लिन मुष्मिषा. पेरिस-में जावे
कोरे पादरु लुब्धस-हें डेज लिन मुष्मिषा पेरिस-से लक्ष्मिपुत्र
नाथ के. चन्द्रमावी-में जावे।

तीसरी विषय-

चाहे जो सिल-से आइ. दुइ चिह्नी को मन्थवार
रुपमिषा. साहेब-पद सुनाये. जि. कोरे को पादरु
आसाम-छोटी सगा के मेम्बर भरलने भिये
जावे।

संक्षेप-

चाहे जो सिल-के चिह्नी. अनुसार. मन्थवार
पादरु लुब्धस-हें डेज. कोरे मन्थवार-पादरु
योहन-मरीया डाहराये गये।

चौथी विषय-

मन्थवार-ओर साहेब-के कोरे से आइ
दुइ चिह्नी. पद गइ.
चिह्नी. के. वाती के विषय. सगा-में आने के
वादानुवाद-हुआ. कोरे विचार-में बहोडाहराया गया

संक्षेप-

हम-लोण-नीज ह. मराठली में. युवा युवातियों
के लिखे संयम-समाजों को डाहराये. जिसके आइने
के लिखे. हमारे. युवा युवातियां मराठली में
आम-भरने. के लिखे. तार-भिये जावे।

पांचवी विषय-

प्राथ-रिपुस्तान धर्म में रूप-पवित्र चिन्ह है
इस-के विषय-में अनेक-छेड़ छाड़ हुआ।

संक्षेप-

संयम-समाज-हमारी. सब-मराठलियों में डाहराया
जावे कोरे-वडे. दयान-से. चलाया जावे। कोरे को
वाहिन-चाहे गाई-पुरा मेम्बर हो जाता है कोरे
इवर-के वचन-पढ़ने कोरे-सरवने-में लगा रहेगा
कोरे-विन्ती. प्रार्थना में लगा रहेगा कोरे-मतवालयन-
के बिछुड़ लड़ने. हारा. होगा कोरे-मराठली पंच
उस-के विषय-पेरिस-के पादरु के पास-शुभवा
सम्पारिस-करेगी जि. आमुष्म. को शुभ-पिछा आगे
जाय तो-पादरु-पंच-के सम्पारिस-से मराठली भिये
कोरे-से रूप-शुभ-उस-को-देवे।

नोट

पाद-से सा जन-कोरे. पाप-में चाहे मतवालयन-चाहे
मराठली-विषय-के. आम-में पण्डा जाय. तो उस जवान

00
00

चाहे- गुवाति से- व्युम- ले लिखा जायेगा और उक्त
सभा से- निष्कात्ता जायेगा-
व्युम- मराठली- खजाना- से लिखा जायेगा- इस के बारे
सभा- मन्थवार- रविवार- साहेब- व्यो भरजी लिखा गिया
वे वही वस्त्र करे ।

द्वितीय- मन्थवार पाकरे मुहन- साहेब- व्यो निहो मन्थवार
पाकरे रविवार- साहेब- व्यो ठारा पढ़ा गया
जिस में पांच मुल- बातें थीं ।
१- वार्षिक- हिसाब १९३२- व्यो ।
२- १९३३- व्यो वजे २
३- धर वन्धु- पैसे ।
४- पाकरियों व्यो. १९३२ में जनवारि से विसम्बर तक
वित्तना तालप- मिला और- वित्तना नहीं
५- पुचार व्यो व्यो. १९३२- में जनवारि से विसम्बर तक
वित्तना तालप- मिला और- वित्तना नहीं
सभा- पालि- व्यो. और- से हु व्युम- लिखा गया गिया- इन
पांचों बातों व्यो अपने लिखे लिख रखे ।

द्वितीय
(१)

परिलिखित बात- के विषय- यह विचार स्थिर हुइ गिया-
हर साल- व्यो- वार्षिक हिसाब- अगामे जनवारि को १५वा
में पाकरे वावु- लोण वेढालंगा में गगा हो कर हिसाब
मन्थवार पाकरे रविवार साहेब- व्यो हाथ- सौंपे ।

प्रधान- साथ- सभा अन्त हुआ

सभा पालि- W. Radwick.

सेक्रेटरी- Rana S. H. J.

खजाना-सी- Paulus Puri.

20. 2. 33

Rajabhai

-C. C. Executive की बैठकी

February 2, 1932.

शक्ति से :- प्रसिडेंट C. C.

भा: पाद्री प्रेसन

" " ग्रेसन लकडा

भा: " कैर शिस मिजिटर

" राग निमिल मोय -

१. दलप हकेल :- इस विषय पर बातचीत होके ठहराया गया कि इस घड़ी समय के लिये सब कार्य चारियों का (पाद्री को प्रचारकों) दलप हकेल ही कर लिया गया। यह निपटारा हुआ कि पुराने पाद्रीयों को लिये माहवाप 80) पैसे और पुराने प्रचारकों के लिये माहवाप 20) पैसे अनिवार्य दलप समझा गया। पाद्रीयों को दलप से जो अगुआ दीये 90) प. काटा जाता था सो आगे न काटा गया और ऐसे 2 पाद्रीयों और प्रचारकों को 80) प. और 20) प. के अनुपात से इका का दलप देवे। अब से केवल सब कार्य चारियों का दलप हकेल के सिवा ~~न~~ अनुमान ठीक कर दिया गया। पाद्री को प्रचारकों के खेत की बात को इसी के सम्बन्ध में जोसला कर दिया गये।

२. पंचों की बात :- पंचैट में बातचीत हुई कि प्रत्येक एक पंचों का आर काप और 32 का अधिकार नहीं तथा है :-

(क) प्रचारकपन पंच :- इस पंच का प्रचार काप को मतलब निम्न बातों में प्रचार को मंडली काप में सहायता माला है :-

I आभिमन बातों में :- (१) विन्ती समाजों को राडा करना
(२) मंडी को बहनों को गिरा जाने में चलाया
(३) संसारों को खुस्तान चर्च में लाया
(४) मंडे हकल चलाया
(५) देखना कि हर सतवा उचित
सुविधा को मुसमय गिरा होता है।

II लौकिक बातों में :- (१) बड़ा सिनी, मंडली पैसा को अन्य सिनियों का मुयकन्य माला

(२) खजाने का हिसाब रखना
(३) मंडली खेतों का देखभाल माला
(४) गिरा बाले लिये मिलान माला

III चालचलन सम्बन्धी :- (१) मतवालपन को रोचना
(२) मंडली को शुद्धता को देखना
(३) विश्वासवा को प्रवित रखने के लिये चलाया

टिप्पणी :- प्रचारक और प्रचार का उपरोक्त बातों के लिये पंचों को जरूरत का पूरा माला है।

**चर्च कौंसिल के कितने
मन्तव्यों का संक्षेपन जो मंडलियों में भेजे
जा रहे हैं कि इन मन्तव्यों के अनुसार काम किये जाएं ॥**

सरक्युलर (विज्ञापन-पत्र) नः ३५६ ताः ५ जुलाई १९३२ ।

५। कोओपरेटिव बैंकों से स्कूलों को सहाय ।

यह प्रश्न उठा कि क्या हमारी मंडली से सम्बन्ध रखनेवाली कोओपरेटिव सोसैटियां स्कूलों को सहाय नहीं कर सकती हैं? मालुम हुआ कि बुड़जू इलाके में की ४२ सोसैटियां अपनी आमदनी से कुछ हिस्सा स्कूलों के लिये महीना २ देती हैं जो कि नियमानुसार कार्य है। इसलिये विचार कर स्थिर हुआ—

संकल्प : कि मंडली के भीतर में की कोओपरेटिव सोसैटियों को ग्रैन्टी युनियनों के द्वारा से अनुरोध किया और परामर्श दिया जाय कि वे भी अपनी बचत पुंजी में से कुछ अंश स्कूलों को देके अपना उपकार करें।

सरक्युलर (विज्ञापन-पत्र) नः ३६० ताः ५ जुलाई १९३२ ।

६। प्रचारकों का प्राचीन होना ।

कौंसिल को यह मालुम है कि बहुत से इलाकों में कितने प्रचारक हैं जो कि बहुत कम मेहनताना इलाकों से पाते हैं और तौभी उनके घर में अच्छी चलती रहने के कारण मंडली का काम करते जा रहे हैं और भविष्यत में भी काम करने सकते हैं। अच्छा होगा कि ऐसे प्रचारक जिनकी मंडली में भी सुख्याति अच्छी है प्राचीन बनाये जावें और वे आदरवन्त रीति से मंडली की रक्षा और प्रतिपालन तथा सेवा करने में उचित सहायता दें। विचार हुआ कि यही परामर्श सब इलाकों को भेज दिया जाए क्योंकि इस उपाय से हम मंडली का प्रतिपालन कम खर्चीला हो कर कर सकेंगे।

सरक्युलर (विज्ञापन-पत्र) नः ३६१ ताः ५ जुलाई १९३२ ।

७। सम्पत्ति आमदनी का सेन्ट्रल फंड में आना ।

कौंसिल में आमदनियों पर बातचीत करते हुए यह निकल पड़ा कि अभी तक २० शैकड़ा जो मांगा जा रहा है अथवा आया है सो विशेषतः मंडलियों की सिर्नी और चन्दा आदि अन्य दानों का अनुपात है परन्तु इतनी भारी सम्पत्ति जो भिन्न २ जगहों में है उसका उचित अंश कौंसिल में नहीं आता और नहीं दिया जाता है। इसलिये उचित समझा जाता है कि कौंसिल सम्पत्ति की आमदनी को अपने हाथ में लेवे और काम चलाने में उचित सहाय पावे सो यही विचार स्थिर हुआ—

संकल्प : कि १९३३ साल से लेकर कौंसिल अपने सेक्रेटरी अथवा किसी जन को भेज कर सब स्टेशनों की और इलाकों की सम्पत्ति को स्थानीय प्रैवेट लोगों के साथ में बन्दोबस्त करे अथवा अन्य प्रकार से उसका ऐसा व्यवहार करे कि कौंसिल को उस सम्पत्ति से उचित आय होवे जिस्तें कौंसिल के मध्य खजाने में यथेष्ट फंड एकत्र हो सके।

Secretary's Office }
The 8th July, 1932.)

Sd/- P. HURAD,
Secretary to the Council.

Church Council
 Received 134.33
 Register No. 72/
 Date... 8.4.33
 File... 52 of 6...
 Reply No.....
 Date.....

13/4/33.

C. C. समीप बिनय पत्र ।
 वजरिये इलाके चेयरमेन Rev. Mr. Schiebe किंकल ।
 पाद्री इम्मानुएल कुजुर की ओर से
 किंकल ७ एप्रिल १९३३ ई.

महोदय गण

सविनय प्रार्थना ऐसी है कि गल महीने के अन्त में मैं किंकल वापस आया। अपनी चर्च पत्रों को कुछ अच्छा पाया। मेरे गांव तरफ रहते समय वही विमारी जिसका खबर मैं दिसम्बर नोवेंबर १९३१ में दिया था तीन मरतबे हुआ पर बुखार जोर नहीं किया इस लिये उतना अग्रानक नहीं था तिस पर भी दूसर विमार होने के वजह कमजोरी बनी रहती है। थोड़ी दूर अपने जाने में बहुत थकावट मालुम करती है और कुहरते समय व्यतीत करती है तभी औरज से अपने दुःख को सहती है। कोई काम कर नहीं सकती है। धंगरिन के से सब काम होता है। मेरा विचार है कि हवा बदली वास्ते को अच्छे चिकित्सा वास्ते वास्ते कहीं ले जाऊं पर विमारी अग्रानक हो जाता है इस वास्ते डर लगता है क्योंकि डर वाट में बैसा हो जाने से कुछ करते न बनेगा।

आप लोगों को तंगी तकलीफ का हाल बताया जा चुका है। ऐसी मुसीबत में पड़े हैं बादरी तकलीफ बढ़ती जा रहा है। मान्यवर चेयरमेन साहब नौ मुक्त को जवाब दे चुके। वे आप मेरे लिये कुछ दे नहीं सकते हैं। सो आप लोगों के ऊपर सब टंक है। मैं नरोसा करता हूं कि ऐसी दशा में मुक्त छोड़ नहीं दूंगे।

Litua 1932 ka lge aur baki main main nahin sakta hun. M. Schiebe 8. IV. 33

मैं कई बात व्यवहार से बहुत खिजाया गया पर जो बात वाजीव है वह प्रगट होने में देर न लगेगी। कोई सोचते थे कि पादरी इम्मानुएल कुजुर काम छोड़ देगा पर मैं काम छोड़ नहीं सकता हूं। कोई कुछ कहे कोई कुछ करे इस के वास्ते मैं चिंतित नहीं हूं। वही पेरिश मेवल्ली की बात गांववालों की है। निवेदन है मेरा वाकी तलप देनी को अनुग्रह प्रदान कीजिये जिस्ते यह बिकट काल कोई अनुमान गुजार सकूं। संक्षिप्त हिसाब सिद्ध देता हूं।

B. C. Memo. No. 1470/21/33 7.52

आप लोगों का अग्रान दास.
 J. Kujur.

मात	सलीना तलप	कितना तलप मिला	कितना मिलना है	कैफियत
Bahi anusat Rev. J. Kujur ne paya:				
1931.			Rs. 189-0-0	at that 50%
1932.	Rev. M. Schiebe	Rs. 65-8-0		
	Maidli	Rs. 54-8-0		
	4 plus Pastor Grant	Rs. 120-0-0	Rs. 120-0-0	
		Rs. 50-0-0	Rs. 50-0-0	
		170-0-0	170-0-0	

M. Schiebe 8. IV. 33.

Church Council
 Received... 17.5.33.
 Register No. 20...
 Date... 13.5.33.
 File... 52...
 Reply No...
 Date...

17/5/33

To,

The Secretary, Lutheran Church Council
 Ranchi.

From Rev. S. Kula, Takarma, Rosa. (Ranchi)

13.5.33.

Mangabhar - Church Council ke members ko mera

ysusakar -

Main dinta purbak arjee karta hun ki
 mujhe Baribringa ke liye ek padri dijiye - karan -

a/ Rev. Jy. P. Tega ki hadli ab Govindpur ko gai.
 jese mujhe anek sahayta milte the,

b/ Takarma Flake ki lamhai & Chanvai praya 20x16
 mile hai - jo jungle aur paharon se bhara hai
 aur 12-13 hajar logon ki sewa ke liye padriyon se
 sambhao hai.

c/ Baribringa men jo Romi trap se laute hain
 unko phir se training dena jaruri hai.

d/ Hamare bahar aur bhitari Romi logon ka Charhai
 hai - Hamare ek Flake ke ander unka praya
 3 Flake parta hai.

So meri arj hai ki abar jo Candidate pad
 pane wale hain un mese ek ko CE meharhan
 kinkal men rakhe aur Rev. S. Page ko Baribringa
 men bhejne ki kriya karen - athwa CE jo
 uchit samjhe - per arj hai ki ek Mundari
 jaukar jawan ho -

phir bhi meri arjee hai kriya kar Candidate S. Page
 ko kashin bahar jaga dijiye. Karan Flake ko
 2 school + Candidate aur uper se ek padri ko sambha
 lahat hi muskil hai -

Darikhast 7 Flake members ke ray ke adhar per
 likhta hun. Meharhan CE mujhe apni durbalti
 men Chama dawe.

Ap logon ke agachin deo

Rev. S. Kula, Takarma

Church Council

Received... 17.5.33

Register No. 25

Date... 2.5.33

File... 38

Reply No.

Date

BIHAR AND ORISSA CHRISTIAN COUNCIL.

AS FROM

C. M. S. High School,

BHAGALPUR.

May 2nd. 1933.

My dear Friends,

At the last session of the B. & O. Christian Council at Ranchi the resolutions on EVANGELISM passed by the National Christian Council at ~~KANPUR~~ Nagpur were endorsed, and it was decided to call on our churches to make special Evangelistic efforts next cold weather. We are all . . . convinced that Evangelism can only be furthered by the . . . deepening of the spiritual life of the Church by such means as holding of Retreats for Pastors and Church workers, for . . . congregations and for special groups; and by the formation of Study and Prayer groups for men, women, and children.

May I, therefore, request you to do what you can to broadcast this message among your people and help them to arrange for such Retreats and Prayer groups. It is, probably, not too much to ask that arrangements be made for at least one such Retreat at a time ~~when~~ which will suit most of your Churches.

I shall be grateful if you will keep our Secretary, Mr. R. P. Pryce, Daltonganj, E.I.R. informed of your efforts to enable friends to help you with their ~~pr~~ prayers.

Yours sincerely,

S. K. Tarafdar.

(President of the Council).

[illegible]

Church Council

Received 10.6.33

Register No. 56

Date 12.6.33

File 10

Reply No.

Date

No. 2

18/6/33

To,

The Secretary, Church Council,
Lutheran Church, Ranchi.

Dated, Govindpur, the 12th. June 1933.

Dear Sir,

This is to inform you that under the orders of the Church Council Rev.C.K.Bhengra has given charges of the Ilaka of Govindpur over to me and that he has gone to Marcha Parish.

I am however sorry to say that I was not given any copy of the Church Constitution, Dand Byawastha, Minutes of the Church Council and the Mahasabha without which it is not possible to run the work. I therefore request you to kindly send me one copy of each of the documents which are absolutely necessary for running the work of the Ilaka.

Further I beg to inform you that Rev.Paulus Mundu who is expected to be here has not yet arrived. I think the time has now expired, he should have arrived by this time. Kindly make arrangements to send him here at an ~~early~~ early date so that work may not suffer.

I wish also to inform you that I have been given to understand that The S.P.G. Padri of Duru, Rev.Daud Bek baptised two of our children without any authority. Both of the children are from the same parents, of the village Ithe. Their father Prabhusahay Lakra is a compounder at Kulty. In his absence and without his consent his wife who was ~~an~~ a member of the S.P.G. Church before marriage, got the children baptised by the S.P.G. minister. Please see if it is regular. If not kindly take necessary steps against it and see that the said Padri does not interfere with us in future.

J.V.D. Liza
Chairman, Govindpur Ilaka.

महोदय, लुथेरान चर्च कौंसिल को मेरा बहुत

रिश्ता तारीख 20 वीं मई, 1933 ।

महोदय,

आपको मालूम होवे कि मैं लुथेरान
कौंसिल का पुराना कार्यवाही हूँ। मैंने इस कमीशन
में 1932 ई. के से अपना काम प्रचारण के लिए
आरम्भ किया और उस समय से लेकर 1933 तक
तक प्रचारण रहा। 1933 ई. के से मेरा
पदाभिषेक हुआ और उस साल से लेकर 1933 तक
दियांकेल पेरिस में पाद्री का काम प्रायः 33 वर्ष
तक चलता था। 1933 में मुझे बुढ़ापे के कारण
संडली के काम से छुटी मिली और लाहौर लुथेरान
मुझको C.C. ~~समय~~ को लोकर से माल न दिया जाता
पर C.C. के खर्चों में हमें भी कुछ नहीं दिया जा
1932 के लिये तो मुझे लुथेरान नहीं दिया जा
सका। मुझे अब मालूम हुआ है कि C.C. बुढ़ापे को
रोगी और कमजोर पादरियों के लिये उनको बुढ़ापे को
समय के ~~समय~~ वास्ते पेंशन व तौर उनको मदद
के लिये अनुग्रह से बन्दोबस्त कर रहे हैं। सो
मेरी आजी पछे है कि यह दया मुझ कमजोर
बुढ़े पाद्री पर भी किई जाय और जो पेंशन और
पादरियों को दिया जा रहा है सो मुझको भी अनुग्रह
से दिया जाय जिस दया के कारण मैं कौंसिल
का बहुत धन्यवादी हूँगा।

आपका आभ्यु
बुढ़ा पाद्री
महोदय
महोदय

दियांकेल
पो: ओ: तोरपा
जिला रींचो।

31/5/33

प्रहमानगर होटा नागपूर और आसाम के लुचेशन चर्च कौंसिल
के नार्थकारक सभासदों और सभासदों को पोषुसराय ।

महाप्रगण नाप सभों को विदित है कि वर्तमान में हमारे लिये
रहने का घर नहीं है, मैं ने बीते सप्रील कौंसिल में नार्थी कि-
या कि जिस घर में नार्थी हम रहते हैं इस घर के मालिक को
~~इस घर को~~ इच्छा नहीं कि लागे को हम इस घर में रहें,
सो मैं लिखा था कि इसी सप्रील के लाना में हमको यह घर
छोड़ना पड़ेगा, सो C.C. से हमारे देश का बन्दोबस्त किया जाय ।
कौंसिल से ता: 25-4-33 नोटिस मिला कि जारगो में पास्टर का घर
जेठ महिना से बनाने का आरम्भ होवे ।

घर बनाने का काम आरम्भ करने से पहिले मने घर का स्ट्रिमेंट
कर देना तो पाया गया कि नार्थी घर बनाने में कई बातों में
लक्ष्मिबिधा और ज्यादा खर्च होगा, नार्थी नार्थी घर बनाने में
प्रम: 50) मचास रुपैया ज्यादा खर्च होगा, और घर आयद स-
जुलाई या लागस्त महिना में रहने योग्य तैयार होगा । सो भी
घर कमजोर होगा, क्योंकि नार्थी काठ कमजोर और लक्ष्मिबिधा
मिलेंगे, आयद दो तीन वर्ष में घर रद्दी हो जायगा ।

परन्तु यदि वारिष बाद घर बनाया जाय तो घर बनाने का काम
हड़बड़ी से नहीं पर चीर से होगा, और विशेष कर लकड़ी मज-
बूत मिलेगा, जिस से घर कुछ वर्षों तक मजबूत रहेगा ।

और भी कि वारिष बाद घर बनाने से प्रम: 50) रुपैया कम खर्च
होगा । सो मैं C.C. के खजांची साहब के पास उपरोक्त बातों का
सारांश लिख भेजा, और खजांची साहब बाबू N. Mali के द्वारा
मुझ को खबर दिये कि नार्थी जारगो में घर बनाने का काम
मुबतानि किया जाय ।

नाप सभों को विदित हो कि जिस घर में नार्थी हम रहते हैं
इस घर के एक युवति का मामला 15 मार्च 1933 से मिजरा प्रचारक
पन में चलते लाया, और लान ता: 13 मई 1933 मंगवार पंचायत
को इस युवति के ब्यथिचार का दोष प्रमाण मिला, जिस से
इस युवति को मंडली दण्ड देना पड़ता है, और इसके साथ
युवति के माता पिता और भाई भी इस के दोष में सम्मत हैं
इस कारण वे भी मंडली दण्ड के योग्य हैं ।

सो इस घर में रहना हमारे लिये नार्थी लक्ष्मिबिधा है, और
मदि हम इसी घर में रहें तो हमों पर भारी लक्ष्मिचार होने का-

नन्दयन्त्र भय है ।

इस कारण C.C. से सविनय हमारी नज़र कि वर्तमान में हमारे लिये डेरा का बन्दोबस्त रंगी में किया जाय, जहां पर रहने हमारे बालबच्चे कुछ शांत से जीविना निर्बाह कर सकें, और उन को वहां पर कुछ शिक्षा भी प्राप्त हो सके ।

मैं तो आपने पेरिश के नन्दर घूमते हुए काम करता ही हूं वैसे ही मैं रंगी से आपके आपने पेरिश में काम करूंगा ।

दूसरी बात की, वही पुनर्जाति जो अविचार में पकड़ी गई इसका भाई मंडली पंचों पर कूड़ी नालिश पुलिस में दायर किया है कि वे हमारे घर में डकैती और बेइज्जती किये, सो अभी मोकदमा सिव्ही चाना में चल रहा है । सो C.C. से सविनय नज़र है कि C.C. का नमिशन यहां सिव्ही आपके अति शिघ्र हमारी सहायता करें ।

C.C. से सविनय मैरी नज़र है कि उपरोक्त दोनों विषय अर्थात् हमारे डेरा बन्दोबस्त करने, और सिव्ही चाना आपके हमारी सहायता करने में बिलम्ब न किया जाय । आगे शुभ ।

स्वीट में आप सभी का दीन दुर्रिमा सेवक

P.S. Kachhaph.

Mijra

27 May 1933

काम बहुत जरूरी और जल्दी का है इस कारण बिना इलाका यह नज़र भेजी जाती है, आशा है कि कार्यकार सभा इस नज़र को मंजूर करेगी । P.S. Kachhaph.

Church Council

Received 17.5.33

Register No. 22

Date 1.3.5.33

File 7

Reply No.

Date

#4
075733

Secretary Lutheran Church Council

Dated Simdega the 13th May 1933.

Sir,

Being an unfortunate victim to an unemployment in these days of economic distress, I would deem it a heavenly sent blessing if you would kindly take pity on a poor soul, and to provide me with the job under your most sympathetic commands.

As regards my condition I have already informed to you. Further I beg your honour would consider the best for me. And if you can not provide me with the job in Chotanagpore and ASSAM please be so good as to get the job in A.E. Mission. C. P. .

I therefore request your honour would consider my case most favourably and provide me with ^{the} job any where in the A.E. Mission C. P. . For yours this act of kindness I shall be ever greatitude to you and oblige.

I have the honour to be

Sir,

Your most obedient servant

Christo Chit Kujas

Simdega.

18/6/33

श्री युक्त महा मान्यवर झोटानागपुर और न्हासाम के लुथेरान चर्च कौंसिल के कार्यकारण सभापति और सभासदों को प्रेषित है।

महोदय मैं ने ता: ६-६-३३ को आपकी कर्जी लिख कर ता: ७-६-३३. पुरुषिया फ्लाका पंचायत में पेश किया, जिसे फ्लाका द्वारा मेरी कर्जी ८.८. में भेजा जावे। परन्तु पुरुषिया फ्लाका मेरी कर्जी को ८.८. में भेजना मंजूर नहीं किया, और कर्जी के पीठ पर लिख दिया कि—
Rev. P. S. Kachhha के होंसे दरखास्त का जवाब २५-१-३३ में फ्लाका दे चुका है, इस लिये ७-६-३३ का दरखास्त फिर से फ्लाका मंजूर नहीं करता है। ७-६-३३.

P. C. Punuria 7.6.33.

A. Kujur.

C. J. Subarno.

महोदय ता: ६-६-३३ को मेरी वह कर्जी जिसे मैं ता: ७-६-३३. पुरुषिया फ्लाका में पेश किया था जिसे फ्लाका द्वारा ८.८. में भेजने जिसको फ्लाका ८.८. में भेजना मंजूर नहीं किया उसी को मैं इस के साथ नहीं करके ८.८. में पेश करता हूँ।

८.८. से सविनय मेरी कर्जी है कि कृपाया हमारी वर्तमान अवस्था पर गौर करके मेरी इस अपील को विचार के लिये ८.८. में रखा जाय। ८.८. से हमारी विशेष निवेदन यह है:—

- I (a) ८.८. को यदि मांगते मालूम है कि पुरुषिया फ्लाका मुझ को आपने साथ सम्बन्ध रखना नहीं चाहती है—देखिये २६-१-३३ पुरुषिया फ्लाका मेरे विषय लिखके ८.८. में पेश किया है, इस से पटि-ले ता: २७-६-३३. पुरुषिया फ्लाका का संकल्प ८.८. में पेश हुआ है।
- (b) ~~जैसे~~ जारगो पेरिश हमारे पोषन का भार ठठा नहीं सकती है, क्योंकि पेरिश छोटा और दूर २ में लोगों की बसती है और पेरिश के बुझा प्रचारकपन से केवल बराबर सेंटरलाइज पेरिश में आता है, जारगो और मिजरा प्रचारकपन नहीं व सेंटरलाइज करते हैं, प्रया वे आप ही खर्च कर लेते हैं। कुछ दिनों प्रचारकपन फ्लाका पंचायत के सामने सेंटरलाइज करने से इनकार किया और हमारे रहते कभी सेंटरलाइज नहीं किया है।
- (c) वर्तमान प्रबन्ध अनुसार कर्जात ८.८. के संकल्प ता: २२ जून ३२ और ता: २५ से २६ अगस्त १९३२ के अनुसार जारगो पेरिश में रहकर हमों के जीविका का निर्वाह होना चाहते हैं।
- सो जब कि ८.८. की कृपा और आज्ञा है कि मैं जारगो पेरिश में

रहने जारगो पेरिश की सेवा करता रहूं तो नती नवश्यक है कि हमारी जीविका का सुप्रबन्ध C.C. से किया जाय, नन्घात हमारे ग्रेड का पूरा बेतन हम को C.C. से मिला करे, जिसे हमों का गुजारा हो सके और हम नपने बालकों को नही पर शिक्षा दिला सकें।

II यदि C.C. पूरा बेतन देकर हम को जारगो में नही रख सकते हैं तो C.C. से मेरी विनय है कि नृपायों मुझे रानीखटंगा में रखें, जहां पर रहने हम नपने जमीन से कुछ पा सकेंगे जिसे हमारी जीविका के लिये और नपादियों के अनुसार मदत मिल सके, और जहां पर रहने हमारे बालकों को कुछ न शिक्षा भी मिल सकेगा। वर्तमान में हमारी जीविका और हमारे बालकों की शिक्षा में बहुत ही कम्भावट है, हमारे घर में रहने के कारण हमारे जमीन में बीते वर्ष से चास नहीं होता मर्चा पड़ा है, दूसरी बात हमारे बालक रानीखटंगा में मालि मंगति शिक्षा पा रहे थे नन्घि इन की शिक्षा के विषय कैसा रोक टोक हो रहा है सो मैं C.C. को नपनी नर्जियों में स्मरणा कराते न्नाया हूं।

III हमारे डेरा के विषय :-

इस विषय में ने बारम्बार C.C. में नपनी नवस्था और नपनी नवश्यकता बताते न्नाये हूं, विमोष नर बीते वर्षात में हमों को इस विषय कैसा दुःख हुआ।

इस विषय लुखलिया इलाका में मैं नर्जी किया, इस विषय लुखलिया इलाका ता: 6-99-32 के पंचायत में पूंजवाब मिला है- 2 न संकल्प. Rev. P. S. Kachulihap के घर भाड़ा विषय- निम्न प न्नाबू नपने रहने के घर का बन्दोबस्त न्नाप ही कर लेवें।

P. C. Punuria
J. chaerman
4/1/33.

नन्त में ता: 26-5-33 C.C. में नर्जी किया और ता 26-5-33 इलाका के द्वारा C.C. में भेजने के लिये नर्जी दिया जिसे इलाका C.C. में भेजना मंजूर नहीं किया जो इसी नर्जी के साथ नन्घी किया हुआ है।

सो नन्घि नवश्यकता के कारण, नन्घात हमारे लिये डेरा न मिलने के कारण ता: 9-5-33 को मैं नपनी पत्नी और बालकों को रांची ले न्नाया हूं और रांची से मैं नपने पेरिश जारगो में जतायत नरते हुए काम कर रहा हूं, C.C. से मेरी नर्ज है कि मेरे नाने-

न्याने का यह खर्च हम को ८८ से मिले और जब लोंजारगो में हमारा डेरा न तैयार हो तब लों हम को रांची में डेरा मिले, और हमारा सामान जो मिजरा में पड़ा है उस को रांची ले न्याने का खर्च हम को ८८ से मिले, क्योंकि हमारे लिये जारगो में मित्रान^{का} घर न होने के कारण यह खर्च मांगा जाता है ।

IV २२ जून १९३३ ८.८. के संकल्प अनुसार जो मुद्द को साठ (६०) रुपैया ८.८. से पौना है सो बुझाया ८.८. से मुद्द को मिले, जब लों यह साठ रुपैया मुद्द को नहीं मिलेगा में तब लों ८.८. से मांगता रहूंगा, क्योंकि मैं बीते समय पैचा उधार में पड़ गया हूँ ।

V ता: १८-६-३३. मुझे बुकडिट में गिर्जा करना और प्रभोज कत्यादि देना है सो मैं रांची १६-६-३३ सफर जाऊंगा, यहां रांची में हमारे एक बालिका बिमार है सो मुझे न्यानेवाला सप्ताह रांची न्याना होगा बिमार बालक को देखने और डेरा का बन्दोबस्त के लिये, यदि चर्च और सिल मुद्द से और मुद्द जाने पूछना चाहें तो मैं उस समय रांची में हूंगा ८.८. मुद्द से पूछ सकते हैं ।

आगे छुट । प्रभु में आप का दीन दुःखिया सेवक

P. S. Kachchhap.

Pastor of Doo Jargo.
Manbhum

Ranchi
15 June 1933. }

महामान्यवर होटानागपू और न्यायाम के लुचेरान चर्च कौंसिल के
कार्यकादक समाधीत और सभासदों को, लुचेरान पुरुषिया इलाका
के द्वारा प्रेषित है।

महामान्यवर न्याय सभों को विदित है कि हमों के लिये घर न होने के
कारण हम लोग यहां वहां घूम चलते हैं, इस विषय में विचारने के
इलाका और चर्च कौंसिल में निर्णय करवा लाया है, नून में चर्च
कौंसिल से ६ मार्च १९३३ में हुआ गया कि जारगो में पाद्री का घर बना-
या जावे इस के लिये ९९० चिन्ता करेगी, यह घर बनाने का काम जेठ
महिना में किया जाय, ९९० के इस संकल्प की बात मुझ को ता. २५ अप्रैल
१९३३ को मिला। परन्तु इस जेठ महिना में घर बनाने का अनुविधा-
निकारनों से होने के कारण फिलहाल जारगो में पाद्री का घर बनाना
बन्द किया गया।

मैं ने पहिले ही इलाका और ९९० को प्रकाश किया कि वर्तमान प्रिजरा
के जिस घर में हम रहते हैं उस में हमारे रहने का सुविधा नहीं है सो
इसी महिना के अन्त में हम को यह घर छोड़ देना पड़ेगा। देखिये ता. १२-४-३३
के मेरी लर्जी जो इलाका के द्वारा ९९० में पेश है।
सो हम ३१ मई १९३३ बुधवार प्रिजरा के इस घर को छोड़ दिये, और १ ली
जून १९३३ हम अपने बालकों को लेकर रंची चले गये हैं, और रंची से

मैं अपने पेरिश जारगो में काम कर रहा हूं।

मैं ने अपने लर्जियों में पुरुषिया इलाका और ९९० को बताते लाया हूं:-

- (१) हमारे बालकों की शिक्षा में कैसा रोका है।
- (२) जारगो पेरिश की मंडली नामदनी से वहां के कर्मचारियों का भ्रष्ट पोषण
कैसा कठिन बरन आनेवाला है।
- (३) वर्तमान प्रबन्धानुसार पुरुषिया इलाका के नामदनी में के चर्च कौंसिल
का प्रदत्त रूपैया मिलाके दोनों पाद्रीयों को समभाग तनका बांटा
जावे। देखिये २२ जून १९३२ की चर्च कौंसिल के संकल्प को।
इस संकल्प के अनुसार ९९० की ओर से माहवारी १२ रूपैया के हिसा-
ब से पांच माह लर्जीत १९३२ के जून से अक्टोबर तक ६० रूपैया पुरु-
षिया इलाका को मिला जिस से इलाका हम पाद्रीयों को बेतन
देने में सहायता पाई, परन्तु १९३२ के नोवेबर से आज तक हमारे
तनका के लिये ९९० से कुछ नहीं लाई है, जिस के कारण हमारे
भ्रष्ट पोषण में बहुत ही कठिन बरन आनेवाला जान पड़ता है।
चर्च कौंसिल की इच्छा और आज्ञानुसार मैं जारगो पेरिश में रहके,
इन्टर की सहायता से मैं वहां पर काम करता रहूंगा, परन्तु चर्च
कौंसिल से सविनय मेरी लर्जी है कि:-

- (१) हमारे जीविका का पूरा बन्दोबस्त किया जाय जिस में हमारे
जीविका का निर्वाह हो सके और हम अपने बालकों को नहीं
दूसरे जगह खर्च देकर शिक्षा दिया सके क्योंकि जारगो में हमारे-

बालकों को शिक्षा पाना चाहते हैं। जो जारगो में रहने हमारे जीविका और हमारे बालकों को शिक्षा के लिये मेरे तनखा के ग्रेड से भी ज्यादा हम को दबकार है, क्योंकि जारगो में तनखा सिवाय और कोई दूसरा हमारे लिये नहीं है।

(२) जब लों हमारे लिये जारगो में घर तैयार न हो तब लों हमारे रहने के डेरा को सुपबन्ध किया जाय, जहां पर रहने हमारे बालकों को शिक्षा में रुकावट न होवे। और वहां से जारगो में शिक्षा के लिये हमारे बालकों को भेजा जाय।

(३) यदि उपरोक्त बन्दोबस्त न हो सके तो मुझे को कहीं दूसरे स्थान में बदली किया जाय, जहां पर हमारा प्रतिपालन हो सके, और वहां पर हमारे बालकों को शिक्षा मिल सके।

(४) मेरी ऊर्ध्व निम्न कार्यो का जमान मुझे ता: २५-४-३३ को ८.८. से मिला जिस का संकल्प ता: ६-३-३३ चर्च मौंसिल के कार्यकारण सभा द्वारा इस प्रकार हुआ है:- कि संकल्प (क) पाद्री कच्छप जो १५३१ तलप विषय ६० साठ रुपैया बकाया दाबी करते हैं "सो ग्रहण योग्य नहीं है," क्योंकि इन को जो प्रतिज्ञा मिली सो खजाना के दशा के अनुसार थी फिर १५३२ में जो तलप इनको दिया गया सो और फलाकों के पाद्रीयों को आपेक्षा अच्छा था।

इस पर मैं कहता हूं २२ मई १५३१ में चर्च मौंसिल की प्रतिज्ञा खजाना की दशा अनुसार नहीं थी पर जारगो पेरिश की आवश्यकता अनुसार थी। क्योंकि ता: २५ फेब्रुवारी १५३२ को ८.८. के सेक्रेटरी सा. प्रिंस डिपार को लिखे हैं कि:-

As the Council has undertaken the burden of paying his salary and house rent for another year.

और फिर कि २२ मई १५३१ के ८.८. के संकल्प के समय यह ध्यान नहीं था कि और फलाकों के पाद्रीयों को क्या मिलता है, पर संकल्प (ग) में है कि जून १५३१ से पाद्री प्रमुसहाय कच्छप इला जारगो भेजा जाय और इस का जो तलप स्कूल के अनुसार है सो मौंसिल देगी, यह प्रबन्ध रुकावट के लिये जारी रहे। सो १५३१ के जून से १५३२ मई तक वर्ष का हिसाब ता: १२-४-३३ मेरी कार्यो जो फलाकों के द्वारा ८.८. में पेश है उस के अनुसार ६० साठ रुपैया मेरा बाकी तनखा मुझे ८.८. से पाना है।

सो ८.८. से स विनय मेरी लार्ज है कि कृपाया ६० मेरा बाकी तनखा मुझे मिले जिसमें मैं इधर पैसा से कुछ कार्या या सवुं। नागे शुभ प्रभु में आप का दिन दुःखिया सेवक P. S. Kachchhap

Patron of Ilo Jargo
Mambhane.

6 June 1933. Purnia

Rev. P. S. Kachhap m - D G - 6/1/1960 -

P. C. Fumero 7/6/33.

C. J. Subarno (8)

1. The Council has undertaken the burden of
 having his balance and house rent for another year.
 2. The Council has undertaken the burden of
 having his balance and house rent for another year.
 3. The Council has undertaken the burden of
 having his balance and house rent for another year.
 4. The Council has undertaken the burden of
 having his balance and house rent for another year.
 5. The Council has undertaken the burden of
 having his balance and house rent for another year.
 6. The Council has undertaken the burden of
 having his balance and house rent for another year.
 7. The Council has undertaken the burden of
 having his balance and house rent for another year.
 8. The Council has undertaken the burden of
 having his balance and house rent for another year.
 9. The Council has undertaken the burden of
 having his balance and house rent for another year.
 10. The Council has undertaken the burden of
 having his balance and house rent for another year.

[illegible]

Office 1933. Dec 1933

Church Council
Received 24.6.33
Register No. 65
Date 24.6.33
File 1
Reply No.

To

The Executive Members of the Church Council, G.E.L. Church,

R A N C H I .

From

Mr. Augustus Lakra, G.E.L. Church Compound, Ranchi.

Dated the 24th June 1933.

Gentlemen,

May I humbly ask your kind favour to deign to accept my request and receive me along with my wife into the Lutheran Church. The reason of my joining the Lutheran Church is that I should like to regulate and legalise our marriage which was declared illegal by the court. Some four years' ago I applied a similar Petition to the same Council and the Executives of it, found the Verdict of the Court as a sheer objection to the legalization of our marriage, and in consequence they laid aside the reception for the distant future when the circumstances would offer a better chance. According to the proverb " God never shuts all the doors, but always opens one or the other " I hope that there is for me a way to be received into the Lutheran Church and then our marriage can be regulated and legalised according to Your constitutional marriage act law. I suppose that all the Executive members will agree with my conception because there is no objection to our reception in-to the Lutheran Church as far as the Civil or Ecclesiastic laws are concerned; because the Civil law allows the freedom of religion, and God also respects the liberty of free will therefore it is quite evident.

II

Then the second point: We are up to now formal members of the Roman Catholic Church, and as such we are still bound by its laws and regulations, and hence the verdict of the court can always stand against our marriage although we are the material members of the Lutheran Church. The Canon law says that "obligatio legis cessat cum subjecto cesso" that is the obligation of law ceases when the subject ceases to be." Therefore when we are formally received into the Lutheran Church, we cease to be the members of the Catholic Church in either sense. The Catholic Church then can never even circumventionally enforce its laws against the dissolution and legalisation of our marriage, because we are then no more its part and parcel.

But now it remains for the Executives to receive us into or reject us as well from their Church, this I leave to their judgement. But all the same I must thank them for the step they have taken in our behalf.

I remain

Gentlemen,

Your humble and obedient

servant *Augustus Lukra*

28.2.35 Mr. P.C. Chowdhury's Statement.

* Q. About 15 days ago when Babu S.C. Das Gupta returned from Calcutta he asked me the result of the voting in the Managing Committee I told him that Mr. Topono had voted for the Principal. He said that he knew this that Mr. Topono would vote for him.

I heard that the President would be brought in the car and I do not remember having said that the President would vote against Mr. Lakra. I do not remember at all having said this. Even now I do not remember of such a thing.

Mr. A.L. Tirkey's Question - On the 14th of December the Gossner Day I and Mr. Chowdhury were talking also Mr. Schernath, and the Principal and Rev: J. Topono were talking in some other place and Satish Babu also was present. About that day's conversation Mr. P.C. Chowdhury said later that he heard from Satish Babu that even if Rev: J. Topono is brought by the Car by the Council he (Rev: J. Topono) said he would not vote against Mr. Lakra ! I ask Mr. Chowdhury if there was a talk between us like this ?

Answer. There was a talk but I do not exactly remember what I had said. We three i.e. myself, Mr. Tirkey and Mr. Schernath we were talking together on the 14th of December. Satish Babu told me that Mr. Topono, Mr. Soy are not so much against the interest of the school and they would have nothing to say against the Principal. I had heard this on the 3rd or 4th of January from somebody that the President would be brought in a car but whether I said this to Mr. Tirkey or not I do not remember.

I might have told and might not have told Mr. Tirkey about the matter I do not remember.

On the 3rd or 4th of January in our discussions we were talking that whether the President will vote for or against the Principal was doubtful.

Inspection remarks on the Gobindpur Lutheran M. E. School by the D. I/S, Ranchi, dated 25. III. 33.

Church Council

Received 12. 5. 33

Register No. 10

Date 12. 5. 33

File 24

Reply No.

Date

I visited the G. E. L. M. E. School at Gobindpur this day. There are 9 teachers on the staff at present against 10 at my last visit. They were all present. 154 children on the rolls out of a total of 158 on the rolls as follows :-

Class VII 11/11, class VI 36/37, class VA 21/21

.. VB 18/19. .. IVA 22/23. .. IVB 20/21

.. III 12/12. .. II 1/1. .. I 13/13

Total 154/158. The attendance is fairly satisfactory but the lower classes are very poorly represented and I doubt very much the wisdom or utility of the retention of class II with 1 child on the rolls. Would it not seem to be more in the fitness of things to remove the only boy of class II to the local girls' U.P. School.

The school buildings are the same and I notice no change for the better in their same that they look but brighter than at my last visit. I am afraid, however, the building do need a thorough overhauling. The existing supply of furniture and equipment consists of long

The boy is not sent to the girls' School because he is satisfactorily looked after.

Noted.

boy of class II to the local girls' U.P. School.

The school buildings are the same and I notice no change for the better in their ~~same~~ that they look but brighter than at my last visit. I am afraid, however, the building do need a thorough overhauling. The exis-

Noted.

ing supply of furniture and equipment consists of long benches and high desks (long) which have mostly become far too rickety and badly need petty repairs. Dual desks are in use in the top two classes but their number is not quite up to the requirements of the classes. 10 more single desks may be purchased if funds permit. The black boards require a fresh paint in a number of cases.

Noted.

Noted. The Hd.m. has been asked to see to this.

A start has of course been made with a school garden but the garden cannot be said to be in thriving condition. There seems no reason why the best should not be made of every inch of the space available for garden and why the teachers and the taught should not find it possible to grow vegetables as well for their consumption.

The Hd.m. has been asked to see to this.

I am glad to notice an attempt at a Sun-dial.

There are 3 G.T's (non-metrics) 1 metric G.T.
1 B.A. and 4 M.V.G.T's. The staff seems well qualified.
The Headmastership changed hand since my last visit and
the present incumbent took over charge of the school on
the 10th of August, 1932. The teachers have been paid
up to February, 1933.

The monthly cost of upkeep of the school is Rs 266/-/6.
namely:- teachers .. Rs 239/-. Library.. Rs 2/- .Prize..
nil. building repairs.. Rs 5/-. Pr. fd contribution..
Rs 7/-/6; contingencies. Rs 13/-. This is met partly from
the monthly Govt grant-in-aid of Rs 86/-. and a fee income
of Rs 88/- on an average. the balance being met from con-
tribution from the Church Council. The balance at the cre-
dit of the school at the close of February last was
Rs 246/15/9 made up as follows :-

1. Athletic fund.....	Rs 61- 0- 0
2. Library	.. 41- 1- 3
Building	.. 105- 0- 0
4. General cash	.. <u>39-14- 6</u>

Total Rs 246-15- 9

There is no means of checking these as the Pass books

The Pass Books are kept
in this office be-

are stated to be with the Head Supervisor. The auditor-

2. Library 41- 1- 3

Building 105- 0- 0

4. General cash 39-14- 6

Total Rs 246-15- 9

The Pass Books are kept in this office because the accts are in the Ranchi P.O. It has been found very inconvenient to the school if the books are taken to the school because of the deposit and withdrawal of the money from S.B. The auditor did not urge the books to be kept in the school but if required it will be done.

Noted.

The attention of the Hd.m. has been drawn to this.

There is no means of checking these as the Pass books are stated to be with the Head Supervisor. The auditor's last report was not forthcoming when called for. This should be kept in the school premises and a copy of it may, if necessary, be kept by the Head Supervisor. The records were checked and necessary instructions were given. I am glad the school is now able to pay its way but it won't do to live from hand to mouth and steps should be taken to ensure a reasonable margin as provision against a rainy day.

School Library has not been enriched and it is a pity to find that the best has not been made up to date of the books available, in so far as the teachers and taught are concerned.

I think no pains will be shared to make the most of the books in the school library in the near future.

There are two ~~master~~ hostels with 20 and 30 boarders in end. There are 9 Hindus and 1 Muhammadan while the rest are aborigenals. Last year's examination result are as follows :-

Class VII 16/18, class VI 13/26, class V 34/50

.. IV 34/47. .. III 9/14. .. II 8/10

.. I 11/18. Total 125/182.

Noted.

The figures speak for themselves. The result of the last M.S.C. exam are much better than in previous years but the lower classes are not properly taken care of. The headmaster should closely supervise the work done in the lower classes, as no sound super-structure is possible on a weak foundation.

Classes were examined with the following results :-

Class III-- Arithmetic...poor; none did the sum set. Hindi Composition.. done on old lines still. I wonder why the headmaster was present at the last District Conference and should as such have made a vigorous start on the new and up-to-date lines long ago. Use of words of the text, in sentences in a variety of ways apart from that in the text has not been attempted though it should invariably be kept in view. Pronunciation. poor. Children should be made to use their brain and the knowledge they have acquired.

Class IVB.. (8 high desks and 8 benches). Arithm..

apart from that in the text has not been attempted though it should invariably be kept in view. Pronunciation. poor. Children should be made to use their brain and the knowledge they have acquired.

Class IVB.. (8 high desks and 8 benches). Arithm.. poor. Only Budhnath Sahu could do the sum set. Comp.. grossly neglected. Khatas far too untidy. Pronun-- poor. English conversation.. much below the mark.

Class IVA .. English conversation.. poor. Arithm..

none did the sum set. Khatas not dated by the children not neat and tidy and were found to abound in gross mistakes of spelling and composition. Moreover, they were badly disfigured by foreign matter. Rachna.. done on old lines. New lines were pointed out.

VB.. English conversation.. satisfactory, better than in class IV. Arithm.. 2 did the sum set. Dicolention between Subject and Predicate has not been driven home to the children.

Dicolention

VA... ~~Dicolention~~ between between Subject and Predicate has not been driven home to the children. Boys require plenty of drilling in English conversation. Map-drawing

The Hd.m. has been urged to supervise the works of his assistants more closely ~~xxxx~~.

not done to scale.

Noted.

Class VI.. (15 dual desks) : Map drawing not done to scale. English conversation.. much below the mark. Map drawing:- only 1 /sofar and very and very poor staff at that. History.. should be taught more intelligently.

Noted. The attention of the Hd.m. has been drawn to this.

Class VII.. The same remarks as in class VI apply to this class. Boys' khatas should be neat and tidy, and regularly dated by the boys while the teachers are expected to scrutinise them carefully. Composition.. is badly neglected. Subject as selected are most unsuitable and the scheme should be recast at once on the lines suggested and duly illustrated this day.

Sd/- Harbans Lall,

District Inspector of Schools,

Ranchi.

25. 3. 33.

Memo No.

Ranchi.
25. 3. 33.

Memo No.

Dated Ranchi, the May, 1933.

Copy with marginal notes by the undersigned is submitted to the District Inspector of Schools, Ranchi.


Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No.

Copy with marginal notes is forwarded to the Headmaster, M.E. School, Gobindpur, for information, compliance and guidance.


Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 701

Dated Ranchi, the 12th May, 1933.

Copy submitted to the Church Council, Ranchi, for information.



Inspection remarks of the D. I/S, Ranchi on the Kinkal M. E. School dated 21. 4. 33.

Church Council

Received 12. 5. 33

Register No. 11

Date 12. 5. 33

File 24

Reply No.

Date Noted.

I visited the Govt aided G. E. L. M. E. School at Kinkal this day. The local S. I/S of the schools was also with me. The school buildings have since been repaired and whitewashed and look fairly decent. Classes III-VII are provided with separate class rooms, but classes I & II is still sit on the verandah which hardly satisfactory as it has to be put up with until more funds are forthcoming.

The staff consists of 5 vernacular teachers and 2 English teachers as at my last visit. They have been paid up to March last. There are 2 L.P. scholars who have not been paid as yet. There is no U.P. scholar.

The following is a statement of the monthly income and expenditure on the upkeep of the school :-

Particulars	Income	Particulars	Expenditure
1. Govt. G.A.	57/-	Teachers' sala.	184/-
2. Mthly fee receipt	30/-	Prov. fd	5/5
3. Local contrib	114/5	Libr. buildf rep & contingencies	12/-
Total	201/5		201/5

2. Mthly fee receipt	30/-	Prev. fd	5/5
3. Local contrib	<u>114/5</u>	Libr. buildf rep & contingencies	<u>12/-</u>
Total	201/5		201/5

The balance at the credit of the school at the close of March, 1933, was as detailed below :-

1. To the General Cash book		Rs 22-12- 0
2. .. Athletics		5- 9- 0
3. .. Library fund		1- 1- 9
4. .. Contingent fund		0- 0- 0
5. .. Building repair fund		<u>32- 9- 9</u>
Total		Rs 62- 0- 6

Class II-VII sit on dual desks while class I sits on mats with nothing in front. I am glad dual desks have since been re-arranged.

The school library has not been since enriched by the addition of upto date publications on the art of teaching, but even so it is not being timed to account by the assistant teachers. The boys are stated to take out books from time to time. It is a pity indeed to find that the boys are showing themselves fairly sensible on this

The attention of the
nd.m. is drawn to this.

score, but not the teachers who are supposed to set
an example to the boys. I would again urge the Head
master to bring pressure to bear on the teachers as
well as the taught to have frequent recourse to out
books as that is the only way to foster a love of reading

34 admissions were made this year. The results of
the last annual examination are as follows :-

Class VII 7/12, Class VI 17/20 class V 17/20
.. IV 15/18 .. III 19/21 .. II 9/13
.. I 9/9 Total 92/111.

Noted.

The M. S. C. results do not compare favourably with
the results in other classes and no pains should be
spared to see that the school secures decidedly better
results in future. The following is the No. of free
studentship holders :- Class VII. 1½, class VI 1½
class V 1½, class IV 4 class II 2 class I nil.

Out of 111 on the rolls, 96 were present as follows
VII 18/21, VI 17/18, V 11/12, IV 21/25, III 7/8
II 11/15, I 11/12. The attendance is fairly satis-

There are two hostels (1) for boys with 25

class V 14. class IV 4 class II 2 class I nil.

Out of 111 on the rolls, 96 were present as follows
VII 18/21. VI 17/18. V 11/12. IV 21/25. III 7/8
II 11/15. I 11/12. The attendance is fairly satisfactory. There are two hostels (1) for boys with 25 boarders and (2) for girls with 16 boarders. The superintendents of the boys' hostel is given Rs 3/- a month while the lady superintendent of the girls' hostel takes nothing for supervision.

Noted.

The dates of the last six meetings of the managing committee are 19.1.33, 8.12.32, 27.10.32, 14.7.32 and 28.6.32. The meetings may well be distributed evenly.

There are 9 B.E.'s and 14 wall maps. Of the pupils on the rolls 8 are Hindus, 104 aboriginal ~~christians~~ and 4 aboriginal non-christians.

Classes were examined with the following results :-
Class..VII.. Arithm.. 9 did the sum set. Geom..poor.
Use of difficult words of the text in a variety of ways should be encouraged. Drawing.. good but exercise should be invariably dated. Engl.. average. The boys need plenty of drilling at conversation.
Class VI.. Just as in class VII. Slip-shod writing should never be put up

never be put up with. Hindi comp.. should be done on the new lines as pointed out this day.

Class V.. Only Manohar could do the sum set. in arithm. Use of words of the text in a variety of ways in sentences should be practised on an ~~exerciseline~~ extensive scale. Engl. Conversation... fair, but more practice is needed.

Class IV. Engl conversation.. admits of considerable improvement and the boys should be given plenty of drilling. Arithm.. has not helped the children thus far to use their brains and rules do not seem to have been driven home to the children. Reproduction.. partly verbal and parrotlike which should be discouraged. Use of words in sentences is being taught.

Class III.. Notation.. below the average. Composition-- done on old lines. Geogr.. begun but much more remains to be still accomplished.

Class II.. Below the standard.

Class I.. Reading fair. Progress.. fairly satisfactory. Analysis of sentences should be emphasised. The use of Kamachis was explained and illustrated.

to be still accomplished.

Class II.. Below the standard.

Class I.. Reading fair. Progress.. fairly satisfactory.

Analysis of sentences should be emphasised. The use of Kamachis was explained and illustrated.

Sd/- Harbans Lall,

District Inspector of Schools, Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the May, 1933.

Copy with marginal notes by the undersigned is submitted to the District Inspector of Schools, Ranchi.

N. S.
Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No.

Copy with marginal notes by the undersigned is forwarded to the Headmaster, M. E. School, Kinkal, for information, compliance and guidance.

Memo No 704

Dated Ranchi, the 12th May, 1933

*Copy submitted to the Church Council, Ranchi
for information*

N. S.
Head Supervisor,

Lutheran Schools, Ranchi.

The Pastor

Paulus Tiki

G. E. L. Compd.

Chai-bassa.

Umbulbaha (Jaunpur)
12/2/33

Mangawat Padi Sahab Mita P. Tiki
Sapariwar Yishusahay Ashis.

Hi 12/2/33 Paulus Maluti ka Drishapan yaham
hua. Ye Gopinathpur (Maurbhong) mein jine khane ko
gaye hain. Hamare Lutheran ghar wahan 7 hain,
aur andaj prani 27 hain. Aur S.P.G. andaj 25-30
ghar hain. In bhaiyon se sunne se dukh ki bat
yahi malum parta hai ki Snan (balak) Drishapan
Thermkhoyak Snan, adhi sab kam S.P.G. Pastor
Kathari ka jata aur unko kam kar deta hai.
Ye bhai aag ek pracharak mangte hain or
Sacrament sambhanti sab kam ham Lutheran
Pastors se karane mangte hain ie. we ap ko
mangte hain. Sacrament dukh ka bishay leu
inse mujhe malum hua ki Chhatrasa
kahin 3, 4 din ka rasta hai. So ap ko wahan
Jana ana kharch barch mein kitna takhleef
hogi? Kyajane jitna kharch hoga uska
to hessa ap ko undain milegi ya nahin?
Alawe is halat mein ap ko ek pracharak

to wahan thahsana bli ankhon se kuch
parta hai. Mujhe yahi dar hota hai ki hoto
ye hamare Lutheran bhai bahin lag ex din
S.P.G. mein samil honge. Kyunki hamare
kisi Lutheran Pastor ko wahan aya pahunchna
bhi mushkil hai. Aur ki S.P.G. Pastor wahan
Samay 2 par (Kathari se) jake mandli sambhanti
sab kam kar deta hai. So ap in bhaiyon
ke sath is bahat mein kuchh bat chit
karenge. Main is Paulus Jundu ko yaham
confirmation nahin dena chaha balki ap ke
par bhejne chaha.

Yishusahay ap subhon ko mile
Hain lag Ishwar ki Krupa se aaj kal sab
kon Chale - Change hain.

Ap ka Mita

P. T. O.

P. T. O.

Church Council
 14.6.33
 60
 14.6.33
 10A.
 To
 Entry No.

18/6/33.

The Secretary,
 Lutheran Church Council,
 Ranchi.

Chai Ram
 14-6-33

मान्यवर महाशय

आप का मेल योमुस्वाद्य ।

मैं, मृत पद्वी P. Manki, यह चिट्ठी जिसे उस ने मेरे पास भेजी थी आप के पास भेज देता हूँ कि सौ सज्जों भरला हूँ कि C. C. गोपीनाथपुर (मयूरभंज स्टेट) के लूपरेन आई बहिनों को सेवाकार्ड के लिये कोई बन्दोबस्त वृत्तियाँ कर दें। उन की सेवाकार्ड के लिये पहिले एक केर कोई बन्दोबस्त पिया गया था लेकिन माकूम हुआ कि वह पैसे नहीं चल सका।

मैं ने मृत पद्वी को चिट्ठी का जवाब 23-3-33 में दिया था और यह लिखा था कि जब मैं और आप संगामी महासभा के लिये रांची जायेंगे तब हम लोग वहाँ आपस में बात बिचार करके गोपीनाथपुर के लूपरेन को सेवाकार्ड के बन्दोबस्त के बारे में एक सज्जा C. C. में पेश करेंगे। लेकिन आपसोच की बात हुई कि मृत पद्वी की महासभा में बिचार के सबब इजिर नह हो सके। मैं ने इतने दिनों तक उपरोक्त सज्जा C. C. के पास भेज न सकी।

आगे भुक्त

P. Tinkey.

Inspection remarks of the D. I/S. Ranchi on the Korenjo M.E.
School dated 22-4-33.

Church Council

Received... 12.5.33.

Register No. 12...

Date... 12.5.33

File... 24

Reply No.....

Dubb.....

I visited the G.E.I.M.E. school at Korenjo this day

There are seven teachers on the staff as follows:-

- 1 Hd master Babu Nathaniel Topone I.A. 7 Years Rs 55/-
- 2 2nd master Babu Ymas Bage Matric 14 Years Rs 40/-
- 3 3rd master Babu Gessner Minz Matric C.T. 17 Years Rs 35/-
- 4 Hd Pandit Joseph Topone Matric C.T. 5 Years Rs 30/-
- 5 3rd Pandit Babu Suleman Minz V.M. 13 Years Rs 24/-
- 6 3rd Pandit Babu Philip Bage M.E.C.T. 17 years Rs 15/8/-
- 7 4th Pandit Babu Patras Topone M.E.C.T. 16 Years Rs 15/-

The number on the roll is 111 out of whom 98 were present as follows Class VII 10/13, Class VI 17/19 Class V 24/27 Class IV 23/26 Class III 9/10 Class II 12/13 Class I 3/3 = 98/111

12 months ago the number on the Rolls stood at 137. The numbers have thus sunk considerably. There were only 32 admissions this year. The cost of up keep of the school on staff alone is Rs 214/8/- apart from another Rs 25/- or so on account of other charge or Rs 240/- a month in round

12 months ago the number on the Rolls stood at 137. The numbers have thus sunk considerably. There were only 32 admissions this year. The cost of up keep of the school on staff alone is Rs 214/8/- apart from another Rs 25/- or so on account of other charge or Rs 240/- a month in round numbers against an income of Rs 122/- from Govt grant and fees taken together. The balance of Rs 118/- a month is thus met from contribution by the Church Council.

Portion of the tin roof blown down two years back is being repaired with new tins. Doors are fitted with glass panes. the floors will be attended to if funds allow.

H.M.

Noted

The buildings are in the same condition as at my previous visit. I understand steps are in progress for necessary repairs. If funds permitted the floors in the several class rooms could well be cemented.

Classes IV-VII sit on dual desks, while classes I-III sit on long mats with long desks in front. There are 9 B.B.2/ and 15 wall maps. The existing supply of furniture and equipment, is thus nearly adequate, though a fresh paint in a number of cases could more than repay in the long run and seems eminently desirable.

There is a hostel with 38 boarders, 6 of whom are girls, who live in a separate building under the care of the H.M. The prescribed registers for the hostel will

Noted.

The Hdm. is urged to put pressure on his assistants to make use of books to widen their general ~~and~~ knowledge.

have to be introduced. Records and registers were checked and were found in order. The school library has since been slightly enriched by the purchase of a number of juvenile publications, but as there is no column in the catalogue to show the date of purchase, it is difficult to make out the precise year in which they were purchased. A fresh column should therefore be added showing the actual date of purchase, of each book in the school library. It is again disappointing to note that the teachers have given themselves little or no trouble up to date to turn to account the school library, in spite of my ~~explicit~~ instructions on the same at my last visit. The case of boys ~~can~~ thus be easily imagined. They ~~seem~~ likewise to have ~~not~~ taken a leaf out of their teachers book and have not availed themselves of the opportunity to read out books. Their outlook is thus necessarily far too hollow and limited and being solely confined to text books, they seem to move in the same old grooves being quite at a loss to answer such questions as require some thinking on their part. This won't do. The Hdmaster should bring

their out look is thus necessarily far too narrow and limited and being solely confined to text books, they seem to move in the same old grooves being quite at a loss to answer such questions as require some thinking on their part. This won't do. The Headmaster should bring effective pressure to bear on his assistants as well as the boys and girls to make frequent use of out books to widen their general out look.

Last years examination results are as follows
Class VII 7/18, VI 10/14, V 17/25, IV 24/37 III 6/7 II 6/8, I 9/12. The result of the last M.S.C. examination are disappointing beyond measure and compare very unfavorably with the result in other classes. Class promotion should not therefore be freely given henceforth..

The rules for collection of fees and realization of fines after the last date as fixed in the Code seem thus far to have been honoured in breach rather than observance. This should be stopped and the rules of the Code on the present should be duly enforced henceforth.

There are 2 Hindus, 107 aboriginal Christians and 5 aboriginal non-Christians.

Classes were examined with the following results

Noted

Noted.

Noted.

Class VII Arithmetic poor. The standard in this subject is far too low. Geometry poor. English conversation leaves plenty of room for further improvement. The teachers 1st and foremost task here seems to consist in the breaking of the pupils' shyness. They should be made to express their ideas freely in English on different topics as in class VIII they are required to do all their subjects through the medium of English. Map drawing should be done to scale and ^{no} guess work should be put up with.

Noted.

The children's exercises should be duly dated. Hindi Composition is still done in the old line. Necessary instructions were given for the teacher's future guidance. Use of words in sentences in a variety of ways apart from that given in the text, should ever be kept in view. ^{class VI} Class VI, The same remarks apply to Class V. Constant use of maps is necessary. History requires close attention. Boys and girls need plenty of drilling in English conversation. Exercise books of the children should be carefully scrutinised. Composition done on old lines. New lines were printed out for the teacher's future guidance. Schemes were not signed up to date. Class IV The same holds good for the class IV.

The balance at the credit of the school at the end of March last was as follows

	Rs- As- P
1 General cash	82-7-1
2 Library	6-4-6
3 Contingent	38-2-6
4 Building	40-13-9
5 Athletic	53-10-9
6 sewing	nil
7 Examination	35-0-0

The amount in the hands of the Hd master was found to be over Rs 40/- which is in excess of the limits laid down in the Code. The Hd master's attention is again drawn to the desirability for the observance

The Hd.m. has been urged to deposit the surplus money at once in the P.O. S.B. over and above Rs 10/-

of the relevant ^{rules} of the Code on this point.
The S.I. of Simdega West was with me.

Sd/

Harbens Lall
District Inspector of Schools
Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the 12th May, 1933.

Copy with marginal notes by the undersigned is for Submitted
to the District Inspector of Schools, Ranchi.



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No. 707

Dated Ranchi, the 12th May, 1933.

Copy forwarded to the Church Council, Ranchi, for information.



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No.

Dated Ranchi, the 12th May, 1933.

Copy forwarded to the Headmaster, M. E. School at Keronje, for
information, compliance and guidance.



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Church of India

Received... 33

Register No. 229...

Date 1.5.33 The Church Council,

File 57 G.E.L. Church Council of Chotanagpur and Assam, Ranchi.

Reply No. Sir,

Date.....

No. 649

11/5/33

Ranchi.

May 1, 1933.

In obedience to the speech given by the President of the Church Council in the last Mahasabha I beg to offer myself as one of the propaganda workers in one or two of our Munda ~~ixix~~ Ilakas where my services ^{may} be helpful to our people to promote our Autonomy.

Should this of my proposal ~~be~~ taken into favourable consideration I would request the Council to so arrange that my office work in Ranchi is run and conducted by some one who always lives in Ranchi because I may be away from Ranchi for weeks in my duty of the propaganda work.

Yours sincerely,



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Church Council

Received... 33

Register No. 228..

Date 1.5.33

The Church Council,

File St. 24 G.E.L. Church of Chotanagpur and Assam, Ranchi.

Reply No. Sir,

Date

No. 650

33
May 1, 1933.

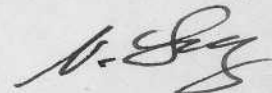
Ranchi.

May 1, 1933.

In view of the fact that Rev. J. J. P. Tiga, headmaster of the Takarma M. E. School, resigned his headmastership in the time of the last Mahasabha meeting in order to enable ~~in~~ himself to be one of the members of the Church Council I would request the Church Council to permit me to find another headmaster for the said M. E. School to take the place of the present headmaster.

I should again remind the Council, as I said in the last Mahasabha, that it would bring a great loss to the school if a teacher in one of the mufasil schools becomes a member of the Church Council whose meeting lasts for days when it meets and when the teachers also has full ~~work~~ routine work as the other assistant teachers.

Yours sincerely,



Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Church Council
Received. 30. 5. 33
Register No. 37....
Date.....
File. 23.....
Reply No.....
Date.....

30/5/33.

To

The Secretary of the Church Council
Lutheran Mission, Ranchi.

Sir

I beg to express my intention before you that I wish to serve as a teacher in the Goswami High School. I therefore request your kind favour that if you like, please grant me the post of teachership in that school.

By the grace of God I came out successful in the B.A examination. In the Gangpur State I had tried to get a job but at present it is very difficult to enter into the government service of the State.

If you kindly grant my request please inform me early.

Yours obediently
Marshall Sopno.
Runga.

C/o. Rev. G. C. C. C.
Lutheran Mission Comd.
P. O. Rajgangpur
B. N. Ry.

Church Council

Received 17.5.33

Register No. 21

Date 13.5.33

File 29

Reply No.

Date

17/5/33

To, The Secretary Lutheran Church Council
Ranchi.

From Rev S. Kula Zakarma

Mahasay, Kripa kar niche aukit. Rs. Lahat
malgajari ke bhejne ki kripa karen.

	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका
1	मा. मालिका - मा. मालिका मा. मालिका - मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका
2	मा. मालिका - मा. मालिका मा. मालिका - मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका
3	मा. मालिका - मा. मालिका मा. मालिका - मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका
4	मा. मालिका - मा. मालिका मा. मालिका - मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका	मा. मालिका
Total							

Rs. 23/3/00 only

As the agent in das.

Rev S. Kula Zakarma

Basia RO

13-5-33

Copy of T.A. bill of Mr. J.J.P.Tiga, from Takarma to Gobindpur.

Church Council	1. Cart fares..2 @ Rs 10/- from Takarma to Gobindpur...	Rs 20- 0- 0
Received 12.6.33	2. 4 Coolies to carry the Dandi and one cooly to accompany the carts @ Re 1/- ..	5- 0- 0
Register No.	3. Coolies' food charges for 1½ days @ /6/ each ..	1-14- 0
Date 12.6.33	4. 4 coolies to help at the place where the accident happened @ -/2/- ..	0- 8- 0
File 24	Total	Rs 27- 6- 0

Mr. Jilo informs me that by the accident he lost his things worth Rs 25/- which the C.C. is requested to consider if any compensation be paid to him. The accident is owing to furious storm on the way.

Memo No. 797.

Dated Ranchi, the 12th June, 1933.

Submitted to the C.C. with recommendation with the exception of the coolies' food charge when they were paid Re 1/- each, for favour of ~~max~~ consideration and payment.


Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Copy of T.A. bill of Mr. P.S.Vengra, headmaster of the Gobindpur M.E. School, from Gobindpur to Takarma.

Coookies engaged :-

1. Mani Gusatoli		Rs	1- 8- 0
2. Rabsa	..	..	1- 8- 0
3. Johan	..	..	1- 8- 0
4. Harun Chalungi		..	1- 8- 0
5. Jenje Jataloya		..	1- 8- 0
6. Sukra	..	..	1- 8- 0
7. Kanduwa	..	..	1- 8- 0
8. Ghanu	..	..	1- 8- 0
9. Bandhna	..	..	1-12- 0
10. Jusaph	..	..	1-12- 0

Total Rs 15-8- 0

Church Council
Received 9.6.33.
Register No. 4-6..
Date.....9.6.33...
File... 24
Reply No.....
Date.....

9.6.33

& and from Takarma to Gobindpur
do do

Memo No. 784

9- 9-6-33

The Bill is moderate and is therefore forwarded to the C.C. with recommendation to pay ~~the full~~ it in full.

N. Seng

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Church Council
Received... 22. 5. 33
Register No... 33
Date... 20. 5. 33
File... 54
Reply No...
Date...

Applications for Seminary class.

Applicants should have passed their Matriculation examination, Seminary students will have to be content with a monthly stipend of Rs. 7/-.

It is desirable that such young men apply who are able to lead their students' life partly or entirely by their own expences.

Applications should be submitted till June the 15th. and should ~~should~~ be accompanied by a written "Story of Life" stating the applicants' spiritual life and the motives of his coming to the Seminary class.

Ranchi, 20. May, 1933.

M. Kerschis.

M. O.—51.
Old P. & M. O.—L



INDIAN MONEY ORDER

(Value-Payable)

To

The Postmaster

• Here enter Post Office of destination of V.-P. article.

† Here enter Post Office of payment of Money Order.

Received the sum specified on the reverse.

Registration
or Parcel Clerk. } _____

Date _____

Signature of witness to be taken
when the payee is illiterate or not
known to the post office and in all
cases when payment is made by a
village postman.

Signature (in ink) of payee or thumb
impression, if payee is illiterate.

Round M. O. stamp
authorising payment.

Signature of Witness.

Paid by me on _____

Oblong M. O. stamp on payment.

Signature and designation of
officer who paid the amount.

Rectangular stamp.

Oblong M. O. stamp on issue.

A. O. stamp.

V.-P. L.

V.-P. P.

M. O. No.

Date

No. of V.-P. article

Rs.

As.

(in words)

FOR

Registration or Parcel Clerk.

M. O. Clerk.

Issuing Postmaster.

All the entries below to be filled up by the sender.

CERTIFIED that the accompanying article which is to be forwarded as a value-payable*
is sent in execution of a *bonâ fide* order received by me.

Amount to
be remitted
to the sender
(in words).

Name and
address of
the sender
(in full).

Date

Signature of sender.

INTIMATION.

Rs. — As. — in payment of — (office)

V.-P.*

No. — dated —

Addressed to—

Oblong M. O. Stamp on issue.

* Here enter letter, packet or parcel as the case may be.

INTERNATIONAL

LINTAS
LIMITED

ADVERTISING

BERLIN • BRUSSELS • BUENOS AIRES • DURBAN • ROTTERDAM • STOCKHOLM • SYDNEY • VIENNA

Directors: Ivor Cooper • H. B. R. Grey-Edwards • Gordon C. Ralston • G. Chipperfield • J. A. Truesdale

HEAD OFFICE : LINTAS HOUSE • FINSBURY SQUARE • LONDON • E.C.2

Telegrams: Lintads London. Telephone: National 7800.

17th July,

1931.

The Advertisement Manager,
"Gharbandhu",
Ranchi,
Bihar,
INDIA.

Church Council
Received... 8.8.31
Register No. 245
Date. 17.7.31
File. 53
Reply No.
Date.

Dear Sir,

We are at present engaged in bringing up to date the information we have on the various newspapers and periodicals published in your country. This information we are anxious to have in as standard a form as possible. We are therefore attaching hereto in duplicate a questionnaire which we hope will supply us with all the information we require concerning your paper in such a form that we can quickly and easily compare its merits with those of other papers published in the district when considering the advertising of any of our clients' products.

It may be that you have from time to time supplied us with certain of this information, but we shall be glad if you will supply complete answers to all the questions and return one copy of the questionnaire to us. The other copy will serve as a duplicate for your own files.

We think you will appreciate that by supplying us with full information on all points you will help us considerably in deciding whether we can use your paper in any campaign which may come under our consideration. As we are the sole advertising agents of the world-wide organisation of Messrs. Lever Brothers Limited it must be obvious to you that there is ample scope for using your paper.

Yours faithfully,

LINTAS LIMITED.

QUESTION	ANSWER	FOR USE IN OUR OWN OFFICE
1. Name of Newspaper or Periodical ?	CHARBANDHU.	
2. Town of Publication ?		
3. Name of District or Province ?		
4. What are the <u>guaranteed net sales</u> ?		
5. What is the circulation in the Town of Publication ?		
6. Where is the remainder of the circulation distributed ? (Please give the fullest details such as the names of the Towns and the number of copies sent to each. If possible enclose a map indicating the distribution in the various districts)		
7. At what time is your Newspaper or Periodical published ; early in the morning, at mid-day, or in the evening ?		
8. How often is your publication issued ?		
9. Has your publication any pages specially devoted to women ? (How many pages are there devoted to fashions or household articles of especial interest to women ?)		
QUESTION	ANSWER	FOR USE IN OUR OWN OFFICE

QUESTION	ANSWER	FOR USE IN OUR OWN OFFICE
10. If so on what day or days do they generally appear?		
11. What is the type area of the page?		
12. How many columns are there in the text pages?		
13. What is the width of the text columns?		
14. How many columns are there in the advertising pages?		
15. What is the width of the advertising columns?		
16. Can you use matrices?		
17. What line measure do you use? (Say whether millimetre or line. If line, give the point of the measure of the line used.)		
18. What are your present rates?		
(a) For text columns	_____	
(b) For advertising columns	_____	
19. What is your scale of discounts? (Please enclose two copies of your current rate card—these will be sufficient if they indicate the discounts)		
20. What is the maximum agency discount granted by you?		

Takarna 6.3.1933

~~12~~ 12/3/33

13.3.33.

650

6.3.33

49

To the Secretary Church Council Ranchi

Mahashay,

Ap ke chitthe no 1306-1307/33 tarikh
2.2.1933 ke sambandh mein mujhe kaha
jata hai ki Babu Samuel Topno, Compounder
abhi yahan Takarna mein kam nahin kar
saktā hai kyunki dawa adi rakhne ke
liye ek pakka kamra aur binaron ke
rakhne ke liye kam se kam do kamron
ke bina kam thik nahin hoga. Isir bhi
mere yahan rakhe ek Compounder ko rakhne
byarth hai kyunki kam bhi adhik nahin
hai.

Ap ko

Sister Auguste Tript